अपठित गद्यांशः

पाठ 1

80-100 शब्दपरिमिताः सरल गद्यांशाः

ध्यातव्य :-

1. किसी कथा, घटना, निबन्ध या महान् व्यक्ति पर आधारित 80 से 100 शब्दों के अनुच्छेदों के लिए 10 अंक निर्धारित हैं । अनुच्छेद पर आधारित प्रश्न तीन प्रकार से पूछे जायेंगे—

(क) अनुच्छेद का उचित शीर्षक ।

(ख) संस्कृत भाषा में प्रश्नोत्तर। इन्हें दो प्रकार से पूछा जा सकता है—

(i) एकपदेन-प्रश्न (ii) पूर्णवाक्येन-प्रश्न

(ग) भाषिक-कार्य (व्याकरण सम्बन्धी) प्रश्न — ये प्रश्न कर्तृ-क्रिया पद चयन, कर्तृ-क्रिया अन्विति, विशेष्य-विशेषण अन्विति, सर्वनाम के स्थान पर संज्ञा तथा संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम प्रयोग, पर्याय एवं विलोम पदों पर आधारित होंगे ।

पाठ्य पुस्तक में प्रदत्त गद्यांश

अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा तदाधारित प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखन्तु । (नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखो)—

(1) यदि वयं समाजे राष्ट्रे वा परिवर्तनम् आनेतुम् इच्छामः तर्हि अस्माकं प्रभावः अन्येषाम् उपरि भवेत् । वयं बाह्य वातावरणेन कुप्रभाविता न स्याम्, अपितु वातावरणस्य उपरि अस्माकं प्रभावः स्यात् । अत्र काचिद् एका कथा एवमस्ति—

कश्चन कृषकः महिष्याः अस्वास्थ्य-निवारणाय कञ्चित् पशुवैद्यम् औषधं पृष्टवान् । वैद्यः गुलिका दत्तवान् किञ्च उक्तवान् यत् एकस्यां नलिकायां गोलिकाः स्थापयित्वा भवान् स्वमुखेन वायुं फूत्करोतु तदा गुलिकाः महिष्याः उदरे गमिष्यन्ति इति । कृषकः अस्तु इति उक्त्वा गतवान् । दिनद्वयानन्तरं सः वैद्य तं कृषकं मार्गे अस्वस्थरूपेण गच्छन्तं दृष्टवान् । किं सञ्जातमिति पृष्टे सति सः कृषकः उक्तवान्- तया नलिकया अहं फूत्करोमि ततः पूर्व महिष्या एव फूत्कृतम्, परिणामतः गुलिकाः मम उदरं गताः । इति । अनया कथया बोध्यते यत् बाह्य वातावरणस्य कुप्रभावः येषामपुरि न भवति, ते एव सफलाः भवन्ति। नेतारः मार्गदर्शकाः, समाजशोधकाः च बाह्यं दूषितं वातावरणं परिवर्तयन्ति, न तु स्वयं तेन दूषितेन वातावरणेन प्रभाविताः भवन्ति ।

(यदि हम समाज में अथवा राष्ट्र में परिवर्तन लाना चाहते हैं तो हमारा प्रभाव दूसरों पर होना चाहिए । हम बाह्य वातावरण से प्रभावित न हों, अपितु वातावरण के ऊपर हमारा प्रभाव होना चाहिए। यहाँ कोई एक कथा इस प्रकार है-

कोई किसान भैंस की अस्वस्थता निवारण के लिए किसी पशुओं के चिकित्सक के पास गया । वैद्य ने गोलियाँ दे दीं, और फिर कहा कि एक नली में गोलियाँ रखकर आप अपने मुँह से हवा फूँक देना तब गोलियाँ भैंस के पेट में चली जायेंगी । किसान, ठीक है, ऐसा कहकर चला गया । दो दिन बाद उन वैद्य जी ने उस किसान को रास्ते में अस्वस्थ रूप में जाते हुए देखा । 'क्या हो गया ।' ऐसा पूछने पर वह किसान बोला- उस नली से (जैसे ही) मैं फूँक देता हूँ उससे पहले भैंस ने ही फूँक मार दी, परिणामस्वरूप गोलियाँ मेरे पेट में चली गईं । इस कथा से बोध होता है कि बाहरी वातावरण का बुरा प्रभाव जिनके ऊपर नहीं होता है वे ही सफल होते हैं । नेता, मार्गदर्शक और समाज सुधारक बाह्य दूषित वातावरण को बदलते हैं। न कि स्वयं इस दूषित वातावरण से प्रभावित होते हैं ।)

प्रश्नाः–

1. अस्य गद्यावतरणस्य समुचितं शीर्षकं लिखन्तु । (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)
   उत्तरम्— अस्माकं प्रभावः वातावरणस्योपरि । (हमारा प्रभाव वातावरण पर।)
2. अस्माकं प्रभावः कुत्र स्यात् ? (हमारा प्रभाव कहाँ होना चाहिए?)
   उत्तरम्— बाह्य वातावरणस्य उपरि अस्माकं प्रभावः स्यात् ।
   (बाह्य वातावरण के ऊपर हमारा प्रभाव होना चाहिए।)
3. उपर्युक्ता कथा किं बोधयति ? (ऊपर की कथा क्या बोध कराती है ?)
   उत्तरम्— एषा कथा अस्मान् बोधयति यत् बाह्य वातावरणस्य कुप्रभावः येषाम् उपरि न भवति, ते एव सफलाः भवन्ति। यह कथा हमें बोध कराती है कि बाह्य वातावरण का प्रभाव जिनके ऊपर नहीं होता, वे ही सफल होते हैं।)
4. गुलिकाः कस्य उदरे गताः ? (गोलियाँ किसके पेट में गईं?)
   उत्तरम्— गुलिकाः कृषकस्य उदरे गताः । (गोलियाँ किसान के पेट में गईं।)
5. कः कं पृष्टवान् औषधम् ? (किसने किससे औषध पूछी?)
   उत्तरम्— कृषकः पशुवैद्यम् औषधं पृष्टवान् । (किसान ने पशुवैद्य से औषधि पूछी।)
6. 'कृषकः अस्तु इति उक्त्वा गतवान्' अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किमस्ति ?
   ('कृषकः अस्तु इति उक्त्या गतवान्' इस वाक्य में कर्त्ता-पद कौन सा है?)
   उत्तरम्— 'कृषकः' इति अत्र कर्तृपदम् । (यहाँ 'कृषकः' कर्त्ता-पद है।)
7. 'अगच्छत्' इति पदस्य समानार्थकं पदं गद्यांशात् अन्विष्य लिखन्तु ।
   ('अगच्छत्' इस पद का समान अर्थ वाला पद गद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए ।)
   उत्तरम्— 'गतवान्' इति पदम् 'अगच्छत्' पदस्य समानार्थी (पर्याय) पदम् अस्ति ।
8. 'नेतुम्' इति पदस्य विलोमपदं गद्यांशात् अन्विष्य लिखन्तु ।
   ('नेतुम्' पद का विलोम पद गद्यांश से ढूँढ़कर लिखिये।)
   उत्तरम्— 'आनेतुम्' इति पदम् 'नेतुम्' पदस्य विलोमपदम्। ('आनेतुम्' पद 'नेतुम्' पद का विलोम पद है।)

(2) मातृभूमिं प्रति प्रेम्णः, त्यागस्य, आत्मोत्सर्गस्य, सर्वस्वार्पणस्य च नैके समुज्ज्वलाः पृष्ठाः राजस्थानस्य इतिहासे मिलन्ति परन्तु 'रातीघाटी' नामकस्य युद्धस्य उल्लेखः राजस्थानस्य इतिहासे लुप्तप्रायः वर्तते । बादशाह बाबर इत्यस्य पुत्रः (हुमायुँः इत्यस्य अनुजः) कामरानः बीकानेरस्य राजा राव जैतसी च इत्यनयोः द्वयोः मध्ये बीकानेरे घटितं महत्युद्धं भारतीय-शौर्यस्य गौरवशालिनी कथा अस्ति । अस्य युद्धस्य तिथिः 26 ओक्टोबर 1534 ए. डी. इत्यस्ति । भारतं जेतुम् लाहोरात् आगतः कामरानः पलायितः। तस्य शिरस्त्राणं (मुकुटम्) मध्येमार्गं 'छोटड़िया' ग्रामे पतितम् । अद्यापि तन्मुकुटम् तद्ग्रामे सुरक्षितम् अस्ति । अस्य रातीघाटी-युद्धस्य किञ्चिद् विस्तृतं वर्णनं 'बीठू सूजा' इत्यनेन रचिते 'छन्द राव जैतसी रो' इत्यस्मिन् ग्रन्थे वर्तते । अस्य च ग्रन्थस्य उद्धारं डॉ. एली. पी. टैस्सीटोरी अकरोत्।

(मातृभूमि के प्रति प्रेम, त्याग, आत्मबलिदान और सर्वस्व अर्पण के अनेक उज्ज्वल पन्ने राजस्थान के इतिहास में मिलते हैं परन्तु 'रातीघाटी' नामक युद्ध का उल्लेख राजस्थान के इतिहास में लुप्तप्राय है । बादशाह बाबर इसका बेटा (हुमायुँ इसका छोटा भाई) कामरान और बीकानेर का राजा राव जैतसी, इन दोनों के मध्य बीकानेर में घटित महायुद्ध भारतीय शौर्य की गौरवमयी कथा है। इस युद्ध की तिथि 26 अक्टूबर 1534 ए. डी. है ।

भारत को जीतने के लिए लाहौर से आया हुआ कामरान भाग गया । उसका मुकुट (पगड़ी) बीच राह में 'छोटडिया' गाँव में गिर गई । आज भी वह मुकुट उस गाँव में सुरक्षित है । इस 'राती-घाटी' युद्ध का कुछ विस्तृत वर्णन 'बीठू सूजा' द्वारा रचे गये 'छन्द राव जैतसी रो' नाम के ग्रन्थ में है और इस ग्रन्थ का उद्धार डॉ. एल. पी. टैस्सीटोरी ने किया।)

प्रश्ना:-

1. अस्य अनुच्छेदस्य समीचीनं शीर्षकं लिखन्तु । (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखें।)
   उत्तरम्– ऐतिहासिकं रातीघाटी युद्धम् । (ऐतिहासिक रातीघाटी युद्ध)।
2. रातीघाटी युद्धं कयो: द्वयो: मध्येऽभवत् ? (रातीघाटी युद्ध कौन दो के मध्य हुआ?)
   उत्तरम्– रातीघाटी युद्ध हुमायुँ इत्यस्य अनुजस्य कामरानस्य बीकानेर नृपस्य जैतसी महोदयस्य च मध्ये अभवत् ।
   (राती घाटी का युद्ध हुमायुँ के अनुज कामरान और बीकानेर के राजा जैतसी के मध्य हुआ था ।)
3. रातीघाटी युद्ध कुत्र कदा घटितम् ? (रातीघाटी युद्ध कहाँ और कब घटित हुआ?)
   उत्तरम्– रातीघाटी युद्ध बीकानेरे 26 अक्टूबर 1534 ई. दिवसे घटितम्।
   (रातीघाटी युद्ध बीकानेर में 26 अक्टूबर 1534 ई. के दिन हुआ ।)
4. 'छन्द राव जैतसी रो' इत्यस्य लेखक: क: ? ('छन्द राव जैतसी रो' का लेखक कौन है?)
   उत्तरम्– 'छन्द राव जैतसी रो' ग्रन्थस्य लेखक: 'बीठू सूजा' अस्ति।
   ('छन्द राव जैतसी रो' के लेखक 'बीठू सूजा' हैं ।)
5. गौरवशालिनी कथा-इत्यत्र किं विशेष्य पदम् किं च विशेषण पदम् इति लिखत ।
   ('गौरवशालिनी कथा' इसमें विशेष्य और विशेषण बताइए।)
   उत्तरम्– विशेष्य पदम्– कथा, विशेषणपदम्-गौरवशालिनी।
6. 'गत:' इति पदस्य विलोमार्थकं पदं अनुच्छेदात् अन्विष्य लिखत ।
   ('गत:' पद का विलोमार्थक पद अनुच्छेद से ढूँढ़कर लिखिए।)
   उत्तरम्– आगत: (आया)।
7. 'धावित:' इत्यस्य पर्यायवाचिनं पदम् अनुच्छेदात अन्विष्य लिख्यताम् ।
   ('धावित:' इस पद का पर्यायवाची पद अनुच्छेद से ढूँढ़कर लिखिये।)
   उत्तरम्– पलायित:।

(3) अस्ति केरले-प्रान्ते कालडीनामको ग्राम: । स च पूर्णा (पेरियार्) नदीतीरे वर्तते । जगद्गुरु: श्रीशंकराचार्य: तस्मिन् ग्रामे जन्म अलभत् । अस्य पिता शिवगुरु: माता आर्याम्बा चास्ताम् । शंकरस्य जन्मन: प्रागेव पिता दिवङ्गत:। मातैव पुत्रस्य पालनम् अकरोत् । यथाकालम् उपनीत: स: गुरुमुपागच्छत् । जन्मनैव प्रतिभा-सम्पन्नतया असौ कुलोचिता: विद्या: शीघ्रमेव अधीतवान् ।

माता तं गृहस्थं कर्तुमैच्छत् । परन्तु मनसा वचसा कर्मणा च विरक्त: शंकर प्रार्थयत्- 'मात: ! संन्यास: मह्यं रोचते, तदर्थम् अनुमतिं प्रयच्छ' इति । माता पुत्रस्य प्रार्थनां न स्वीकृतवती । एकदा स्नातुं नदीं गत: शंकर: नक्रेण गृहीत: उच्चै: आक्रोशत् । आक्रोशं श्रुत्वा नदीतीरं गता माता पुत्रं नक्रेण गृहीतम् अपश्यत् । शंकर: मातरमवदत्- अम्ब ! यदि संन्यासं स्वीकर्तुम् अनुमंस्यसे तर्हि अहं नक्रात् मुक्तो भविष्यामि इति । चेतसा अनिच्छन्ती अपि विवशा माता - 'वत्स ! यथा तुभ्यं रोचते तथा कुरु' इति कष्टेन अकथयत् । सद्य: नक्रात् मुक्त: शंकर: मातु: चरणयो: प्रणामम् अकरोत् । माता च तम् अनुगृहीतवती । 'मात: ! तव स्मरणक्षणे एव तव समीपम् आगमिष्यामि' इति प्रतिज्ञाय स: गृहात् निरगच्छत् । देशाद्देशं पर्यटन् स: नर्मदातटं प्राप्तवान् । तत्र स: गोविन्द-पादाचार्येभ्य: वेदान्त-विद्याम् अधीतवान् ।

अनन्तरं स: मुख्यानाम् उपनिषदां, व्यास-प्रणीतानां ब्रह्मसूत्राणां श्रीमद्भगवद्गीताया: च भाष्याणि रचितवान् । ऐतेन संस्कृतस्य महान् उपकार: अजायत । तत: स: आसेतुहिमाचलं स्वस्य सिद्धान्तस्य प्रचारम् अकरोत् । मातु: अन्तकाले च तया स्मृत: शंकर: तत्समीपम् आगच्छत् ।

अद्वैत-सिद्धान्तस्य प्रचाराय परिरक्षणाय च श्रीशंकर: द्वारकायाम्, बदर्याम्, जगन्नाथपुर्यां, शृंगेर्यां च चतुर: मठान् समस्थापयत् । तेषाम् अधिष्ठातार: अद्यापि 'शंकराचार्या:' इति कथ्यन्ते ।

श्रीशंकराचार्येण: विरचितानि बहूनि स्तोत्रकाव्यानि अपि सन्ति । तेषु च 'भजगोविन्दम्' इति भजनम् अतीव लोकप्रियम् अस्ति ।

(केरल प्रांत में कालडी नाम का गाँव है और वह पूर्णा (पेरियार) नदी के तट पर है । जगद्गुरु शङ्कराचार्य ने उस गाँव में जन्म लिया । इनके पिता शिवगुरु तथा माता आर्याम्बा थीं । शंकर के जन्म से ही पहले पिता का स्वर्गवास हो गया । माता ने ही पुत्र का पालन किया। यथासमय वह यज्ञोपवीत संस्कार के पश्चात् गुरुजी के पास गया । जन्म से ही प्रतिभासम्पन्न होने के कारण उसने कुलोचित विद्या शीघ्र ही पढ़ ली ।

माता उसे गृहस्थी बनाना चाहती थीं । परन्तु मन, वचन और कर्म से विरक्त शंकर ने प्रार्थना की- माँ मुझे संन्यास अच्छा लगता है । उसके लिए अनुमति दे दीजिए । माता ने पुत्र की प्रार्थना को स्वीकार नहीं किया । एक दिन स्नान करने नदी पर गया हुआ शंकर मगरमच्छ द्वारा पकड़ा हुआ जोर से चिल्लाया । चीख को सुनकर नदी तट पर गई हुई माता ने मगरमच्छ द्वारा पकड़े हुए पुत्र को देखा । शंकर माता से बोला- माँ, यदि तुम संन्यास स्वीकार करने के लिए अनुमति देती हो तो मैं मकर से मुक्त हो जाऊँगा । हृदय से न चाहती हुई विवश माता ने- बेटा ! जो तुम्हें रुचिकर हो वह करो।' ऐसा कष्ट के साथ कह दिया । शीघ्र ही मकर से मुक्त हुए शंकर ने माँ के चरणों में प्रणाम किया । माता उसके प्रति अनुगृहीत हुई । माँ ! तुम्हारे स्मरण करते ही मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगा ऐसी प्रतिज्ञा करके वह घर से निकल गया । देश से देश पर्यटन करता हुआ वह नर्मदा के किनारे पहुँचा । वहाँ उन्होंने गोविन्द पादाचार्य से वेदान्त विद्या का अध्ययन किया ।

इसके पश्चात् उन्होंने उपनिषदों, व्यास रचित ब्रह्मसूत्रों और श्रीमद्भागवद् गीता के भाष्यों की रचना की । इससे संस्कृत का बहुत उपकार हुआ । तब उसने सेतुबन्ध रामेश्वरम् से हिमालयपर्यन्त अपने सिद्धान्त का प्रचार किया । माता के अन्तकाल पर उसके द्वारा याद किया हुआ शंकर उसके समीप आ गया ।

अद्वैत सिद्धान्त के प्रचार और परिरक्षण के लिए श्री शंकर ने द्वारका, बदरी, जगन्नाथपुरी और श्रृंगेरी में चार मठों की स्थापना की। उनके अधिष्ठाता आज भी शङ्कराचार्य कहलाते हैं ।

श्री शंकराचार्य द्वारा रचे हुए बहुत से स्तोत्र काव्य भी हैं। उनमें भज गोविन्दम् भजन अत्यन्त लोकप्रिय है ।)

प्रश्ना:-

1. प्रस्तुत अनुच्छेदस्यं योग्यं शीर्षकं लिखन्तु । (प्रस्तुत अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।)
   उत्तरम्— जगद्गुरुः शङ्कराचार्यः।
2. शङ्कराचार्यस्य जन्म कुत्र अभवत्? (शंकराचार्य का जन्म कहाँ हुआ?)
   उत्तरम्— केरलेषु कालडी नामके ग्रामे । (केरल में कालडी नामक गाँव में ।)
3. गृहात् निर्गमन काले शङ्करः मातुः पुरतः किं प्रतिज्ञातवान् ?
   (घर से निकलते समय शंकर ने माँ के सामने क्या प्रतिज्ञा की ?)
   उत्तरम्— माताः ! तव स्मरणक्षणे एव तव समीपम् आगमिष्यामि इति ।
   (माँ ! तुम्हारे याद करते ही मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगा ।)
4. शंकरः चतुरः मठान कुत्र अस्थापयत् ? (शंकर ने चार मठ कहाँ स्थापित किए?)
   उत्तरम्— द्वारकायाम्, बदर्याम्, जगन्नाथपुर्याम् शृङ्गेर्याम् च अस्थापयत् ।
   (द्वारकापुरी, बदरिकाश्रम, जगन्नाथपुरी और श्रृंगेरी में स्थापित किए ।)
5. 'एतेन संस्कृतस्य महान् उपकारः अजायत ।' इति वाक्ये किं कर्तृपदं किं च क्रियापदम् ।
   ('ऐतेन.........अजायत्' इस वाक्य में कर्त्ता और क्रियापद क्या हैं?)
   उत्तरम्— कर्त्ता - उपकारः, क्रिया-अजायत ।

6. कर्तृ-क्रियान्विति अत्र करणीया। (यहाँ कर्तृ-क्रिया की अन्विति बताइये।)

कर्तृपदानि	क्रियापदानि	उत्तर- कर्तृपदानि	क्रियापदानि
1. माता	आगमिष्यामि	1. माता	स्वीकृतवती
2. पिता	कथ्यन्ते	2. पिता	दिवंगतः
3. अहम्	आस्ताम्	3. अहम्	आगमिष्यामि
4. शङ्कराचार्याः	स्वीकृतवती	4. शङ्कराचार्याः	कथ्यन्ते
5. माता पिता च	दिवंगतः	5. माता पिता च	आस्ताम्

7. अत्र विशेषण-विशेष्यान्वितिः करणीया । (यहाँ विशेषण-विशेष्यान्विति करनी है ।)

विशेषणपदानि	विशेष्यपदानि	उत्तर- विशेषणपदानि	विशेष्यपदानि
1. लोकप्रियम्	शङ्करः	1. लोकप्रियम्	भजनम्
2. विरक्तः	भजनम्	2. विरक्तः	शङ्करः
3. अनिच्छन्ती	माता	3. अनिच्छन्ती	माता
4. स्वस्य	सिद्धान्तस्य	4. स्वस्य	सिद्धान्तस्य

8. 'परिभ्रमन्' इत्यस्य समानार्थकं पदं अनुच्छेदात् अन्विष्य लिखन्तु—

('परिभ्रमन्' का समानार्थक पद अनुच्छेद से ढूँढ़कर लिखिए-)

उत्तरम्— पर्यटनम् (घूमता हुआ)।

9. 'बद्धः' इत्यस्य विलोमपदं अनुच्छेदात् अन्विष्य लिख्यताम् ।

('बद्धः' इसका विलोम पद अनुच्छेद से ढूँढ़कर लिखिए।)

उत्तरम्— मुक्त (स्वतन्त्र)।

(4) डॉ. भीमराव-आम्बेडकरः संस्कृतं पठितुम् इष्टवान् आसीत्, परन्तु सः अस्पृश्यतः इति कारणतः कश्चन संस्कृतज्ञः आम्बेडकरं संस्कृतं पाठयितुं निराकृतवान् - इति विषयः तु आम्बेडकर-महोदयस्य जीवनसम्बन्धि-पुस्तकेषु लिखितः अस्ति; सः विषयः तु प्रचारे अपि अस्ति । 'भारतस्य राजभाषा संस्कृतं भवेत्' इति संविधानसभायां संशोधन-प्रस्तावः आनीतः आसीत्, यस्य प्रस्तावस्य हस्ताक्षर-कर्तृषु प्रस्तावोपस्थापकेषु च डॉ. आम्बेडकरः अपि अन्यतमः आसीत् । अयं विषयः अपि कतिपयवर्षेभ्यः पूर्वं ज्ञातः आसीत् । परम् इदानीं कश्चन नूतनः विषयः प्रकाशम् आगतः अस्ति। नवप्राप्त-प्रमाणैः ज्ञायते यत् डॉ. अम्बेडकरः न केवलं संस्कृतस्य राजभाषात्वं समर्थितवान्, न केवलं सः संस्कृतं जानाति स्म, अपितु सः संस्कृतेन भाषते स्म इति ! यतः संविधानसभायां यदा राजभाषा-सम्बन्धे चर्चा प्रवर्तते स्म तदा डॉ. आम्बेडकरः पण्डितलक्ष्मीकान्त-मैत्रेण सह संस्कृतेन वार्तालापं कृतवान् । तत्सम्बन्धे तत्कालीनेषु वार्तापत्रेषु प्रमुखतया वार्ताः प्रकाशिताः आसन् ।

(डॉ. भीमराव-अम्बेडकर संस्कृत पढ़ना चाहते थे परन्तु वे अछूत थे। इस कारण से किसी संस्कृत के ज्ञाता ने अम्बेडकर को संस्कृत पढ़ाने के लिए मना कर दिया- यह विषय तो अम्बेडकर महोदय के जीवन सम्बन्धी पुस्तकों में लिखा हुआ है । वह विषय तो प्रचार में भी है ।' भारत की राजभाषा संस्कृत होनी चाहिए' ऐसा संविधान सभा में संशोधन-प्रस्ताव लाया गया था । इस प्रस्ताव के हस्ताक्षर करने वालों में और प्रस्ताव को प्रस्तुत करने वालों में डा. भीमराव अम्बेडकर भी अन्यतम थे। यह विषय कुछ वर्षों पूर्व ज्ञात था । परन्तु अब कोई नया विषय प्रकाश में आया है । नये प्राप्त प्रमाणों से ज्ञात हुआ है कि डॉ. अम्बेडकर ने न केवल संस्कृत का राजभाषा के रूप में समर्थन किया, न केवल वे संस्कृत जानते थे अपितु वे संस्कृत बोलते भी थे । क्योंकि संविधान सभा में जब राजभाषा के सम्बन्ध में चर्चा चलती तब डाक्टर अम्बेडकर पण्डित लक्ष्मीकान्त मैत्रेण के साथ संस्कृत में संवाद किया करते थे । उस सम्बन्ध में तत्कालीन समाचार पत्रों में प्रमुखतः वार्ताएँ (समाचार) प्रकाशित हुए ।)

प्रश्नाः-

1. उपर्युक्त गद्यांशस्य उपयुक्तं शीर्षकं लिखन्तु । (ऊपर दिए गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)
   उत्तरम्— संस्कृतभाषी डॉ. आम्बेडकरः । (संस्कृत बोलने वाले डॉ. अम्बेडकर)।
2. डॉ. भीमराव आम्बेडकरः कां भाषा भारतस्य राजभाषां कर्तुम् इष्टवान् ? (डॉ. अम्बेडकर किस भाषा को भारत की राजभाषा बनाना चाहते थे ?)
   उत्तरम्— संस्कृतभाषाम् ।
3. डॉ. आम्बेडकरः संविधान-सभायां केन सह संस्कृतेन वार्तालापं कृतवान् ? (डॉ. अम्बेडकर किस भाषा में संविधान सभा में किसके साथ संस्कृत में वार्तालाप किया करते थे ?)
   उत्तरम्— पण्डित लक्ष्मीकान्त मैत्रेण सह। (पं. लक्ष्मीकान्त मैत्रेण के साथ।)
4. 'वार्तापत्रेषु वार्ताः प्रकाशिताः आसन्' इत्यस्मिन् वाक्ये कर्तृपदस्य क्रियापदस्य, विशेषणस्य च निर्देशः करणीयः ।
   ('वार्तापत्रेषु..............आसन्' इस वाक्य के कर्त्ता, क्रिया और विशेषण का निर्देश कीजिए।)
   उत्तरम्— अत्र कर्तृपदम्-वार्ताः, क्रियापदम्-आसन्, विशेषणपदम्-प्रकाशिताः ।
5. 'डॉ. आम्बेडकरः संस्कृतेन भाषते स्म' अत्र रेखाङ्कितस्य संज्ञापदस्य स्थाने सर्वनामपदस्य प्रयोगः कर्त्तव्यः।
   ('डॉ. अम्बेडकरः.............भाषते स्म' वाक्य में रेखांकित पद के स्थान पर सर्वनाम पद का प्रयोग करना है।)
   उत्तरम्— सः संस्कृतेन भाषते स्म । (वे संस्कृत बोलते थे ।)
6. 'पुरातनः' इति पदस्य विलोमपदं पाठात् चित्वा लिखन्तु ।
   ('पुरातन' पद का विलोम पद पाठ से चुनकर लिखिए।)
   उत्तरम्— नूतनः (नया)।

(5) एकमुद्देश्यं लक्ष्यीकृत्य बहूनां जनानाम् ऐक्यभावनया कार्यकरणमेव संहतिः, संघः संगठनं वाऽभिधीयते। एकता मनुष्ये शक्तिमादधाति। एकतयैव देशः समाजो लोकश्च उन्नतिपथं प्राप्नुवन्ति। यस्मिन् देशे समाजे वा एकताऽस्ति, स एव देशः सकललोकसम्माननीयो भवति ।

संसारे एकतायाः अतीवावश्यकता वर्तते। विशेषतः कलियुगेऽस्मिन् संहतिः कार्यसाधिका। यतो हि वर्तमाने काले यादृशं सामाजिकं राष्ट्रियं च जीवनमस्ति, तस्य निर्माणाय रक्षणाय च संगठनं परमावश्यकम्। अद्यत्वे संसारे यस्मिन् राष्ट्रे एकतायाः अभावोऽस्ति, तत् राष्ट्रं सद्य एव परतन्त्रतापाशबद्धं भवति। अस्माकं देशस्य पारतन्त्र्यम् अनया एव एकतया सहयोगेन वा विच्छिन्नं जातम्। महात्मना गान्धिमहोदयेन तथैवान्यैश्च देशभक्तैः भारतीयसमाजे सर्वत्र एकत्वभावनोदयेन पराधीनतापाशस्य छेदनं विहितम्। अधुना लोकतन्त्रात्मकमस्माकं राष्ट्रं संघटनबलेनैव स्वोन्नतिं विदधाति अत एवोच्यते- 'संघे शक्तिः कलौयुगे।'

(एक ही उद्देश्य को लक्ष्य बनाकर बहुत से लोगों की एकता की भावना से कार्य करना संहति, संघ अथवा संगठन कहलाता है। एकता मनुष्य में शक्ति प्रदान करती है। एकता से ही देश, समाज और लोक उन्नति के मार्ग को प्राप्त करते हैं । जिस देश अथवा समाज में एकता है वही देश सभी लोकों में सम्मान के योग्य होता है।

संसार में एकता की अति आवश्यकता है। विशेषतः इस कलियुग में संहति कार्य को साधने (सिद्ध करने) वाली होती है। क्योंकि वर्तमान काल में जैसा सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन है, उसके निर्माण और रक्षा के लिए संगठन परम आवश्यक है। आजकल संसार में जिस राष्ट्र में एकता का अभाव है, वह राष्ट्र जल्दी ही परतन्त्रता के पाश में बँध जाता है। हमारे देश की परतन्त्रता इसी एकता अथवा सहयोग से विच्छिन्न हो गई। महात्मा गाँधी महोदय और उसी प्रकार अन्य देशभक्तों के द्वारा भारतीय समाज में सब जगह एकता की भावना उदय करने से पराधीनता के पाश का छेदन किया । अब लोकतन्त्रात्मक हमारा राष्ट्र संगठन के बल पर ही अपनी उन्नति कर रहा है, अतएव कहा जाता हैं 'संघे' शक्तिः कलौयुगे' अर्थात् कलियुग में संघ में ही शक्ति होती है।)

प्रश्नाः-

1. अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)
   उत्तरम्— संघे शक्तिः कलौयुगे (कलियुग में एकता में ही बल है।)
2. संघः केन भवति ? (संघ किससे होता है ?)
   उत्तरम्— एकमुद्देश्यं लक्ष्यीकृत्य बहूनां जनानाम् ऐक्य भावनया एव संघः भवति।
   (एक उद्देश्य को ध्येय बनाकर बहुत से लोगों की एकता की भावना से ही संघ होता है।)
3. एकता मनुष्ये किमादधाति? (एकता मनुष्य में क्या पैदा करती है?)
   उत्तरम्— एकता मनुष्ये शक्तिम् आदधाति। (एकता मनुष्य में शक्ति पैदा करती है।)
4. कः देशः लोक सम्माननीयो भवति? (कौनसा देश लोकों में सम्माननीय होता है?)
   उत्तरम्— यस्मिन् देशे समाजे वा एकता अस्ति, स एव देशः सकललोक सम्माननीयो भवति।
   (जिस देश या समाज में एकता होती है वही देश सारे लोकों में सम्माननीय होता है।)
5. अस्मिन् युगे कार्यसाधिका का अस्ति? (इस युग में कार्य को साधने वाली क्या होती है?)
   उत्तरम्— अस्मिन् युगे संहतिः एव कार्यसाधिका। (इस युग में संहति ही कार्यसाधिका है।)
6. किं राष्ट्रं परतन्त्रतापाशबद्धं भवति ? (कौन-सा राष्ट्र परतन्त्रता के पाश में बँध जाता है?)
   उत्तरम्— यस्मिन् राष्ट्रे एकतायाः अभावोऽस्ति तत् राष्ट्रं सद्य एव परतन्त्रता पाशबद्धं भवति।
   (जिस राष्ट्र में एकता का अभाव है वह राष्ट्र शीघ्र ही परतंत्रता के पाश में बँध जाता है।)
7. 'यादृशं सामाजिकं राष्ट्रियं च जीवनम् अस्ति' अत्र विशेषण-विशेष्य-निर्देशः करणीयः।
   ('यादृशं......अस्ति' यहाँ विशेषण-विशेष्य का निर्देश कीजिए।)
   उत्तरम्— विशेषण-पदानि- यादृशम्, सामाजिकं, राष्ट्रियम्।
   विशेष्य-पदम् - जीवनम्।
8. 'संगठनम्' इति पदस्य पर्यायपदद्वयं गद्यांशात् अन्विष्य लिखत।
   ('संगठनम्' पद के दो पर्यायवाची पद गद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए-)
   उत्तरम— संघः, संहतिः च।

(6) इदं हि विज्ञानप्रधानं युगम्। 'विशिष्टं ज्ञानं विज्ञानम्' इति कथ्यते। अस्यां शताब्द्यां सर्वत्र विज्ञानस्यैव प्रभावो दरीदृश्यते। अधुना नहि तादृशं किमपि कार्यं यत्र विज्ञानस्य साहाय्यं नापेक्ष्यते। आवागमने, समाचारप्रेषणे, दूरदर्शने, सम्भाषणे, शिक्षणे, चिकित्साक्षेत्रे, मनोरंजनकार्ये, अन्नोत्पादने, वस्त्रनिर्माणे, कृषिकर्मणि तथैवान्यकार्यकलापेषु विज्ञानस्य प्रभावस्तदपेक्षा च सर्वत्रैवानुभूयते।

सम्प्रति मानवः प्रकृतिं वशीकृत्य तां स्वेच्छया कार्येषु नियुङ्क्ते। तथाहि वैज्ञानिकैरनेके आविष्काराः विहिताः। मानवजातेः हिताहितम् अपश्यद्भिः वैज्ञानिकैः राजनीतिविज्ञैर्वा परमाणुशक्तेः अस्त्रनिर्माणे एव विशेषतः उपयोगो विहितः। तदुत्पादितं च लोकध्वंसकार्यम् अतिघोरं निर्घृणं च। अयं च न विज्ञानस्य दोषः न वा परमाणुशक्तेरपराधः, पुरुषापराधः खलु एषः।

अतोऽस्य मानवकल्याणार्थमेव प्रयोगः करणीयः।

(यह निश्चय ही विज्ञान-प्रधान युग है। विशिष्ट ज्ञान को विज्ञान कहा जाता है। इस शताब्दी में सब जगह विज्ञान का ही प्रभाव बार-बार देखा जाता है। आजकल कोई काम ऐसा नहीं है जहाँ विज्ञान के सहयोग की अपेक्षा न की जाये। आवागमन, समाचार भेजने, दूरदर्शन, सम्भाषण, शिक्षण, चिकित्सा के क्षेत्र, मनोरंजन के कार्यों, अन्न पैदा करने, वस्त्र बनाने, कृषिकार्य और उसी प्रकार के अन्य कार्य-कलापों में विज्ञान का प्रभाव और उसकी अपेक्षा सब जगह अनुभव की जाती है।

अब मानव प्रकृति को वश में करके उसे स्वेच्छा से कार्यों में नियुक्त करता है। क्योंकि वैज्ञानिकों ने अनेक आविष्कार

किये हैं। मानव जाति के हित और अहित की अनदेखी करके वैज्ञानिकों अथवा राजनीतिज्ञों ने परमाणुशक्ति के अस्त्र-निर्माण में ही विशेषत: उपयोग किया है और उससे पैदा हुआ लोक-विनाश-कार्य तो अति घोर (जघन्य) और निर्दयतापूर्ण है। यह न तो विज्ञान का दोष है और न परमाणु शक्ति का अपराध, निश्चित ही पुरुष का अपराध है।

अत: इसे मानव कल्याण के कार्य के लिए ही प्रयोग किया जाना चाहिए।)

प्रश्ना:-

1. अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।)
   उत्तरम्— विज्ञानस्य महत्वम् (विज्ञान का महत्व)।
2. इदं युगं कीदृशम्? (यह युग कैसा है?)
   उत्तरम्— इदं विज्ञान प्रधानं युगम् अस्ति। (यह विज्ञान-प्रधान युग है।)
3. विज्ञानं किम् अस्ति? (विज्ञान क्या है?)
   उत्तरम्— विशिष्टं ज्ञानं विज्ञानं कथ्यते। (विशिष्ट ज्ञान को विज्ञान कहते हैं।)
4. कै: आविष्कारा: विहिता:? (किन्होंने आविष्कार किए?)
   उत्तरम्— वैज्ञानिकै: अनेके आविष्कारा: विहिता:। (वैज्ञानिकों ने अनेक आविष्कार किए।)
5. परमाणुशक्ते: कस्मिन् उपयोगो विदित:? (परमाणु शक्ति का किसमें उपयोग किया गया?)
   उत्तरम्— परमाणु शक्ते: अस्त्रनिर्माणे एव विशेषत: उपयोगी विहित:।
   (परमाणु शक्ति का आयुध बनाने में ही विशेष उपयोग किया गया।)
6. क: पुरुषापराध:? (पुरुष का क्या अपराध है?)
   उत्तरम्— परमाणुशक्ते: लोकध्वंसकार्यम् एव पुरुषापराध:।
   (परमाणुशक्ति का लोक-विध्वंस के कार्य में प्रयोग करना ही पुरुष का अपराध है।)
7. 'इदं हि विज्ञान-प्रधानं युगम्' अस्मिन् वाक्ये विशेषण विशेष्य सर्वनाम पदानां निर्देश: कर्त्तव्य:।
   (इदं......युगम्' इस वाक्य में विशेषण-विशेष्य और सर्वनाम पदों को बताइये।
   उत्तरम्— विशेषणम्- विज्ञानप्रधानम्, विशेष्य:- युगम्, सर्वनाम्-इदम्।
8. 'अस्य मानवकल्याणार्थम् एव प्रयोग: करणीय:' अस्मिन् वाक्ये रेखांकित सर्वनामपदस्य स्थाने संज्ञापदस्य प्रयोगं कुर्वन्त।
   ('अस्य.......करणीय:', इस वाक्य में रेखांकित सर्वनाम पद के स्थान पर संज्ञा पद का प्रयोग कीजिए।)
   उत्तरम्— विज्ञानस्य। परमाणो:।
9. वैज्ञानिकै: उपयोग विहित: । अत्र क: कर्त्ता। ('वैज्ञानिकै: उपयोग: विहित:' इस वाक्य में कर्त्ता क्या है?)
   उत्तरम्—वैज्ञानिकै:।

(7) स्त्रियो हि मातृशक्ते: प्रतीकभूता: भवन्ति। निसर्गादेव तासु गृहस्थजीवनस्योत्तरदायित्वं बालकानां भरण-पोषणादिकस्य च दायित्वं समापतति। शिशौ संस्काराधानस्य, सदाचरणशिक्षणस्य, भर्तु: सहयोगस्य, पारिवारिकजनानां सेवाया:, समागतानामभ्यागतानां शुश्रूषाया:, लोकहितसम्पादनस्य च समग्रमपि कर्त्तव्यजातं स्त्रीषु निपतति। अत: स्त्रीणां कृते शिक्षाया: परमावश्यकता वर्तते। सुगृहिणी तदैव सा सम्भवति यदा सुशिक्षिता स्यात्, सुशिक्षयैव परिवारस्य समाजस्य राष्ट्रस्य च हितं सम्पादयितुं सा समर्था भवति।

गृहस्य सुशिक्षिता स्त्री सद्गृहिणी गृहलक्ष्मी: गृहस्वामिनी वा भवति, सैव मातृभूता सद्वंशं सन्नागरिकं च निर्मातुं प्रभवति। स्त्री एव समाजे धार्मिकसंस्काराणां सद्गुणादिकानां स्थापनां करोति। अत: समाजे राष्ट्रे व स्त्रीणां समादरो

मातृशक्तेश्च गौरवरक्षणं तदैव सम्भवति यदा ताः सुशिक्षिताः स्युः। 'मातृदेवो भव' इति कथनमपि तदैव सुसङ्गतं भवति। स्त्रीसमाजस्योन्नतिमेव विचिन्त्य मनुनापि कथितम्- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।'

(क्योंकि स्त्रियाँ निश्चय ही मातृशक्ति की प्रतीक होती हैं। प्रकृति से ही उन पर गृहस्थ जीवन के उत्तरदायित्व और बालकों के भरण-पोषण आदि का उत्तरदायित्व आ पड़ता है। शिशु में संस्कार पैदा करने, सदाचरण की शिक्षा देने, पति का सहयोग, पारिवारिक लोगों की सेवा, आये हुए अतिथियों और मेहमानों की शुश्रूषा और लोकहित के सम्पादन का सम्पूर्ण कर्त्तव्य-भार स्त्रियों पर पड़ता है। अतः स्त्रियों के लिए शिक्षा की परम आवश्यकता है। वह अच्छी गृहिणी तभी सम्भव हो सकती है जब वह सुशिक्षित हो, सुशिक्षा से ही वह परिवार, समाज और राष्ट्र का हित-सम्पादन करने में समर्थ होती है।

घर की सुशिक्षित स्त्री अच्छी गृहिणी, गृहलक्ष्मी अथवा गृहस्वामिनी होती है। वही माँ हुई अच्छे वंश और अच्छे नागरिक का निर्माण करने में समर्थ होती है। स्त्री ही समाज में धार्मिक संस्कारों और सद्गुण आदि की स्थापना करती है। अतः समाज अथवा राष्ट्र में स्त्रियों का सम्यक् आदर और मातृशक्ति के गौरव की रक्षा तभी सम्भव होती है जब वे सुशिक्षित हों। माँ देवता है— यह कथन भी तभी संगत लगता है। स्त्री-समाज की उन्नति को ही सोचकर मनु ने भी कहा है—

जहाँ नारियों का सम्मान होता है वहाँ देवता रमण करते हैं अर्थात् सर्वानन्द होता है।)

प्रश्नाः-

1. अस्य अनुच्छेदस्य समुचितं शीर्षकं लिखन्तु। (इस अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखें।)

   उत्तरम्— 'स्त्री शिक्षायाः महत्वम्' अथवा 'स्त्री शिक्षायाः आवश्यकता'।

2. मातृशक्तेः प्रतीकभूताः का भवन्ति? (मातृशक्ति की प्रतीक कौन होती हैं?)

   उत्तरम्— मातृशक्ते प्रतीकभूताः स्त्रियः भवन्ति। (मातृशक्ति की प्रतीक स्त्रियाँ होती हैं।)

3. स्त्रीणां कृते कस्याः परमावश्यकता वर्तते? (स्त्रियों के लिए किसकी परम आवश्यकता है?)

   उत्तरम्— स्त्रीणां कृते शिक्षायाः परमावश्यकता वर्तते। (स्त्रियों के लिए शिक्षा की परम आवश्यकता है।)

4. मनुना किं कथितं नारीणां विषये? (मनु ने नारियों के विषय में क्या कहा?)

   उत्तरम्— मनुना नारीणां विषये कथितम् यत् यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।' (जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता रमण करते हैं। ऐसा मनु ने नारियों के विषय में कहा।)

5. 'सुशिक्षिता स्त्री गृहलक्ष्मीः भवति' इत्यस्मिन् वाक्ये रेखाङ्कितस्य संज्ञापदस्यस्थाने कस्यापि सर्वनामपदस्य प्रयोगं कृत्वा वाक्यं पुनः लिखन्तु। (सुशिक्षिता स्त्री .... इस वाक्य में रेखांकित पद के स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग कर वाक्य को पुनः लिखिए।)

   उत्तरम्— सुशिक्षिता सा गृहलक्ष्मीः भवति। (सुशिक्षित वह गृहलक्ष्मी होती है।)

6. विशेषण-विशेष्यान्वितिं कुर्वन्तु अत्र- (यहाँ विशेषण-विशेष्य अन्विति कीजिए।)

विशेषणपदम्	विशेष्यपदम्	उत्तरम्-विशेषणपदम्	विशेष्यपदम्
सुशिक्षिता	कर्त्तव्यजातम्	सुशिक्षिता	स्त्री
सुसंगतम्	स्त्री	सुसंगतम्	कथनम्
समग्रम्	कथनम्	समग्रम्	कर्त्तव्यजातम्

7. 'शिक्षायाः आवश्यकता वर्तते' इत्यत्र कः कर्त्ता? (वाक्य में कर्त्ता कौन है?)

   उत्तरम्— आवश्यकता (कर्त्ता)

8. 'अनादरः' असङ्गतम्' इत्यनयोः विलोमपदे पाठात् गृहीत्वा लिखन्तु।

   (इन दोनों के विलोम पद पाठ से लेकर लिखिए।)

   उत्तरम्— आदरः (समादरः), सङ्गतम्।

(8) यस्मिन् देशे तस्य जनजीवने च न प्रवहित देशभक्तिधारा, न संचरति जन्मभूमिप्रेम, तत्र सामाजिकजीवनं शुष्कं गौरवरहितञ्च मन्यते। इदमेवालक्ष्य अस्माकं देशे प्रत्यह्न मातृभूमिस्तुतौ गीयते—

वन्दे मातरम्!

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्।

शस्य-श्यामलां मातरम्, वन्दे मातरम्।।

वस्तुतोऽस्माकं जन्मभूमिः जन्मनः जननी भूमिः। यथोक्तमपि 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।' यथा जननी स्व-स्तन्येन अस्मान् पालयति, तथैव मातृभूमिरपि स्वकीयेन विविधेन वस्तुजातेन स्वाश्रयेण चास्माकं पालनं रक्षणञ्च करोति। मातुः स्नेहमये उत्सङ्गे यथा वयं लालितास्तथैव जन्मभूमेः क्रोडेऽस्माकं वयोवर्धनं भवति। अतः सततमस्माभिः प्राणार्पणेनापि मातृभूमेर्हितसम्पादनं विधेयम्। मातृभूमिहितमेव राष्ट्रियहितं, भारतभूमेश्च गौरवमेव राष्ट्रगौरवमित्यत्र नास्ति विभेदः। अत एव मातृभूमिवात्सल्यं भारतस्य समृद्ध्यर्थं स्वातंत्र्यरक्षणार्थञ्च परमावश्यकम्।

(जिस देश में और उसके जन-जीवन में देशभक्ति की धारा प्रवाहित नहीं होती है, न जन्मभूमि के प्रति प्रेम का संचार होता है, वहाँ सामाजिक जीवन सूखा और गौरवरहित माना जाता है। इसी को देखकर हमारे देश में प्रतिदिन मातृभूमि की स्तुति गाई जाती है—

मैं माँ की वन्दना करता हूँ। (ऐसी माँ की जो) सुन्दर जलाशयों वाली, सुन्दर (स्वादिष्ट) फलों वाली और मलयपर्वत से उत्पन्न चन्दन से सुरभित और शीतल वायु से युक्त है। जो कृषि फसल से हरी-भरी है, ऐसी माँ की मैं वन्दना करता हूँ।

वास्तव में हमारी जन्मभूमि जन्म के कारण जननी (जन्म देने वाली) भूमि है। जैसा कि कहा भी गया है- भूमि मेरी माँ है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ। जिस प्रकार जननी हमको अपने स्तनों के दूध से हमें पालती है, उसी प्रकार मातृभूमि भी अपनी विविध वस्तुओं के समूह से और अपने आश्रम से हमारा पालन और रक्षण करती है। माता की स्नेहमयी गोद में जैसे हमसे लाड़ किया जाता है, उसी प्रकार जन्मभूमि की गोद में हमारी आयु वृद्धि होती है अर्थात् हम बड़े होते हैं। अतः हमें निरन्तर प्राणों की बाजी लगाकर भी मातृ-भूमि का हित सम्पादन करना चाहिए। मातृभूमि का हित ही राष्ट्र का हित और भारत भूमि का गौरव ही राष्ट्रगौरव है, इसमें कोई विभेद नहीं है। अतएव मातृभूमि का वात्सल्य-प्रेम भारत की समृद्धि और स्वतन्त्रता की रक्षार्थ परम आवश्यक है।)

प्रश्नाः–

1. अस्य अनुच्छेदस्य शीर्षकं लिखन्तु। (इस अनुच्छेद का शीर्षक लिखिए।)
   उत्तरम्— मातृभूमि-भक्तिः/देशभक्तिः।
2. जननी अस्मान् केन पालयति? (जननी हमें किससे पालती है?)
   उत्तरम्— जननी अस्मान् स्तन्येन पालयति। (माता हमें स्तन के दूध से पालती है।)
3. अस्माभिः मातृभूमेः हितसम्पादनं कथं विधेयम्?
   (हमें मातृभूमि का हित सम्पादन किस प्रकार करना चाहिए?)
   उत्तरम्— अस्माभिः मातृभूमेः प्राणपणेनापि हित सम्पादनं विधेयम्।
   (हमें मातृभूमि का प्राणपण (प्राणों की बाजी लगाकर भी) से हित सम्पादन करना चाहिए।)
4. 'अङ्के' इत्यस्य पर्यायवाचिनं पदं पाठात् चित्वा लिख्यताम्।
   ('अङ्के' इस शब्द का पर्यायवाची पद पाठ से चुनकर लिखिए।)
   उत्तरम्— उत्सङ्गे, क्रोडे।
5. 'सुजलां, सुफलां मलयजशीतलां शस्य श्यामलां वन्दे मातरम्' अस्मिन् वाक्ये विशेषण विशेष्य निर्देशं कुरु। (इस वाक्य में विशेषण-विशेष्य का निर्देश करिण।)
   उत्तरम्— विशेषण-पदानि—सुजलां, सुफलां, मलयजशीतलां, शस्य-श्यामलाम्।
   विशेष्य पदम्—मातरम्।

6. 'अभेद:' इति पदस्य विलोमपदं (विपरीतार्थकं पदम्) पाठात् अन्विष्य लिखन्तु।
('अभेद:' पद का विलोम पद पाठ से ढूँढ़कर लिखिए।)
उत्तरम्— विभेद:।

7. कर्तृ-क्रियान्विति कुर्वन्तु- (कर्त्ता-क्रिया की अन्विति कीजिए।)

(क) देशभक्ति धारा	—	पालयति
(ख) अस्माभि:	—	विधेयम्
(ग) जननी	—	वन्दे
(घ) अहम्	—	प्रवहति

उत्तरम्—

(क) देशभक्ति धारा	—	प्रवहति
(ख) अस्माभि:	—	विधेयम्
(ग) जननी	—	पालयति
(घ) अहम्	—	वन्दे

8. 'माता भूमि: पुत्रोऽहम् पृथिव्या:' अत्र रेखांकितपदस्य संज्ञापदस्य स्थाने सर्वनामपदस्य प्रयोगं कृत्वा वाक्यं पुनर्लिखन्तु।
('माता भूमि है मैं पृथिवी का पुत्र हूँ। इस वाक्य में रेखांकित पद संज्ञापद के स्थान पर सर्वनाम पर लगाकर वाक्य को पुन: लिखिए।)
उत्तरम्— माताभूमि: पुत्रोऽहं तस्या:। (भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।)

अन्य महत्वपूर्ण अपठित गद्यांश

- अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा एतदाधारित प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया यथानिर्देशं लिखत।
(निम्न गद्यांश को पढ़कर इस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में दीजिए।)

(9) सरदार भगतसिंह: क्रान्तिकारिणां यूनां नेतृत्वं स्वातन्त्र्य सङ्गरे कृतवान्। सोऽभूत् च आदर्शभूतो भारतीय: युवा-वर्गस्य। न केवलं भगतसिंह: स्वतन्त्रतासंग्रामे संलग्न: आसीत्, तस्य समग्र परिवारं: स्वतन्त्रतायुद्धे प्रवृत्त: आसीत्। सरदार भगतसिंहस्य जन्म-समये तस्य जनक: सरदार किशनसिंहो योऽभूत् स्वतन्त्रता सैनिक: स: कारागारे गौराङ्गै: निपातित:। स्वतन्त्रता सैनिकोऽस्य पितृव्य: सरदार अजीत सिंह: निर्वासितश्चासीत्। 1907 ई० वर्षे सितम्बरमासे, लॉयलपुर मण्डले बङ्गाख्ये ग्रामे सरदार भगतसिंहस्य जन्म बभूव। प्राथमिकी शिक्षा चास्य ग्रामे एव अभूत्। उच्चाध्ययनायायं लाहौर नगरं गतवान्। अध्ययन समकालमेव भगतसिंहोऽपि क्रान्तिकारिणां संसर्गे समागत: देशभक्ति-भावनया सोऽध्ययनं मध्ये विहाय दिल्ली-नगरं प्रत्यागच्छत्। तत्राय 'दैनिक अर्जुन' इत्याख्ये समाचार पत्रे संवाददातृ रूपेण कार्यमकरोत।

(सरदार भगतसिंह ने स्वाधीनता संग्राम में क्रान्तिकारी जवानों का नेतृत्व किया था। वह भारतीय युवावर्ग का आदर्श हो गया था। न केवल भगतसिंह स्वतन्त्रता संग्राम में संलग्न था, उसका सारा परिवार स्वतन्त्रतायुद्ध में लगा हुआ था। सरदार भगतसिंह के जन्म के समय उसके पिता सरदार किशनसिंह जो स्वतन्त्रता सैनिक हो गये थे, वे अंग्रेजों ने जेल में डाल दिये। स्वतन्त्रता सेनानी इनके चाचा सरदार अजीत सिंह को निर्वासित कर दिया था। 1907 ई. वर्ष में सितम्बर माह में लायलपुर मण्डल में बङ्गा नाम के गाँव में भगतसिंह का जन्म हुआ। और इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में ही हुई। ये उच्च अध्ययन के लिए लाहौर नगर को गये। अध्ययन के समय ही भगतसिंह भी क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आए। देशभक्ति की भावना से (प्रेरित होकर) वह अध्ययन बीच में छोड़कर दिल्ली नगर लौट आये। वहाँ पर 'दैनिक अर्जुन' इस नाम के समाचार-पत्र में संवाददाता के रूप में कार्य किया।)

(क) अस्य अनुच्छेदस्य उपयुक्तं शीर्षकं लिखत। (इस अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।)
उत्तरम्—क्रान्तिवीर: सरदार भगतसिंह:।

(ख) यथा निर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

● एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. सरदार भगतसिंहः स्वातन्त्र्यसङ्गरे केषां नेतृत्वं कृतवान्?
(सरदार भगतसिंह ने स्वतन्त्रता-संग्राम में किनका नेतृत्व किया?
उत्तरम्— क्रान्तिकारिणां यूनाम् (क्रान्तिकारी जवानों का।)

2. भगतसिंहस्य जनकस्य किं नाम आसीत्? (भगतसिंह के पिता का क्या नाम था?)
उत्तरम्— सरदार किशनसिंहः।

● पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. सरदार भगतसिंहस्य पितृव्यस्य किं नाम आसीत्? (सरदार भगतसिंह के चाचा का नाम क्या था?)
उत्तरम्— सरदार भगतसिंहस्य पितृव्यस्य नाम सरदार अजीत सिंहः आसीत्।
(सरदार भगतसिंह के चाचा का नाम सरदार अजीतसिंह था।)

4. भगतसिंहः उच्चाध्ययनाय कुत्र गतवान्? (भगतसिंह उच्च शिक्षा के लिए कहाँ गया?)
उत्तरम्—भगतसिंहः उच्चाध्ययनाय लाहौर नगरं गतवान्। (भगतसिंह उच्च शिक्षा के लिये लाहौर गया।)

5. भगतसिंहः कदा क्रान्तिकारिणां संसर्गे समागतः? (भगतसिंह कब क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आया?)
उत्तरम्—भगतसिंहः अध्ययन समकालमेव क्रान्तिकारिणां संसर्गे समागतः।
(भगतसिंह अध्ययन के समय ही क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आया।)

(ग) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

1. 'सोऽभूच्चादर्शभूतो..........' अत्र कर्त्तृपदं किमस्ति? (सोऽभूच्चादर्शभूतो........इसमें कर्त्तापद क्या है?)
उत्तरम्—सः (सरदार भगतसिंहः)

2. 'प्राथमिकी शिक्षा' अत्र विशेषणपदं किमस्ति? ('प्राथमिकी शिक्षा' यहाँ विशेषण पद कौनसा है?)
उत्तरम्—प्राथमिकी-विशेषणपदम्।

3. "तस्य समग्रः परिवारः स्वतन्त्रता युद्ध प्रवृतः आसीत्" अत्र 'तस्य' सर्वनाम स्थाने संज्ञापदं प्रयोगं कुरुत।
('तस्य समग्रः.......... आसीत्" यहाँ तस्य सर्वनाम के स्थान पर संज्ञा पद का प्रयोग कीजिए।)
उत्तरम्—सरदार भगतसिंहस्य समग्रः परिवारः स्वतन्त्रता युद्धे प्रवृतः आसीत्।
(सरदार भगतसिंह का सम्पूर्ण परिवार स्वतन्त्रता संग्राम में लगा हुआ था।)

4. 'परतन्त्रता' इत्यस्य विलोमपदं गद्यांशात चित्वा लिखत।
('परतन्त्रता' इसका विलोमपद गद्यांश से चुनकर लिखिए।)
उत्तरम्—स्वतन्त्रता (स्वाधीनता)।

(10) संस्कृत भाषायाः वैज्ञानिकतां विचार्य एव सङ्गणक-विशेषज्ञाः कथयन्ति यत् संस्कृतम् एव सङ्गणकस्य कृते सर्वोत्तमाभाषा विद्यते। अस्याः वाङ्मयं वेदैः पुराणैः नीति शास्त्रैः चिकित्सा शास्त्रादिभिश्च समृद्धमस्ति। कालिदास सदृशानां विश्वकवीनां काव्य सौन्दर्यम् अनुपमम्। चाणक्य रचितम् अर्थशास्त्रम् जगति प्रसिद्धमस्ति। गणितशास्त्रे शून्यस्य प्रतिपादनं सर्वप्रथमं भास्कराचार्यः सिद्धान्त शिरोमणौ अकरोत्। चिकित्साशास्त्रे चरक सुश्रुतयोः योगदानं विश्व प्रसिद्धम्। भारत सर्वकारस्य विभिन्नेषु विभागेषु संस्कृतस्य सूक्तयः ध्येयवाक्यरूपेण स्वीकृताः सन्ति। भारतसर्वकारस्य राजचिह्ने प्रयुक्तां सूक्तिं— 'सत्यमेव जयते' सर्वे जानन्ति। एवमेव राष्ट्रिय शैक्षिकानुसन्धान प्रशिक्षण परिषदः ध्येय वाक्यं 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' वर्तते।

(संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता पर विचार करके ही कम्प्यूटर के विशेषज्ञों ने कहा है कि संस्कृत ही कम्प्यूटर के लिए

सबसे उत्तम भाषा है। इसका साहित्य वेदों, पुराणों, नीतिशास्त्रों और चिकित्सा आदि शास्त्रों से समृद्ध है। कालिदास जैसे विश्वकवियों का काव्य सौन्दर्य अतुलनीय है। चाणक्य द्वारा रचा गया अर्थशास्त्र संसार में प्रसिद्ध है। गणित शास्त्र में शून्य का प्रतिपादन सर्वप्रथम भास्कराचार्य ने सिद्धान्त शिरोमणि में किया। चिकित्सा शास्त्र में चरक और सुश्रुत का योगदान संसार में प्रसिद्ध है। भारत सरकार के विभिन्न विभागों में संस्कृत की सूक्तियाँ ध्येय वाक्य के रूप में स्वीकार की गई हैं। भारत सरकार के राजचिह्न में प्रयोग की गई सूक्ति—''सत्यमेव जयते' को सभी जानते हैं। इसी प्रकार राष्ट्रिय शैक्षिक अनुसन्धान प्रशिक्षण परिषद का ध्येयवाक्य है- 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' (विद्या से अमृत प्राप्त होता है।) (संस्कृत में ही है।)

(क) अस्य अनुच्छेदस्य उपयुक्तं शीर्षकं लिखत- (इस अनुच्छेद का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।)

उत्तरम्— संस्कृत भाषायाः महत्वम्/संस्कृत भाषायाः महनीयता। (संस्कृत भाषा का महत्त्व)।

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. शून्यस्य प्रतिपादनं सर्वप्रथमं भास्कराचार्यः कुत्र अकरोत्?
   (शून्य का प्रतिपादन सबसे पहले भास्कराचार्य ने कहाँ किया?)
   उत्तरम्— सिद्धान्तशिरोमणौ (सिद्धान्त शिरोमणि में)।
2. कस्य कृते संस्कृतमेव सर्वोत्तमा भाषा विद्यते? (किसके लिए संस्कृत ही सबसे उत्तम भाषा है?)
   उत्तरम्— सङ्गणकस्य कृते (कंप्यूटर के लिए)।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. भारत सर्वकारस्य राजचिह्नं किम् अस्ति? (भारत सरकार का राजचिह्न क्या है?)
   उत्तरम्— 'सत्यमेव जयते' इति भारत सर्वकारस्य राज-चिह्नम्।
   ('सत्य की विजय होती है' यह भारत सरकार का राज चिह्न है।)
4. 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' कस्य ध्येयवाक्यम्? ('विद्या से अमृत प्राप्त होता है' यह किसका ध्येयवाक्य है?)
   उत्तरम्— 'राष्ट्रिय शैक्षिकानुसन्धान प्रशिक्षण परिषदः ध्येयवाक्यं 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' वर्तते।
   (राष्ट्रिय शैक्षिक अनुसन्धान प्रशिक्षण परिषद का ध्येय वाक्य 'विद्या से अमृत प्राप्त होता है।')
5. केषां कवीनां काव्य सौन्दर्यम् अनुपमम्? (किन कवियों का काव्य सौन्दर्य अनुपम है?)
   उत्तरम्— कालिदास सदृशानां विश्वकवीनां काव्य सौन्दर्यमम् अनुपमम्।
   (कालिदास जैसे विश्व-कवियों का काव्य- सौन्दर्य अनुपम है।)

(ग) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

1. 'सर्वोत्तमा भाषा विद्यते' अत्र विशेषणपदं किम्?
   ('सर्वोत्तमा भाषा विद्यते' इस वाक्य में विशेषण-पद क्या है?)
   उत्तरम्— 'सर्वोत्तमा' पदं भाषा पदस्य विशेषणम् ('सर्वोत्तमा' पद भाषा पद का विशेषण है।)
2. 'सङ्गणकविशेषज्ञाः कथयन्ति' अत्र कर्तृपदं लिखत। ('संगणक विशेषज्ञ कहते हैं' इसमें कर्त्तापद लिखिए।)
   उत्तरम्— 'सङ्गणकविशेषज्ञाः' कथयन्ति क्रियापदस्य कर्तृपदम्'
   ('संगणक विशेषज्ञाः' पद कथयन्ति क्रिया का कर्त्ता है।)
3. 'अविचार्य' इत्यस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।
   ('अविचार्य' का विलोम पद गद्यांश से चुनकर लिखिए।)
   उत्तरम्— विचार्य।
4. 'सूक्तयः स्वीकृताः सन्ति' इत्यत्र क्रियापदं लिखत। ('सूक्तियाँ स्वीकार हैं' इस वाक्य में क्रिया-पद लिखिए।)
   उत्तरम्— 'सन्ति' क्रियापदं। (सन्ति क्रिया-पद है।)

(11) विवेकानन्दस्य जन्म कालिकाता नगरे अभवत्। तस्य पिता विश्वनाथ दत्तः माता च भुवनेश्वरी देवी आस्ताम्। तस्य प्रथमं नाम नरेन्द्रः आसीत्। नरेन्द्र बाल्याद् एव क्रीड़ापटुः, दयालुः, विचारशीलः च आसीत्। 'ईश्वरः अस्ति न वा इति शङ्का आसीत्। शास्त्राणाम् अध्ययनेन बहूनां साधूनां च समीपं गत्वा अपि शङ्का परिहारः न अभवत्। अन्ते च श्री रामकृष्ण परमहंसस्य सकाशात् तस्य सन्देह-परिहारः अभवत्। परमहंसस्य दिव्य प्रभावेण आकृष्टः सः तस्य शिष्यः अभवत्। सः विश्वधर्म सम्मेलने भागं ग्रहीतुम् अमेरिका देशस्य शिकागो नगरं गतवान्। तत्र विविधदेशीयान् जनानुद्दिश्य हिन्दु-धर्म-विषये भाषणं कृतवान्। सः भारतीयान् 'उत्तिष्ठ जाग्रत, दीनदेवो भव, दरिद्र देवोभव'-इति संबोधितवान्। अमूल्याः तस्योपदेशाः।

(विवेकानन्द का जन्म कालिकाता (कलकत्ता अथवा कोलकाता) नगर में हुआ। उनके पिता विश्वनाथ दत्त तथा माता भुवनेश्वरी देवी थीं। उनका पहला (बचपन का) नाम नरेन्द्र था। नरेन्द्र बचपन से ही खेलने में चतुर, दयालु और विचारशील था। 'ईश्वर है अथवा नहीं' यह उसकी शंका थी। शास्त्रों के अध्ययन से और बहुत से साधुओं के पास जाकर भी शङ्का का निराकरण नहीं हुआ। और अन्त में श्रीरामकृष्ण परमहंस के पास से उनके सन्देह का समाधान हुआ। परमहंस के दिव्य प्रभाव से आकर्षित हुआ वह उनका शिष्य हो गया। वह विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने अमेरिका देश के शिकागो नगर को गया। वहाँ विभिन्न देशों के लोगों को लक्ष्य करके हिन्दू धर्म के विषय में भाषण किया। उन्होंने भारतीयों से उठो, जागो, दीन देवता है, दरिद्र देवता है, ऐसा संबोधित किया। उनके उपदेश अमूल्य हैं।)

(क) अस्य अनुच्छेदस्य उपयुक्तं शीर्षकं लिखत। (इस अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।)

उत्तरम्— विवेकानन्दः।

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों का उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. विवेकानन्दस्य जन्म कुत्र अभवत्? (विवेकानन्द का जन्म कहाँ हुआ था?)

   उत्तरम्— कालिकातानगरे ।

2. विवेकानन्दस्य प्रथमं नाम किम् आसीत्? (विवेकानन्द का पहला नाम क्या था?)

   उत्तरम्— नरेन्द्रः।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. नरेन्द्रः बाल्यकाले कीदृशः आसीत्? (नरेन्द्र बचपन में कैसा था?)

   उत्तरम्— नरेन्द्रः बाल्यकाले क्रीडापटुः, दयालुः विचारशीलः च आसीत्।

   (नरेन्द्र बचपन में खेलने में चतुर, दयालु और विचारशील था।)

4. नरेन्द्रस्य ईश्वरविषयक शङ्कायाः परिहारः कुत्र अभवत्?

   (नरेन्द्र की ईश्वर सम्बन्धी शंका का समाधान कहाँ हुआ?)

   उत्तरम्— नरेन्द्रस्य ईश्वरविषयक शङ्काया परिहारः श्रीरामकृष्ण परमहंसस्य सकाशात् अभवत्।

   (नरेन्द्र की ईश्वर सम्बन्धी शंका का निराकरण श्री रामकृष्ण परमहंस के पास से हुआ।)

5. विवेकानन्दः शिकागो सम्मेलने कं विषयम् आश्रित्य भाषणं कृतवान्?

   (विवेकानन्द ने शिकागो सम्मेलन में किस विषय के आधार पर भाषण दिया?)

   उत्तरम्— विवेकानन्दः हिन्दुधर्म-विषयम् आश्रित्य भाषणं कृतवान्।

   (विवेकानन्द ने हिन्दूधर्म के विषय का आश्रय लेकर भाषण दिया।)

(ग) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

1. 'ईश्वरः अस्ति नास्ति वा' 'अस्ति' क्रियापदस्य कर्त्ता कः?

   (ईश्वर है या नहीं' वाक्य में 'अस्ति' क्रिया का कर्त्ता कौन है?)

   उत्तरम्— ईश्वरः।

2. 'दरिद्रदेवोभव' अनयो: किं क्रियापदम्'? ('दरिद्रदेवो भव' इन दोनों पदों में से क्रियापद कौन-सा है?)

   उत्तरम्— 'भव' इति क्रियापदम्। ('भव' क्रियापद है।)

3. 'अमूल्या: तस्य उपदेशा:' वाक्ये 'तस्य' सर्वनाम पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

   ('अमूल्या: तस्य उपदेशा: वाक्य में 'तस्य' सर्वनाम पद किसके लिए प्रयोग हुआ है?)

   उत्तरम्— विवेकानन्दस्य।

4. 'उपदेशा:' इत्यस्य विशेष्यपदस्य विशेषण पदं लिखत। ('उपदेशा:' इस विशेष्य पद का विशेषण लिखिए।)

   उत्तरम्— अमूल्या:।

(12) एकदा द्रोणाचार्य: कौरवान् पाण्डवान् च पाठमेकम् अपाठयत्। 'सत्यं वद धर्मं चर।' अग्रिमे दिने सर्वे शिष्या: पाठं कण्ठस्थी कृत्य गुरुम् अश्रावयन्। किन्तु युधिष्ठिर: तूष्णीम् एव अतिष्ठत्। आचार्येण पृष्ट: स: प्रत्युवाच-'मया पाठ: न स्मृत:' उत्तरं श्रुत्वा सर्वेऽपि सहपाठिन: अहसन्। गुरु: च रुष्ट: अभवत्। पञ्चमे दिवसे युधिष्ठिर: गुरवे न्यवेदयत् यन्मया सम्पूर्ण: पाठ: स्मृत:। गुरु अपृच्छत्- "लघीयान आसीत् एष: पाठ:। किमर्थं चिरात् स्मृत:?" स: अवदत्- "हे गुरो? वचसा तु पाठै: स्मृत: आसीत्, परं प्रमादेन हास्येन वा अनेकवारम् असत्यम् अवदम्। ह्य: प्रभृति मया असत्य वचनं न भाषितम्। अधुना दृढतया वक्तुं शक्नोमि, यत् मया भवता पठित: पाठ: स्मृत:।" इदं श्रुत्वा प्रीत: द्रोण: अवदत्-त्वं धन्योऽसि य: पाठं व्यवहारे आनीतवान्। त्वया एव पाठस्य अर्थ: ज्ञात: बोधित: च?" वस्तुत: प्रयोगं विना ज्ञानं तु भारम् एव भवति।

(एक दिन द्रोणाचार्य ने कौरव और पाण्डवों को एक पाठ पढ़ाया। 'सत्य बोलो। धर्म का आचरण करो।' अगले दिन सभी शिष्यों ने पाठ को कण्ठस्थ कर गुरुजी को सुना दिया। किन्तु युधिष्ठिर चुप ही रहा । आचार्य के पूछे जाने पर वह बोला- 'मैंने पाठ याद नहीं किया।' उत्तर को सुनकर सभी सहपाठी हँस पड़े और गुरु नाराज हो गये। पाँचवें दिन युधिष्ठिर ने गुरुजी से निवेदन किया कि मैंने सम्पूर्ण पाठ याद कर लिया है। गुरु जी ने पूछा- यह पाठ तो छोटा-सा था, इतनी देर से किसलिए याद हुआ? वह बोला- गुरुजी! वाणी से तो पाठ याद हो गया था परन्तु लापरवाही अथवा हँसी-मजाक में अनेक बार झूठ बोला । कल से मैंने असत्य वचन नहीं बोला है । अब मैं दृढ़ता के साथ कह सकता हूँ कि मैंने आपके द्वारा पढ़ाया हुआ पाठ याद कर लिया। यह सुनकर प्रसन्न हुए गुरुजी बोले- "तुम धन्य हो, जिसने पाठ को व्यवहार में लाया। तुमने ही पाठ का अर्थ जाना है और समझा है ।" वास्तव में प्रयोग (व्यवहार) के बिना विद्या (ज्ञान) भार है।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत— (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए)

   उत्तरम्— ज्ञानं भारं प्रयोग विना। (प्रयोग के बिना ज्ञान भार है।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. प्रयोगं विना ज्ञानं कीदृशम्? (प्रयोग के बिना ज्ञान कैसा होता है?)

   उत्तरम्— भारम् (भार)।

2. युधिष्ठिरेण क: पाठ: न स्मृत: ? (युधिष्ठिर ने कौन-सा पाठ याद नहीं किया?)

   उत्तरम्— सत्यं वद धर्मं चर (सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो।)

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. कीदृशं ज्ञानं भारम्? (कैसा ज्ञान भार होता है?)

   उत्तरम्— प्रयोगं विना ज्ञानं भारम् (व्यवहार के बिना ज्ञान भार है।)

4. प्रीत: द्रोण: युधिष्ठिरं किम् अवदत्? (प्रसन्न द्रोण ने युधिष्ठिर से क्या कहा?)

   उत्तरम्— प्रीत: द्रोण: युधिष्ठिरम् अवदत् यत् त्वं धन्योऽसि य: पाठं व्यवहारे आनीतवान् त्वया एव पाठस्य अर्थ: ज्ञात: बोधितश्च।" (प्रसन्न द्रोण ने युधिष्ठिर से कहा-तुम धन्य हो जो पाठ को व्यवहार में लाये। तुमने ही पाठ को जाना और समझा है।)

5. सहपाठिनः कस्मात् अहसन्? (सहपाठी किसलिए हँसे?)
उत्तरम्— 'मया पाठं न स्मृतः' इति युधिष्ठिरस्य उत्तरं श्रुत्वा सहपाठिनः अहसन्।
('मैंने पाठ याद नहीं किया' युधिष्ठिर के इस उत्तर को सुनकर सहपाठी हँस पड़े।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

1. 'अपाठयत्' क्रियापदस्य कर्त्ता अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।
('अपाठयत्' क्रियापद का कर्त्ता अनुच्छेद से चुनकर लिखिए।)
उत्तरम्— द्रोणाचार्यः।
2. 'मया पाठः न स्मृतः' वाक्ये 'मया' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्? ('मया पाठः न स्मृतः' वाक्य में 'मया' सर्वनाम पद किसके लिए प्रयोग हुआ है?)
उत्तरम्— युधिष्ठिराय (युधिष्ठिर के लिए)।
3. 'प्रीतः द्रोणः' इत्यनयोः विशेष्यः कः? ('प्रीतः द्रोणः' इन दोनों पदों में विशेष्य क्या है?)
उत्तरम्—द्रोणः।
4. 'त्वं धन्योऽसि।' अत्र किं क्रियापदम्? ('त्वं धन्योऽसि' इस वाक्य में क्रियापद क्या है?)
उत्तरम्— असि।

(13) कस्मिंश्चिद् वने कोऽपि काकः निवसति स्म । वर्षायाः अभावे वने कुत्रापि जलं नासीत्। नद्यः तडागाः च जलविहीनाः आसन्। एकदाः काकः अति पिपासितः आसीत्। सः इतस्तः अपश्यत् परञ्च न कुत्रापि जलाशयः दृष्टः। सः जलस्य अन्वेषणे इतस्ततः अभ्रमत्। यावत् असौ पिपासितः काकः ग्रामे गच्छति तावत् दूरे एकं घटम् अपश्यत्। काकः घटस्य समीपम् अगच्छत्। घटस्य उपरि अतिष्ठत्। सोऽपश्यत् यत् घटे जलम् अत्यल्पम् आसीत् अतः दूरम् आसीत। सः चञ्च्वा जलं न पातुम् अशक्नोत्। किञ्चिद् दूरे प्रस्तर खण्डान् दृष्ट्वा सः उपायम् अचिन्तयत्। सः एकैकम् प्रस्तर खण्डं स्व चञ्च्वा आनयत् तानि प्रस्तरखण्डानि घटे न्यक्षिपत्। यथायथा पाषाण खण्डानि जले न्यमज्जन् तथा-तथा एव जलस्तरः उपरि आगच्छत्। उपर्यागतं जलमवलोक्य काकः अति प्रसन्नः जातः। सः जलम् पीतवान् मुक्तगगने च उड्डीयत। उड्डीयमानः काकोऽचिन्तयत्- उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

(किसी जंगल में कोई कौआ रहता था। वर्षा के अभाव में वन में कहीं पानी नहीं था। नदी-तालाब जलविहीन थे। एक दिन वह कौवा बहुत प्यासा था। उसने इधर-उधर देखा परन्तु कहीं भी जलाशय दिखाई नहीं पड़ा। वह जल की खोज में इधर-उधर घूमने लगा। जैसे ही वह प्यासा कौआ गाँव को गया वैसे ही दूरी पर एक घड़े को देखा। कौआ घड़े के पास गया, घड़े के ऊपर बैठा। उसने देखा कि घड़े में जल बहुत थोड़ा था, अतः दूर था। वह चोंच से पानी नहीं पी सका। कुछ दूरी पर पत्थर के टुकड़ों (कंकड़ों) को देखकर उसने उपाय सोचा। वह एक-एक कंकड़ चोंच में लाया, उन कंकड़ों को घड़े में डाल दिया। जैसे-जैसे कंकड़ पानी में डूबे वैसे-वैसे ही जलस्तर ऊपर आ गया। ऊपर आये हुए पानी को देखकर कौआ बहुत प्रसन्न हुआ। उसने पानी पिया और मुक्त गगन में उड़ गया। उड़ते हुए कौवे ने सोचा— उद्यम (परिश्रम) से ही कार्य सिद्ध होते हैं, न कि मनोरथ से।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)
उत्तरम्— उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि / पिपासितः काकः।

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. घटे कियत् जलम् आसीत्? (घड़े में कितना पानी था?)
उत्तरम्—अत्यल्पम्।

2. कार्याणि केन सिद्ध्यन्ति? (कार्य किससे सिद्ध होते हैं?)
 उत्तरम्—उद्यमेन।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. उड्डीयमानः काकः किम् अचिन्तयत्? (उड़ते हुए कौए ने क्या सोचा?)
 उत्तरम्—सोऽचिन्तयत् यत् उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
 (उसने सोचा-उद्यम (परिश्रम) से ही कार्य सिद्ध होते हैं, न कि मनोरथ से।)
4. उपर्यागतं जलमवलोक्य काकः कीदृशः अभवत्? (ऊपर आये पानी को देखकर कौआ कैसा हो गया?)
 उत्तरम्—काकः प्रसन्नः अभवत्। (कौआ प्रसन्न हो गया।)
5. काकः किम् उपायम् अचिन्तयत्? (कौआ ने क्या उपाय सोचा?)
 उत्तरम्—काकः चञ्च्वा एकैकं प्रस्तर खण्डम् आनीय घटे न्यक्षिपत्।
 (कौआ ने चोंच से एक-एक कंकड़ लाकर घड़े में डाला।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—)

1. "काकः अतिपिपासितः आसीत्' अत्र काकस्य विशेषणं पदं लिखत।
 ('काकः.....आसीत्' यहाँ 'काकः' का विशेषण पद लिखिए।)
2. 'तृषित' इति पदस्य पर्यायवाचिपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।
 ('तृषित' पद का पर्यायवाची पद गद्यांश से चुनकर लिखिए।)
3. 'जलं नासीत्' अनयोः कर्तृपदं लिखत। ('जलं नासीत्' इनमें से कर्त्तापद लिखिए।)
4. 'सोऽपश्यत्' अथ 'सः' इति सर्वनाम पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
 ('सोऽपश्यत्' यहाँ 'सः' सर्वनाम पद किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?)

उत्तरम्— 1. पिपासितः 2. पिपासितः 3. जलम् 4. काकः ।

(14) एकस्य भिक्षुकस्य भिक्षापात्रे अञ्जलि परिमिताः तण्डुलाः आसन्। सः अवदत्- 'भगवन्! दयां कुरु। कथम् अनेन उदरपूर्तिः भविष्यति?" तदैव अन्यः भिक्षुकः तत्र आगच्छति वदति च, 'भिक्षां देहि!' क्रुद्धः प्रथमः भिक्षुकः अगर्जत्- 'रे भिक्षुक! भिक्षुकम् एव भिक्षां याचते? तव लज्जा नास्ति?" द्वितीयः भिक्षुकः उक्तवान्- "तव भिक्षा पात्रे अञ्जलि परिमिताः तण्डुलाः, मम तु पात्रं रिक्तम्। दयां कुरु। अर्धं देहि।" प्रथमः भिक्षुकः तत् न स्वीकृतवान्। द्वितीयः भिक्षुकः पुनः अवदत्, "भो कृपणः मा भव। केवलम् एकं तण्डुलं देहि।" प्रथमः भिक्षुकः तस्मै एकमेव तण्डुलं ददाति। द्वितीये भिक्षुके गते सति प्रथमः भिक्षुकः भिक्षापात्रे तण्डुलाकारं स्वर्णकणं पश्यति। आश्चर्यचकितः शिरः ताडयन् सः पश्चात्तापम् अकरोत्— धिक् माम, धिङ् मम मूर्खताम्।"

(एक भिक्षुक के भिक्षापात्र में अञ्जलि भर चावल थे। वह बोला-भगवान् दया करो। इससे कैसे पेट भरेगा? तभी दूसरा भिक्षुक वहाँ आ जाता है और कहता है- 'भिक्षा दो।' क्रुद्ध होकर पहला भिखारी गरजा- अरे भिखारी! भिखारी से ही भीख माँगता है? तुझे शर्म नहीं आती (तेरे शर्म नहीं है)। दूसरा भिक्षुक बोला- "तेरे भिक्षा पात्र में अंजलि भर चावल तो हैं, मेरा पात्र तो खाली (ही) है। दया करो। आधा दे दो। पहले भिक्षुक ने यह स्वीकार नहीं किया। दूसरा भिक्षुक फिर बोला- "अरे कंजूस मत हो। केवल एक चावल दे दे।" पहला भिक्षुक उसे एक ही चावल देता है। दूसरे भिक्षुक के चले जाने पर पहला भिक्षुक भिक्षापात्र में चावल के आकार का सोने का कण देखता है । आश्चर्यचकित हुआ सिर पीटता हुआ वह पश्चात्ताप करने लगा- धिक्कार है मुझे, मेरी मूर्खता को धिक्कार है।")

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)
 उत्तरम्—उदारतायाः फलम्। (उदारता का फल।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. भिक्षुकस्य भिक्षापात्रे कियत्परिमिता तण्डुलं आसन्? (भिक्षुक के भिक्षापात्र में कितने चावल थे?)
   उत्तरम्—अञ्जलि परिमिताः।
2. द्वितीयो भिक्षुकः कं भिक्षाम् अयाचत? (दूसरे भिखारी ने किससे भीख माँगी?)
   उत्तरम्—प्रथमं भिक्षुकम्।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. प्रथमः भिक्षुकः भगवन्तं किम् अयाचत? (पहले भिखारी ने भगवान से क्या माँगा?)
   उत्तरम्—सोऽयाचत, भगवन् दयां कुरु। कथम् अनेन उदरपूर्तिः भविष्यति?
   (उसने याचना की— भगवन्! दया करो। इससे पेट पूर्ति कैसे होगी?)
4. प्रथमः भिक्षुकः किम् अगर्जत? (पहला भिक्षुक क्या गरजा?)
   उत्तरम्—प्रथमः भिक्षुकः अगर्जत्- रे भिक्षुक! भिक्षुकमेव भिक्षां याचते। तव लज्जा नास्ति?
   (पहले भिक्षुक ने गर्जना की- अरे भिक्षुक! भिक्षुक से ही भिक्षा माँगता है। तेरे कोई शर्म नहीं है?)
5. द्वितीयः भिक्षुकः प्रथमं कति तण्डुलानि अयाचत? (दूसरे भिखारी ने पहले से कितने चावल माँगे?)
   उत्तरम्—द्वितीय भिक्षुकः प्रथम भिक्षुकं एकमेव तण्डुलम् अयाचत्।
   (दूसरे भिखारी ने पहले भिखारी से एक ही चावल माँगा।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—)

1. 'भविष्यति' क्रियापदस्य कर्त्तापदं चिनुत। ('भविष्यति' क्रियापद का कर्त्तापद चुनिए।)
   उत्तरम्—उदरपूर्तिः।
2. 'दयां कुरु' इत्यनयोः किं क्रियापदम्? ('दयां कुरु' इन दोनों में क्रियापद क्या है?)
   उत्तरम्—कुरु।
3. 'क्रुद्धः प्रथमः भिक्षुकः अगर्जत्' अत्र विशेष्यपदं किम्? (यहाँ विशेष्य पद क्या है?)
   उत्तरम्—भिक्षुकः।
4. 'धिक् मम मूर्खताम्' अत्र 'मम' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   ('धिक् मम मूर्खताम्' यहाँ 'मम' सर्वनाम पद किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?)
   उत्तरम्—प्रथमभिक्षुकाय।

(15) परेषां प्राणिनामुपकारः परोपकारोऽस्ति। परस्य हित सम्पादनं मनसा वाचा कर्मणा च अन्येषां हितानुष्ठानमेव परोपकार शब्देन गृह्यते। संसारे परोपकारः एव सः गुणो विद्यते, येन मनुष्येषु सुखस्य प्रतिष्ठा वर्तते। परोपकारेण हृदयं पवित्र सरलं, सरसं, सदयं च भवति। सत्पुरुषा कदापि स्वार्थपराः न भवन्ति। ते परेषां दुःखं स्वीयं दुःखं मत्वा तन्नाशाय यतन्ते। सज्जनाः परोपकारेण एव प्रसन्नाः भवन्ति। परोपकार-भावनैव दधीचिः देवानां हिताय स्वकीयानि अस्थीनि ददौ। महाराजशिविः कपोत रक्षणार्थ स्वमांसं श्येनाय प्रादात्। अस्माकं शास्त्रेषु परोपकारस्य महत्ता वर्णिता। प्रकृतिरपि परोपकारस्यै शिक्षां ददाति। अतः सर्वेरपि सर्वदा परोपकारः करणीयः।

(दूसरे प्राणियों का उपकार परोपकार है। दूसरे का हित-सम्पादन और मन-वाणी और कर्म से दूसरों का हितकार्य ही परोपकार शब्द से ग्रहण किया जाता है । संसार में परोपकार ही वह गुण है जिससे मनुष्यों में सुख की प्रतिष्ठा होती है। परोपकार से हृदय पवित्र, सरल, सरस और दयालु होता है। सज्जन कभी स्वार्थ के लिए तत्पर नहीं होते। वे दूसरों के दुख को अपना दुःख मानकर उसको दूर करने का प्रयत्न करते हैं। सज्जन परोपकार से ही प्रसन्न होते हैं। परोपकार की भावना से

ही दधीचि ने देवताओं के हित के लिए अपनी हड्डियों को दे दिया। महाराज शिवि ने कबूतर की रक्षा के लिए अपना मांस बाज के लिए दे दिया। हमारे शास्त्रों में परोपकार की महिमा वर्णित है। प्रकृति भी परोपकार की शिक्षा देती है। अत: सभी को हमेशा परोपकार करना चाहिए।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत– (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए)
उत्तरम्–परोपकारस्य महत्त्वम्। (परोपकार का महत्त्व।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत– (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)–

1. देवानां हिताय स्वकीयानि अस्थीनि क: ददौ? (देवताओं के हित के लिए अपनी हड्डियाँ किसने दे दीं?)
   उत्तरम्–दधीचि:।
2. मनुष्येषु परोपकारेण किं भवति? (मनुष्यों में परोपकार से क्या होता है?)
   उत्तरम्–सुखस्य प्रतिष्ठा।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत– (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए–)

3. परोपकार: क: अस्ति? (परोपकार क्या है?)
   उत्तरम्–परेषां प्राणिनाम् उपकार: परोपकार: अस्ति। (दूसरे प्राणियों का उपकार परोपकार है।)
4. महाराज शिवि: परोपकाराय किम् अकरोत्? (महाराज शिवि ने परोपकार में क्या किया?)
   उत्तरम्–महाराज शिवि परोपकाराय कपोतरक्षणार्थं श्येनाय स्वमांसं ददौ।
   (महाराज शिवि ने परोपकार के लिए बाज को अपना मांस दे दिया।)
5. प्रकृति किं शिक्षते? (प्रकृति किसकी शिक्षा देती है?)
   उत्तरम्–प्रकृति परोपकारस्य एव शिक्षां ददाति। (प्रकृति परोपकार की ही शिक्षा देती है।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत– (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–)

1. ''ते परेषां दु:खं.........'' अत्र 'ते' सर्वनामपदस्य स्थाने संज्ञापदं किम्? (यहाँ सर्वनाम पद 'ते' के स्थान पर संज्ञा पद क्या है?)
   उत्तरम्–सत्पुरुषा:।
2. ''प्रकृतिरपि परोपकारस्यैव शिक्षां...........'' अत्र कर्तृपदं किमस्ति? (वाक्य में कर्तृपद क्या है?)
   उत्तरम्–प्रकृति:।
3. 'कठिन' इति पदस्य विलोमपदं लिखत। (कठिन शब्द का विलोम पद लिखिए।)
   उत्तरम्–सरलं।
4. 'सुखस्य प्रतिष्ठा वर्तते' अत्र क्रियापदं किम्? (वाक्य में क्रियापद क्या है?)
   उत्तरम्– वर्तते।

(16) मेवाडराज्यं बहूनां शूराणां जन्मभूमि:। तस्य राजा राणाप्रताप: सिंहासनम् आरूढ़वान्। हस्तच्युतानां भागानां प्रति प्राप्ति: कथमिति विचिन्त्य स: पुर प्रमुखाणां सभामायोजितवान्। तत्र स: प्रतिज्ञां कृतवान्- 'चित्तौड़स्थानं यावत् न प्रति प्राप्स्यामि तावत् सुवर्ण पात्रे भोजनं न करिष्यामि। राजप्रासादे वासं न करिष्यामि। मृदुतल्ये शयनम् अपि न करिष्यामि' इति। तदा पुर प्रमुखा: अवदन् वयम् अपि सुख-साधनानि त्यक्ष्याम। देशाय यथा शक्ति धनं दास्याम:। अस्मत्पुत्रान् सैन्यं प्रति प्रेषयिष्याम: इति। तदनन्तरं ग्राम प्रमुखा: अवदन्- वयं धान्यागारं धान्येन परिपूरयिष्याम:। ग्रामे आयुधानि सज्जीकरिष्याम:। युवकान् युद्धकलां बोधयिष्याम:। अद्यैव कार्यारम्भ: करिष्याम:।

(मेवाड़ राज्य बहुत से वीरों की जन्मभूमि है। उसका राजा राणा प्रताप सिंहासन पर आरूढ़ हुआ, हाथ से निकले हुए

भागों की वापिस प्राप्ति कैसे हो ? यह सोचकर उसने नगर प्रमुखों की सभा आयोजित की। वहाँ उसने प्रतिज्ञा की- चित्तौड़ स्थान को जब तक वापिस प्राप्त नहीं कर लूँगा तब तक सोने की थाली में भोजन नहीं करूँगा। राजमहल में निवास नहीं करूँगा। कोमल गद्दों पर शयन भी नहीं करूँगा। तब पुर-प्रमुखों ने कहा- हम भी सुख-साधनों को त्यागेंगे। देश के लिए यथा शक्ति धन देंगे। अपने पुत्रों को सेना में भेजेंगे। इसके बाद ग्राम प्रमुखों ने कहा- हम धान्यागारों को धान से भरपूर कर देंगे। गाँव में हथियार तैयार करेंगे। जवानों को युद्ध कला का ज्ञान करायेंगे। आज ही कार्य आरंभ करेंगे।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

उत्तरम्—महाराणा प्रताप:। (महाराणा प्रताप।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. राणा प्रताप: कस्य राज्यस्य राजा आसीत्? (राणा प्रताप किस राज्य के राजा थे?)

   उत्तरम्—मेवाड़राज्यस्य।

2. 'सुवर्ण पात्रे भोजनं न करिष्यामि इति क: प्रतिज्ञां कृतवान् ?

   ('सोने की थाली में भोजन नहीं करूँगा' यह प्रतिज्ञा किसने की?)

   उत्तरम्—महाराणा प्रताप:।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. मेवाड़ राज्यं केषां जन्मभूमि:? (मेवाड़ राज किनकी जन्मभूमि है?)

   उत्तरम्—मेवाडराज्यं शूराणां जन्मभूमि:। (मेवाड़ राज्य शूरवीरों की जन्मभूमि है।)

4. क: पुरप्रमुखाणां सभाम् आयोजितवान् ? (पुर प्रमुखों की सभा किसने आयोजित की?)

   उत्तरम्—महाराणाप्रताप: पुरप्रमुखानां सभामायोजितवान्। (महाराणा प्रताप ने पुरप्रमुखों की सभा का आयोजन किया।)

5. महाराणा किं विचिन्त्य पुरप्रमुखानां सभाम् आयोजितवान् ?

   (महाराणा ने क्या सोचकर पुर-प्रमुखों की सभा आयोजित की?)

   उत्तरम्—हस्तच्युतानां भागानां प्रतिप्राप्ति कथं भवेत् इति विचिन्त्य प्रताप: पुर प्रमुखानां सभामायोजितवान्।

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

1. 'तत्र स: प्रतिज्ञां कृतवान्' इत्यस्मिन् वाक्ये स: सर्वनाम स्थाने संज्ञापदं किम्?

   (इस वाक्य में 'स:' इस सर्वनाम पद के स्थान पर क्या संज्ञा पद है?)

   उत्तरम्—महाराणा प्रताप:।

2. 'तदा पुरप्रमुखा: अवदन्' अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं चित्वा लिखत। (इस वाक्य में क्रियापद चुनकर लिखिए।)

   उत्तरम्—अवदन्।

3. ''वयं धान्यागारं धान्येन पूरयिष्याम:'' अत्र किं कर्तृपदम्? (यहाँ कर्तापद कौन-सा है?)

   उत्तरम्—वयम्।

4. 'मृदुतल्पे' इत्यनयो: किं विशेषण पदम्? (इन दोनों में विशेषण पद क्या है?)

   उत्तरम्—मृदु।

(17) शाक्यवंशीय: शुद्धोदन: नाम कश्चिद् राजा आसीत्। कपिलवस्तु नाम तस्य राजधानी आसीत्। अस्य एव राज्ञ: सुपुत्र: सिद्धार्थ: आसीत्। स: बाल्यकालाद् एव अति करुणापर: आसीत्। तस्य मन: क्रीडायाम् आखेटे वा नारमत। एवं स्वपुत्रस्य राजभोगं प्रति वैराग्यं दृष्ट्वा शुद्धोदन: चिन्तित: अभवत्। स: सिद्धार्थस्य यौवनारम्भे एव विवाहम् अकरोत्। तस्य

पत्नी यशोधरा सुन्दरी साध्वी च आसीत्। शीघ्रमेव तयोः राहुलः नाम पुत्रः अजायत। एकदा सिद्धार्थः भ्रमणाय नगरात् बहिः अगच्छत्। तत्र सः एकं वृद्धम् एकं रोगार्तम्, एकं मृत पुरुषम् एकं च संन्यासिनम् अपश्यत्। एतान् दृष्ट्वा तस्य मनसि वैराग्यम् उत्पन्नम् अभवत्। ततः सः स्वधर्मपत्नीम् अबोधं सुतं राहुलं राज्यं च त्यक्त्वा गृहात् निरगच्छत्। सः कठिनं तपः अकरोत्। तपसः प्रभावात् सः बुद्धः अभवत्। अहिंसा पालनं तस्य प्रमुखा शिक्षा आसीत्। सः जनानां कल्याणाय बौद्ध-धर्मस्य प्रचारम् अकरोत्।

(शाक्यवंश का शुद्धोदन नाम का कोई राजा था। कपिलवस्तु नाम की उसकी राजधानी थी। इसी राजा का सुपुत्र सिद्धार्थ था। वह बचपन से ही अत्यन्त दयालु था। उसका मन खेल और मृगया में नहीं लगता था। इस प्रकार अपने बेटे को राजभोग के प्रति वैराग्य देखकर शुद्धोदन चिन्तित हुआ। उसने सिद्धार्थ का यौवन के आरम्भ में ही विवाह कर दिया। उसकी पत्नी यशोधरा सुन्दर और साध्वी थी। शीघ्र ही उन दोनों के राहुल नाम का पुत्र हुआ। एक दिन सिद्धार्थ भ्रमण के लिए नगर से बाहर गया। वहाँ उसने एक बुड्ढे, एक रोग से पीड़ित, एक मरे हुए पुरुष को और एक संन्यासी को देखा। इनको देखकर उसके मन में वैराग्य पैदा हो गया। तब वह अपनी पत्नी, अबोध पुत्र राहुल और राज्य को त्याग कर घर से निकल गया। उसने कठोर तप किया। तप के प्रभाव से वह बुद्ध हो गया। अहिंसा-पालन इसकी प्रमुख शिक्षा थी। उसने लोगों के कल्याण के लिए बौद्ध धर्म का प्रचार किया।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)
उत्तरम्—बुद्धस्य वैराग्यम्। (बुद्ध का वैराग्य।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. शाक्यवंशीय नृपस्य किम् नाम आसीत्? (शाक्यवंशीय राजा का क्या नाम था?)
उत्तरम्—शुद्धोदनः।
2. शुद्धोदनस्य किं नाम राजधानी आसीत्? (शुद्धोदन की राजधानी का क्या नाम था?)
उत्तरम्—कपिलवस्तु।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. सिद्धार्थः किमर्थं बौद्ध धर्मस्य प्रचारमकरोत् ? (सिद्धार्थ ने बौद्ध धर्म का प्रचार किसलिए किया?)
उत्तरम्—सः जनानां कल्याणाय बौद्धधर्मस्यप्रचारमकरोत्। (उन्होंने लोक-कल्याण हेतु बौद्ध धर्म का प्रचार किया।)
4. नगरात् बहिः मार्गे सिद्धार्थः किमपश्यत्? (नगर से बाहर मार्ग में सिद्धार्थ ने क्या देखा?)
उत्तरम्—नगरात् बहिः सिद्धार्थः एकं वृद्धं, एकं मृतं, एकं रोगार्तम् एकं संन्यासिन चापश्यत्।
(नगर के बाहर सिद्धार्थ ने एक बुड्ढे, एक मृत, एक बीमार और एक संन्यासी को देखा।)
5. बुद्धस्य प्रमुखा शिक्षा का आसीत्? (बुद्ध की प्रमुख शिक्षा क्या थी?)
उत्तरम्—अहिंसापालने तस्य प्रमुखा शिक्षा आसीत्। (अहिंसा का पालन करना उसकी प्रमुख शिक्षा थी।)

(ग) यथानिर्देशम् उत्तरत— (निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—)

1. 'अरमत्' क्रियायाः कर्त्तापदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।'
('अरमत्' क्रिया का कर्तापद अनुच्छेद से चुनकर लिखिए।)
2. 'वैराग्यम् उत्पन्नम् अभवत्' एतेषु पदेषु किं क्रियापदम्?
('वैराग्यम् उत्पन्नम् अभवत्' इन पदों में क्रियापद कौनसा है?)
3. 'तस्य मनः' अत्र 'तस्य' इति सर्वनाम पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
('तस्य मनः' यहाँ 'तस्य' सर्वनाम पद किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?)
4. 'तस्य प्रमुखा शिक्षा' किमन्न विशेषणपदम्? (यहाँ विशेषण पद क्या है?)

उत्तरम्— 1. मनः 2. अभवत् 3. सिद्धार्थस्य 4. प्रमुखा (शिक्षायाः विशेषणम्)

(18) नगरस्य समीपे एकस्मिन् वने एकः सिंहः निवसति स्म। एकदा तस्य गुहायाम् एकः मूषकः प्राविशत्। सः सिंहस्य शरीरस्योपरि इतस्ततोऽधावत्। कुपितः सिंहः तं मूषकं करे गृह्णाति स्म। भीतः मूषकः सिंहाय मोक्तु न्यवेदयत् अवदत च भो मृगराज! मां मा मारय, कदाचिदहं भवतः सहायतां करिष्यामि। सिंहः अहसत् अवदत् च–"लघुमूषक त्वं मम कथं सहायतां करिष्यसि? अस्तु, इदानीन्तु त्वां मोचयामि।" इत्युक्त्वा सिंहः मूषकम् अमुञ्चत्। एकदा कोऽपि व्याधः जालं प्रसारयति, सिंहः जाले पतितः बहिरागमनाय प्रयत्नं अकरोत्। तस्य गर्जनं श्रुत्वा मूषकः विलात् बहिरागत्य दन्तैः च जालं अकर्तयत् बन्धनमुक्तः सिंहः 'मित्रं तु लघु अपि वरम्' इति ब्रुवन् वने निर्गतः।

(नगर के समीप एक वन में एक शेर रहता था। एक दिन उसकी गुफा में एक चूहा घुस गया। वह सिंह के शरीर पर इधर-उधर दौड़ने लगा। नाराज हुए उस शेर ने चूहे को पकड़ लिया। डरे हुए चूहे ने सिंह से छोड़ने के लिए निवेदन किया और बोला- हे मृगराज! मुझे मत मारो, कभी मैं आपकी सहायता करूँगा। सिंह हँसा और बोला— छोटा-सा चूहा तू मेरी क्या सहायता करेगा? खैर, अब तो तुम्हें छोड़ देता हूँ, ऐसा कहकर सिंह ने चूहे को छोड़ दिया। एक दिन किसी बधिक ने जाल फैला दिया। सिंह जाल में पड़ा हुआ बाहर आने का प्रयत्न करने लगा। उसकी गर्जना को सुनकर चूहे ने बिल से बाहर आकर दाँतों से जाल काट दिया। बन्धन से मुक्त शेर 'मित्र तो छोटा-सा भी श्रेष्ठ होता है' कहता हुआ वन में निकल गया।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)
उत्तरम्—मित्रं तु लघु अपि वरम्। (मित्र तो छोटा-सा भी श्रेष्ठ होता है।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. मूषकः सिंहाय कस्मै निवेदयति? (चूहा सिंह को किसलिए निवेदन करता है?)
उत्तरम्—मोक्तुम्।
2. सिंहः कुत्र बद्धः? (सिंह कहाँ बँध गया?)
उत्तरम्—जाले/पाशे।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. मूषकः सिंहस्योपरि किं कृतवान् ? (चूहे ने शेर के ऊपर क्या किया?)
उत्तरम्—मूषकः सिंहस्योपरि इतस्ततः धावति। (सिंह के ऊपर चूहा इधर-उधर दौड़ता है।)
4. भीतः मूषकः कथं निवेदयति? (डरा हुआ चूहा कैसे निवेदन करता है?)
उत्तरम्—हे मृगराज! मां मा मारय। कदाचिद् अहं भवतः सहायतां करिष्यामि।
(हे मृगराज! मुझे मत मारो। कदाचित् मैं आपकी सहायता करूँगा।)
5. सिंहः मूषकं कथम् उपहसति? (सिंह चूहा पर कैसे उपहास करता है?)
उत्तरम्—लघुमूषकः त्वम्, मम कथं सहायतां करिष्यति? अस्तु इदानीं तु त्वां मोचयामि।
(तुम छोटे से चूहे, मेरी कैसे सहायता करोगे? खैर अब तो तुम्हें मैं छोड़ देता हूँ।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

1. 'दूरे' इति पदस्य विलोमपदं अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।
('दूरे' पद का विलोमपद अनुच्छेद से चुनकर लिखिये।)
2. 'भीतः मूषकः' अत्र 'भीतः' कस्य पदस्य विशेषणम्?
('भीतः मूषकः' यहाँ 'भीतः' किस पद का विशेषण है?)
3. 'सिंह' इति पदस्य समानार्थी पदं अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।
('सिंह' पद का समानार्थी पद अनुच्छेद से चुनकर लिखिये।)
4. 'सः सिंहस्योपरि धावति' अत्र 'सः' इति सर्वनामपद कस्य स्थाने प्रयुक्तम्?
('सः सिंहस्योपरि धावति' यहाँ 'सः' सर्वनाम पद किसके स्थान पर प्रयुक्त हुआ है?)

उत्तरम्— 1. समीपे 2. मूषकस्य 3. मृगराज 4. मूषकः।

(19) कालिदासः मेघदूतं रचितवान्। मेघदूते मानसून विज्ञानस्य अद्भुतं वर्णनम् अस्ति। मानसून-समयः आषाढ़मासात् आरभते। श्याममेघान् दृष्ट्वा सर्वे जनाः प्रसन्ना भवन्ति। मयूराः नृत्यन्ति। मानसून मेघाः सर्वेषा जीवानां कष्टम् अपहरन्ति। मेघानां जलं वनस्पतिभ्यः, पशु-पक्षिभ्यः किं वा सर्वेभ्यः प्राणिभ्यः जीवनं प्रयच्छति। मेघजलैः भूमेः उर्वराशक्तिः वर्धते। क्षेत्राणां सिञ्चनं भवति। गगने यदा कदा इन्द्रधनुः अपि दृश्यते। वायुः शीतलः भवति। शुष्क भूमौ वर्षायाः बिन्दवः पतन्ति। भूमेः सुगन्धितं वाष्पं निर्गच्छति। कदम्ब पुष्पाणि विकसन्ति। तेषु भ्रमरा गुञ्जन्ति। हरिणाः प्रसन्ना सन्तः इतस्ततः धावन्ति। चातका जलबिन्दून गगने एव पिवन्ति। बलाकाः पंक्तिं बद्ध्वा आकाशे उड्डीयन्ते। मेघदूते मेघः विरहि यक्ष सन्देशं नेतुं प्रार्थते। अत्र कालिदासः वायुमार्गस्य ज्ञानवर्धकं वर्णनं करोति।

(कालिदास ने मेघदूत की रचना की। मेघदूत में मानसून विज्ञान का अद्भुत वर्णन है। मानसून का समय आषाढ़ माह से आरम्भ होता है। काले मेघों को देखकर सभी लोग प्रसन्न होते हैं। मोर नाचते हैं। मानसून के मेघ सभी जीवों के कष्ट का हरण करते हैं। मेघों का जल वनस्पतियों, पशु-पक्षियों अधिक तो क्या सभी प्राणियों को जीवन प्रदान करता है। मेघ के जल से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। खेतों की सिंचाई होती है। आकाश में जब कभी इन्द्रधनुष भी दिखाई देता है। वायु शीतल होती है। सूखी धरती पर वर्षा की बूँदें पड़ती हैं । भूमि से सुगन्धित भाप निकलती है। कदम्ब के फूल खिलते हैं। उन पर भौंरे गूँजते हैं। हिरन प्रसन्न हुए इधर-उधर दौड़ते हैं। पपीहे जल बिन्दुओं को आकाश में ही पीते हैं। बगुले कतार बनाकर आकाश में उड़ते हैं। मेघदूत में मेघ से विरही यक्ष सन्देश ले जाने के लिए प्रार्थना करता है। यहाँ कालिदास वायुमार्ग का ज्ञान-वर्धक वर्णन करता है।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

उत्तरम्—कालिदासस्य मेघदूतकाव्यम्। (कालिदास का मेघदूत काव्य।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. भ्रमराः कुत्र गुञ्जन्ति? (भौंरे कहाँ गूँजते हैं?)

   उत्तरम्—कदम्ब पुष्पेषु।

2. मेघ जलैः किं वर्धते? (बादल-जल से क्या बढ़ता है?)

   उत्तरम्—भूमेः उर्वरा शक्तिः।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. मेघदूतं कः रचितवान्? (मेघदूत को किसने रचा?)

   उत्तरम्—मेघदूतं कालिदासः रचितवान्। (मेघदूत की रचना कालिदास ने की।)

4. मानसूनमेघाः केषां कष्टम् अपहरन्ति? (मानसून के बादल किनके कष्ट को हरण करते हैं?)

   उत्तरम्—मानसून मेघाः सर्वेषां जीवानां कष्टम् अपहरन्ति। (मानसून के बादल सब जीवों के कष्ट का हरण करते हैं।)

5. मेघदूते कस्य वर्णनम् अस्ति? (मेघदूत में किसका वर्णन है?)

   उत्तरम्—मेघदूते मानसून विज्ञानस्य अद्भुतं वर्णनम् अस्ति। (मेघदूत में मानसून विज्ञान का अनोखा वर्णन है।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों में उत्तर दीजिए—)

1. 'तेषु भ्रमराः गुञ्जन्ति' अत्र 'तेषु' सर्वनाम पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

   (यहाँ 'तेषु' सर्वनाम पद किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?)

2. 'ज्ञानवर्धकम्' इति कस्य विशेषणम्। ('ज्ञानवर्धक' किसका विशेषण है?)

3. 'धावन्ति' इति क्रियापदस्य कर्त्ता कः? ('धावन्ति' इस क्रिया का कर्ता कौन है?)

4. 'उर्वरा शक्तिः वर्धते' इतयोः किं क्रियापदम्? ('उर्वरा शक्तिः वर्धते' इनमें क्रिया पद कौन-सा है?)

उत्तरम्— 1. कदम्बपुष्पेषु 2. वर्णनम् 3. हरिणाः 4. वर्धते।

(20) सुबुद्धिः दुर्बुद्धिश्च द्वौ धनिकौ आस्ताम्। सुबुद्धेः विशालं भवनम् आसीत्। तस्य अनेके उद्योगाः चलन्ति स्म। अत एव सः सर्वदा प्रसन्नचित्तः ईश्वरं स्मरन् आनन्दे निमग्नः भवति स्थ। दुर्बुद्धि तावत् लोभी आसीत्। अधिकाधिकं धन-संग्रहं कर्त्तुम् इच्छति स्म। सर्वदा असन्तुष्टः, क्रुद्धः दुःखी च भवति स्म। एकदा दुर्बुद्धिः कार्यवशात् सुबुद्धेः गृहम् अगच्छत्। आनन्द-मग्नं तं दृष्ट्वा अपृच्छत्- ''भवतः आनन्दरूप शान्तिः च किं रहस्य?'' सुबुद्धिः उवाच-''मित्र! मम चत्वारः अंगरक्षकाः सन्ति। प्रथमः सत्यं यत् माम् अपराधात् सदा रक्षति। द्वितीयः स्नेहः, अहं सर्वान् कर्मचारिणः पुत्रवत् मन्ये। तृतीयः न्यायः, यः माम् अन्यायात् रक्षति। चतुर्थः त्यागः मां दानाय प्रेरयति। अतः एतेषां सहायतया अहं सर्वदा, आनन्देन जीवामि लोकहितं च करोमि इति।'' दुर्बुद्धि श्रद्धया तस्य चरणयोऽपतत्।

(सुबुद्धि और दुर्बुद्धि नाम के दो धनवान थे। सुबुद्धि का विशाल भवन था। उसके अनेक उद्योग चलते थे। अतः एक वह हमेशा प्रसन्न रहता था और ईश्वर का स्मरण करता हुआ आनन्द में डूबा रहता था। दुर्बुद्धि तो लोभी था। अधिक से अधिक धन संग्रह करना चाहता था। हमेशा असन्तुष्ट, क्रुद्ध और दुखी रहता था। एक दिन दुर्बुद्धि काम से सुबुद्धि के घर गया। उसको आनन्दमग्न देखकर पूछा- आपके आनन्द और शान्ति का क्या रहस्य है? सुबुद्धि ने कहा- ''मित्र! मेरे चार अंगरक्षक हैं- पहला सत्य जो मेरी अपराध से सदैव रक्षा करता है। दूसरा स्नेह, मैं सभी कर्मचारियों से पुत्र की तरह व्यवहार करता हूँ । तीसरा न्याय जो मेरी अन्याय से रक्षा करता है। चौथा त्याग मुझे दान के लिए प्रेरित करता है। अतः इनकी सहायता से मैं सदैव आनन्द में जीता हूँ और लोक-कल्याण करता हूँ।'' दुर्बुद्धि श्रद्धा से उसके चरणों में गिर गया।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

उत्तरम्— सुबुद्धिदेव जयते। (सुबुद्धि की ही विजय होती है।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. सुबुद्धेः कति अङ्गरक्षकाः आसन्? (सुबुद्धि के कितने अंगरक्षक थे?)

   उत्तरम् — चत्वारः।

2. दुर्बुद्धिः किमर्थं सुबुद्धेः गृहम् आगच्छत? (दुर्बुद्धि किसलिए सुबुद्धि के घर आया?)

   उत्तरम् — कार्यवशात्।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. दुर्बुद्धिः सर्वदा कस्य संग्रहं कर्तुम् इच्छति स्म? (दुर्बुद्धि सदा क्या संग्रह करना चाहता था?)

   उत्तरम्— दुर्बुद्धि सर्वदा अधिकाधिकं धन-संग्रहं कर्तुम् इच्छति स्म। (दुर्बुद्धि सदा अधिक धन-संग्रह करना चाहता था।)

4. सुबुद्धिः सर्वान् कर्मचारिणः कथं मन्यते स्म? (सुबुद्धि सभी कर्मचारियों को कैसे मानता था?)

   उत्तरम् — सुबुद्धिः सर्वान् कर्मचारिणः पुत्रवत् मन्यते स्म। (सुबुद्धि सब कर्मचारियों को पुत्रवत् मानता था।)

5. सुबुद्धेः चत्वारः रक्षकाः के सन्ति ? (सुबुद्धि के चार रक्षक कौन हैं?)

   उत्तरम् — सत्यं, स्नेहः, न्यायः त्यागः च एते चत्वारः अंगरक्षकाः। (सत्य, स्नेह, न्याय और त्याग ये चार अंगरक्षक हैं।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

1. 'सर्वान्' इति विशेषणपदस्य विशेष्यपदं लिखत। ('सर्वान्' विशेषण पद का विशेष्यपद लिखिये।)
2. 'चलन्ति स्म' क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्? ('चलन्ति स्म' क्रियापद का कर्तृपद क्या है?)
3. 'एतेषां सहायतया' इत्ययं एतेषां सर्वनाम पदं केभ्यः प्रयुक्तम् ? ('एतेषां सहायतया' यहाँ 'एतेषां' सर्वनाम पद किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?)
4. 'मां दानाय प्रेरयति' इति वाक्यात् क्रियापदं चिनुत। ('मां दानाय प्रेरयति' इस वाक्य में क्रियापद चुनिये।)

उत्तरम्— 1. कर्मचारिणः 2. उद्योगाः 3. कर्मचारिभ्यः 4. प्रेरयति।

(21) एकदा एकः वैदेशिकः प्रथम राष्ट्रपतेः श्री राजेन्द्र प्रसादस्य गृहं प्राप्तवान्। राष्ट्रपतेः परिचारकः तम् आतिथ्यगृहे प्रतीक्षितुम् अकथयत् तम् असूचयत् च यद् राष्ट्रपति महोदयः सम्प्रति पूजां कुर्वन्ति। सः अतिथिः ज्ञातुम् ऐच्छत् यद् राष्ट्रपतिः कथं करोति पूजाम्? सङ्कोचं कुर्वन् अपि सः अन्तः पूजागृह प्रविष्टः राष्ट्रपतेः समक्षं विद्यमानं मृत् पिण्डम् अवलोक्य सः अवन्दत श्रद्धया च तत्र उपविशत्। 'पूजां परिसमाप्य राष्ट्रपति महोदयः पूजागृहे स्थिते तम् दृष्ट्वा प्रसन्नः अभवत्। ससम्मानं तय् अन्तः अनयत्। आगन्तुकस्य ललाटे विद्यमानं भावं दृष्ट्वा श्री राजेन्द्र महोदयः तस्य कौतूहल विज्ञाय तस्मै सम्बोधयत् एतद् मृत्पिण्डं भारतस्य भूम्याः प्रतीकम् अस्ति। एतेन मृत्पिण्डेन एव भारतीया महती अन्नात्मिकां सम्पदां प्राप्नुवन्नि। अत एव वयं मृत्तिकायाः कणेषु ईश्वरस्य दर्शनपि कुर्मः। अस्माकं विचारे तु मानवेषु पशु-पक्षिषु, पाषाणेषु, वृक्षादिषु किंवा अचेतनेषु अपि ईश्वरस्य सत्ता अस्ति।

(एक दिन एक विदेशी प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद के घर पर पहुँच गया। राष्ट्रपति के सेवक ने उसको अतिथि गृह में प्रतीक्षा करने के लिए कह दिया और उसे सूचित कर दिया कि राष्ट्रपति महोदय अभी पूजा कर रहे हैं। वह अतिथि यह जानना चाहता था कि राष्ट्रपति पूजा कैसे करते हैं? संकोच करते हुए भी वह पूजागृह में प्रविष्ट हो गया। राष्ट्रपति के समक्ष विद्यमान मिट्टी के ढेले को देखकर उसने वन्दना की और श्रद्धापूर्वक बैठ गया। पूजा को समाप्त करके राष्ट्रपति माहेदय ने पूजागृह में बैठे उसको देखकर प्रसन्न हुए। सम्मानपूर्वक उसे अन्दर ले गये। आगन्तुक के ललाट पर विद्यमान भाव को देखकर श्री राजेन्द्र महोदय ने उसके कुतूहल को जानकर उसे संबोधित किया कि यह मिट्टी का ढेल भारत की भूमि का प्रतीक है। इस मिट्टी के ढेले से ही भारतीय बहुत-सी अन्नात्म सम्पदा प्राप्त करते हैं। अतएव हम मिट्टी के कणों में भी ईश्वर के दर्शन करते हैं। हमारे विचार से तो मानव, पशु, पक्षी, पत्थर, वृक्षादि और तो क्या अचेतनों में भी ईश्वर की सत्ता है।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

उत्तरम्— ईश्वरः सर्वव्यापकः। (ईश्वर सर्वव्यापी है।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. कः श्री राजेन्द्र प्रसादस्य गृहं प्राप्तवान् ? (श्री राजेन्द्र प्रसाद के घर कौन पहुँच गया?)

   उत्तरम्— वैदेशिकः।

2. भारत भूम्याः प्रतीक किम् अस्ति? (भारतभूमि का प्रतीक क्या है?)

   उत्तरम्— मृत्पिण्डम्।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. राष्ट्रपति महोदयः आगन्तुकं कुत्र दृष्ट्वा प्रसन्नः?

   (राष्ट्रपति महोदय आगन्तुक को कहाँ देखकर प्रसन्न हुए?)

   उत्तरम्— तं पूजागृहे स्थितं दृष्ट्वा राष्ट्रपति महोदयः प्रसन्नः अभवत्।

   (उसे पूजागृह में बैठा देखकर राष्ट्रपति महोदय प्रसन्न हो गये।)

4. राजेन्द्र प्रसाद महोदयः आगन्तुकस्य कौतूहलं विज्ञाय तस्मै किं सम्बोधयत्?

   (राजेन्द्र प्रसाद जी ने आगन्तुक के कुतूहल को जानकर उसको क्या संबोधित किया?)

   उत्तरम्— एतत्मृतपिण्डं भारतस्य भूम्याः प्रतीकम् अस्ति, एतेन भारतीया अन्न सम्पदां प्राप्नुवन्ति अतः वयं मृत्कणेषु ईश्वरस्य दर्शनं कुर्मः। (यह मिट्टी का पिण्ड भारतभूमि का प्रतीक है। इससे भारतीय अन्न सम्पदा को प्राप्त करते हैं। अतः हम मिट्टी के कणों में ईश्वर के दर्शन करते हैं।)

5. अतिथि महोदयः किं ज्ञातुम् ऐच्छत्? (अतिथि महोदय क्या जानना चाहते थे?)

   उत्तरम्— अतिथि महोदयः ज्ञातुमैच्छत् यत् राष्ट्रपति महोदयः कथं करोति पूजाम्?

   (अतिथि महोदय जानना चाहते थे कि राष्ट्रपति महोदय कैसे पूजा करते हैं?)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

1. 'प्राप्नुवन्ति' अस्याः क्रियायाः कर्तृपदं किम्? ('प्राप्नुवन्ति' इस क्रिया का कर्त्ता कौन है?)
2. 'मृत्पिण्डं दृष्ट्वा सोऽवन्दत' अत्र 'सः' इति सर्वनाम पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   ('मृत्पिण्डं दृष्ट्वा सोऽवन्दत' यहाँ 'सः' सर्वनाम पद किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?)
3. 'भावम्' इति विशेष्य किं विशेषण पदम्? ('भावम्' विशेष्य का विशेषण पद क्या है?)
4. 'तं दृष्ट्वा प्रसन्नः अभवत्' वाक्यात् क्रियापदं चिनुत।
   ('तं दृष्ट्वा प्रसन्नः अभवत्' वाक्य से क्रियापद चुनिये।)

उत्तरम्— 1. भारतीयाः 2. वैदेशिकः 3. विद्यमानम् 4. अभवत्।

(22) षट् कारणानि श्रियं विनाशयन्ति। प्रथमं कारणम् अस्ति असत्यम्। यः नरः असत्यं वदति तस्य कोऽपि जनः विश्वासं न करोति। निष्ठुरता अस्ति द्वितीयं कारणम्। उक्तं च - सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।' तृतीयं कारणं अस्ति कृतघ्नता। जीवने अनेके जनाः अस्मान् उपकुर्वन्ति। प्रायः जनाः उपकारिण विस्मरन्ति, प्रत्युपकारं न कुर्वन्ति। एतादृशः स्वभावः कृतघ्नता इति उच्यते। आलस्यम् अपरः महान् दोषः, 'आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।' अहंकारः मनुष्या मतिं नाशयति। अहङ्कारी मनुष्यः सर्वदा आत्मप्रसंशाम् एव करोति। न कदापि कस्यचित् उपकारं करोति व्यसनानि अपि श्रियं हरन्ति। ये मद्यपानं कुर्वन्ति तेषाम् आत्मबलं, बुद्धिबलं, शारीरिक बलं च नश्यति। अतः बुद्धिमान् एतान् दोषान् सर्वथा त्यजेत्।

(छः कारण लक्ष्मी के विनाशक होते हैं। पहला कारण है असत्य। जो मनुष्य झूठ बोलता है उसका कोई विश्वास नहीं करता। निष्ठुरता दूसरा कारण है। कहा भी गया है— सत्य बोलना चाहिए (परन्तु) प्रिय या मधुर सत्य ही बोलना चाहिए। अप्रिय (कटु) सत्य भी नहीं बोलना चाहिए। तीसरा कारण है— कृतघ्नता। जीवन में अनेक लोग हमारा उपकार करते हैं। प्रायः लोग उपकारी को भूल जाते हैं, उसके बदले में उसका उपकार नहीं करते हैं। इस प्रकार का स्वभाव कृतघ्नता कहलाता है। आलस्य एक अन्य महान् दोष है। आलस्य मनुष्यों का शरीर में ही स्थित महान् शत्रु है। अहंकार (घमंड) मनुष्य की मति को नष्ट करता है। अहंकारी मनुष्य हमेशा आत्मप्रशंसा ही करता है। कभी किसी का उपकार नहीं करता है। दुर्व्यसन भी लक्ष्मी का हरण करते हैं, जो लोग मद्यपान करते हैं उनका आत्म-बल, बुद्धिबल और शारीरिक बल नष्ट हो जाता है। अतः बुद्धिमान को ये दोष हमेशा त्याग देने चाहिए।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)
   उत्तरम्— षड्दोषान् वर्जयेत्। (छः दोषों को त्यागना चाहिए।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

● एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. कति कारणानि श्रियं विनाशयन्ति ? (कितने कारण लक्ष्मी का विनाश करते हैं?)
   उत्तरम् — षड्।
2. लक्ष्मी विनाशस्य किं प्रथम कारणम्? (लक्ष्मी विनाश का पहला कारण क्या है?)
   उत्तरम्— असत्यम्।

● पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. असत्य वादनेन का हानिः? (असत्य बोलने से क्या हानि है?)
   उत्तरम्— यः असत्यं वदति तस्य कोऽपि विश्वास न करोति।
   (जो झूठ बोलता है उस पर कोई विश्वास नहीं करता है।)
4. कीदृशाः जनाः कृतघ्नाः भवन्ति? ((कैसे मनुष्य कृतघ्न होते हैं?)
   उत्तरम्— यो जनाः उपकारिणं विस्मरन्ति प्रत्युपकारं न कुर्वन्ति ते कृतघ्नाः भवन्ति।
   (जो लोग उपकारी को भूल जाते हैं तथा बदले में उपकार नहीं करते, वे कृतघ्न होते हैं।)

5. मद्यपानं किं किं हरति? (मद्यपान क्या-क्या हरण करता है?)

उत्तरम्– मद्यपानं मानवस्य आत्मबलं, बुद्धिबलं शारीरिकं बलं च हरति।

(मद्यपान मानव के आत्मबल, बुद्धिबल और शारीरिक बल को हर लेता है।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत– (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–)

1. 'प्रथमं कारणम्' इत्यनयोः किं विशेषणपदम्? ('प्रथमं कारणम्' इन दोनों में विशेषण पद क्या है?)
2. 'तस्य कोऽपि जनः विश्वासं न करोति' अत्र 'तस्य' सर्वनामपदं कस्य स्थाने प्रयुक्तम्?
   (..........यहाँ 'तस्य' सर्वनाम पद किस स्थान पर प्रयुक्त हुआ है?)
3. '.........प्रत्युपकारं न कुर्वन्ति' अत्र 'कुर्वन्ति' क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?
   ('..........प्रत्युपकारं न कुर्वन्ति' यहाँ कुर्वन्ति क्रिया का कर्त्ता कौन है?)
4. 'अहंकारः मनुष्यस्य मतिः' नाशयति' वाक्ये क्रियापदं चिनुत।
   ('अहंकार.........नाशयति' वाक्य में क्रियापद चुनिये।)

उत्तरम्– 1. प्रथमम् 2. नरस्य 3. जनाः 4. नाशयति।

(23) अस्माकं देशस्य उत्तरस्यां दिशि पर्वतराजः हिमालयः अस्ति। अस्य पर्वतस्य शृंखला विस्तृता वर्तते। सः 'पर्वतराज' इति कथ्यते। संसारस्य उच्चतमः पर्वतः अस्ति । अयं सर्वदा हिमाच्छादितः भवति। सः भारतदेशस्य मुकुटमिव रक्षकः च अस्ति। अनेकाः नद्यः इतः एव निःसरन्ति। नदीषु पवित्रतमा गङ्गा अपि हिमालयात् एव प्रभवति। अनेकानि तीर्थस्थलानि हिमालय क्षेत्रे वर्तन्ते। वस्तुतः हिमालयः तपोभूमिः अस्ति। पुरा अनेके जनाः तत्र तपः कृतवन्तः। अत्रत्यं वातावरणं मनोहरं शान्तं चित्ताकर्षकं च भवति। हिमालयस्य विविधाः वनस्पतयः ओषधिनिर्माणे उपकारकाः सन्ति। तत्र दुर्लभ रत्नानि मिलन्ति बहुमूल्यं काष्ठं च तत्र प्राप्यते। हिमालय क्षेत्रे बहूनि मन्दिराणि सन्ति। प्रतिवर्षं भक्ताः श्रद्धालयः, पर्यटनशीलाः जनाश्च मन्दिरेषु अर्चनां कुर्वन्ति, स्वास्थ्यलाभमपि प्राप्नुवन्ति। अस्य हिमालयस्य महत्वम् आध्यात्मिक-दृष्ट्या, पर्यावरण-दृष्ट्या भारतस्य रक्षा-दृष्ट्या च अपि वर्तते। अतः अयं पर्वतराजः हिमालयः अस्माकं गौरवम् अस्ति।

(हमारे देश की उत्तर दिशा में पर्वतराज हिमालय है। इस पर्वत की शृंखला विस्तृत है। वह 'पर्वतराज' कहलाता है। संसार का सबसे ऊँचा पर्वत है। यह हमेशा बर्फ से ढका रहता है। वह भारतदेश के मुकुट की तरह और रक्षक है। अनेक नदियाँ इसी से निकलती हैं। नदियों में पावनतम गंगा भी हिमालय से ही निकलती है। हिमालय के क्षेत्र में अनेक तीर्थस्थल हैं। वास्तव में हिमालय तपोभूमि है। पहले अनेक लोग यहाँ तप किया करते थे। यहाँ का वातावरण मनोहर, शान्त और चित्ताकर्षक है। हिमालय की विविध वनस्पतियाँ ओषधि बनाने में उपयोगी हैं। वहाँ दुर्लभ रत्न भी मिलते हैं। बहुमूल्य लकड़ी भी वहाँ प्राप्त होती है। हिमालय के क्षेत्र में बहुत से मन्दिर हैं। प्रतिवर्ष भक्त, श्रद्धालु और पर्यटनशील लोग मन्दिरों में अर्चना करते हैं, स्वास्थ्य लाभ भी प्राप्त करते हैं। इस हिमालय का महत्व आध्यात्मिक, पर्यावरण और भारत की रक्षा की दृष्टि से भी है। अतः यह पर्वतराज हिमालय हमारा गौरव है।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

उत्तरम्– पर्वतराज हिमालयः । (पर्वतराज हिमालय)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत– (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–)

● एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)–

1. अस्माकं देशस्य उत्तरस्यां दिशि किं नाम पर्वतः अस्ति ?
   (हमारे देश की उत्तर दिशा में किस नाम का पर्वत है?)
   उत्तरम्– हिमालयः।
2. हिमालय पर्वत शृंखला कीदृशी अस्ति? (हिमालय पर्वत शृंखला कैसी है?)
   उत्तरम्– विस्तृता।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. काभि दृष्टिभिः हिमालयस्य महत्वम् अस्ति ? (किन दृष्टियों से हिमालय का महत्व है?)
   उत्तरम्— आध्यात्मिक-पर्यावरण-रक्षा दृष्टिभिः हिमालयः महत्वपूर्णः अस्ति।
   (अध्यात्म, पर्यावरण-रक्षा की दृष्टि से हिमालय महत्वपूर्ण है।)
4. जनाः मन्दिरेषु किं कुर्वन्ति ? (लोग मन्दिरों में क्या करते हैं?)
   उत्तरम्— मन्दिरेषु अर्चनां कुर्वन्ति स्वास्थ्य लाभं च प्राप्नुवन्ति।
   (मंदिरों में पूजा करते हैं और स्वास्थ्य- लाभ प्राप्त करते हैं।)
5. हिमालयस्य वातावरणं कीदृश अस्ति? (हिमालय का वातावरण कैसा है?)
   उत्तरम्— हिमालयस्य वातावरणं मनोहरं, शान्तं, चित्ताकर्षकं च अस्ति।
   (हिमालय का वातावरण मनोहर, शांत और चित्ताकर्षक है।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

1. 'अस्य पर्वतस्य' इत्यत्र 'अस्य' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   ('अस्य पर्वतस्य' यहाँ 'अस्य' सर्वनाम पद किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?)
2. 'शृंखला विस्तृता वर्तते' अत्र किं विशेषणपदम्? (यहाँ विशेषण पद क्या है?)
3. 'अधुना' इति पदस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।
   ('अधुना' पद का विलोम पद गद्यांश से चुनकर लिखिए।)
4. 'उद्भवति' पदस्य पर्यायवाचि पदं अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।
   ('उद्भवति' पदस्य पर्यायवाची पद अनुच्छेद से चुनकर लिखिए।)

उत्तरम्— 1. हिमालयस्य 2. विस्तृता 3. पुरा 4. प्रभवति।

(24) लालबहादुर शास्त्रि-महोदयस्य नाम को न जानाति? भारतस्य द्वितीयः प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री उत्तरप्रदेशस्य वाराणसी जनपदे जन्म प्राप्तवान्। 1904 तमे ईसवीये वर्षे अक्टूबर मासस्य 2 दिनांक तस्य जन्म अभवत्। तस्य जनकस्य नाम शारदा प्रसादः मातुश्च नाम रामदुलारी आसीत्। बाल्यावस्थायामेव तस्य पितुः देहावसान जातम्। सः वाराणसीस्थे हरिश्चन्द्र विद्यालये, शिक्षां प्राप्तवान्। उच्च शिक्षां तु सः काशी विद्यापीठे गृहीतवान्। महात्मागान्धी महोदयस्य नेतृत्वे सञ्चालिते स्वतन्त्रता आन्दोलने सोऽपि प्रविष्टवान्। वर्षद्वयात्मकं कारावासम् अपि प्राप्तवान्। गुणैः जनतायाः श्रद्धाभाजनम् अभूत्। स्वतन्त्रभारते विविधानि पदानि अलङ्कुर्वन् असौ भारतस्य द्वितीयः प्रधानमन्त्री अभवत्। 1966 तमे ईसवीये वर्षे जनवरीमासस्य। 11 तमे दिनाङ्के तस्य देहावसानं जातम्।

(लालबहादुर शास्त्री महोदय का नाम कौन नहीं जानता। भारत के दूसरे प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री ने उत्तरप्रदेश के वाराणसी जनपद में जन्म लिया। उनका जन्म 2 अक्टूबर सन् 1904 ईसवी वर्ष में हुआ। उनके पिताजी का नाम शारदाप्रसाद और माँ का नाम रामदुलारी था। बचपन में ही उनके पिताजी का देहावसान हो गया। उन्होंने वाराणसी स्थित हरिश्चन्द्र विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की। उच्च शिक्षा उन्होंने काशी विद्यापीठ में ग्रहण की। महात्मा गांधी महोदय के नेतृत्व में संचालित स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी वे प्रविष्ट हुए। दो वर्ष का कारावास भी प्राप्त किया। गुणों से जनता के श्रद्धा-पात्र हो गये। स्वतन्त्र भारत में विविध पदों को अलंकृत करते हुए भारत के दूसरे प्रधानमन्त्री हुए। 11 जनवरी सन् 1966 ईस्वी वर्ष में उनका देहावसान हो गया।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)
   उत्तरम्— लालबहादुर शास्त्री महाभागः (लालबहादुर शास्त्री महोदय।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत। (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. भारतस्य द्वितीयः प्रधानमंत्री कः आसीत? (भारत का द्वितीय प्रधानमंत्री कौन था?)
   उत्तरम्— लालबहादुर शास्त्री।

2. शास्त्रिमहाभागः कस्मिन् जनपदे अजायता? (शास्त्री जी किस जनपद में पैदा हुए?)

   उत्तरम्– वाराणसी जनपदे।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत– (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए–)

3. लालबहादुर शास्त्रि महाभागः कदा दिवंगतः? (लाल बहादुर शास्त्री कब दिवंगत हुए?)

   उत्तरम्– 1966 तमे ईसवीये वर्षे जनवरी मासस्य एकादश दिवसे दिवंगतः। (जनवरी 1966 में उनका देहान्त हो गया।)

4. शास्त्रि महाभागः कियत् कालं कारावासे अतिष्ठत्? (शास्त्री जी कितने दिन कारावास में रहे?)

   उत्तरम्– सः वर्षद्वयात्मकं कारावासम् प्राप्तवान्। (उन्होंने दो वर्ष का कारागार भी प्राप्त किया।)

5. शास्त्रि महोदयस्य उच्चशिक्षा कुत्र अभवत्? (शास्त्री जी की उच्च शिक्षा कहाँ हुई?)

   उत्तरम्– शास्त्रि महाभागस्य उच्चशिक्षा काशी विद्यापीठे अभवत्। (शास्त्री महोदय की उच्च शिक्षा काशी विद्यापीठ में हुई।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नान् उत्तरत– (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–)

1. 'तस्य जन्म अभवत् 'तस्य' पदस्य स्थाने संज्ञापदं लिखत।

   ('तस्यं जन्म अभवत्' 'तस्य' पद के स्थान पर संज्ञा शब्द लिखिये।)

2. 'अलभत्' इति क्रियापदस्य पर्यायवाचिपदं अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

   ('अलभत्' क्रियापद का पर्यायवाची पद अनुच्छेद से चुनकर लिखिये।)

3. 'उच्चशिक्षां' इत्यनयोः किं विशेष्यपदम्? ('उच्चशिक्षा' इन दोनों शब्दों में विशेष्य कौन-सा है?)

4. 'अभूत्' इति क्रियापदस्य कर्त्ता अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

   ('अभवत्' क्रियापद का कर्त्ता इस अनुच्छेद से चुनकर लिखिए।)

उत्तरम्– 1. लालबहादुर शास्त्रिणः 2. प्राप्तवान् 3. शिक्षां 4. लालबहादुर शास्त्री।

(25) गौः भारतीय-संस्कृतेः प्रधानः पशुः अस्ति। वेदेषु-शास्त्रेषु इतिहासे लोकमान्यतायां च सर्वत्र अस्याः विषये श्रद्धापूर्णं वर्णनं प्राप्यते। भारते गौः माता इव पूज्या भवति। यथा माता स्व-दुग्धेन शिशून् पालयति तथैव गौ अपि दुग्धधृतादिदानेन अस्माकं शरीरं बुद्धिं च पोषयति। भारतवासिनः जनाः आदरेण श्रद्धया च गोपालनं कुर्वन्ति। गौः अस्माकं कृते बहु उपयोगिनी अस्ति। सा अस्माकं कृते दुग्धं ददाति। तेन दुग्धेन दधि तक्रं मिष्ठान्नं घृतमादि निर्माय तस्य सेवनेन च वयं स्वस्थाः पुष्टाः भवामः। गावः अस्माकं क्षेत्राणि कर्षन्तिं। येन कृषिकार्यं प्रचलति। तस्य गोमयस्य इन्धनरूपेण प्रयोगः भवति। गोमयस्य, गोमूत्रस्य च उपयोगः औषधिनिर्माणे, सुगन्धवर्तिका निर्माणे, कीटनाशक द्रव्य निर्माणे इत्यादिषु कर्मसु भवति। एवं प्रकारेण गावः मानवानां सर्वदैव उपकारं कुर्वन्ति।

(गाय भारतीय संस्कृति का प्रधान पशु है। वेदों, शास्त्रों, इतिहास और लोकमान्यता में सब जगह इसके विषय में श्रद्धापूर्ण वर्णन प्राप्त होता है। भारत में गाय माता की तरह पूजी जाती है। जैसे माता अपने दूध से शिशुओं को पालती है उसी प्रकार गाय भी दूध-घी आदि देकर हमारे शरीर और बुद्धि का पोषण करती है। भारतवासी लोग आदर और श्रद्धा से गोपालन करते हैं। गाय हमारे लिए बहुत उपयोगी होती है। वह हमारे लिये दूध देती है। उस दूध से दही, छाछ, मिठाई, घी आदि बनाकर उसके सेवन से हम स्वस्थ और पुष्ट होते हैं। गायें (बैल) हमारे खेतों को जोतते हैं जिससे कृषिकार्य चलता है। उसके गोबर का ईंधन के रूप में प्रयोग होता है। गाय के गोबर और मूत्र का उपयोग औषधि निर्माण, अगरबत्ती निर्माण, कीटनाशक निर्माण आदि कार्यों में होता है। इस प्रकार से गायें मानवों का सदैव उपकार करती हैं।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

   उत्तरम्– गावः महत्त्वम्। (गाय का महत्व।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. गौः अस्माकं कृते किं ददाति? (गाय हमारे लिए क्या देती है?)
   उत्तरम्— दुग्धम्।
2. गावः सर्वत्र कीदृशं वर्णनम् प्राप्यते? (गाय का सब जगह कैसा वर्णन मिलता है?)
   उत्तरम्— श्रद्धापूर्णम्।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. गोमयस्य गोमूत्रस्य च प्रयोगः कुत्र भवति? (गोबर और गोमूत्र का प्रयोग कहाँ होता है?)
   उत्तरम्— औषधि निर्माण, सुगन्धवर्तिका निर्माणे, कीटनाशक द्रव्य निर्माणे इत्यादिषु गोमयस्य गोमूत्रस्य च प्रयोगः भवति। (औषधि-निर्माण, अगरबत्ती निर्माण, कीटनाशक द्रव्य निर्माण इत्यादि में गोमय और गौमूत्र का प्रयोग होता है।)
4. धेनोः गोमस्य केन रूपेण प्रयोगः भवति? (गाय के गोबर का किस रूप में प्रयोग होता है?)
   उत्तरम्— धेनो गोमयम् इन्धनरूपेण प्रयुज्यते। (गाय के गोबर का ईंधन के रूप में प्रयोग होता है।)
5. गौः अस्मान् कथं पोषयति? (गाय हमारा पोषण कैसे करती है?)
   उत्तरम्— यथा माता शिशून स्वदुग्धेन पालयति तथैव गौः दुग्धघृतादि दानेन अस्माकं शरीरं बुद्धिं च पोषयति। (जैसे माता अपने दूध से बालक को पालती है, उसी प्रकार गाय दूध, घी देकर हमारे शरीर व बुद्धि का पोषण करती है।)

(ग) यथानिर्देशम् उत्तरत— (निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—)

1. 'धेनुः' इति पदस्य स्थाने गद्यांशे किं पदम् प्रयुक्तम्?
   ('धेनुः' पद के स्थान पर गद्यांश में किस पद का प्रयोग किया गया है?)
2. 'सा अस्माकं कृते दुग्धं ददाति' अत्र 'सा' इति सर्वनामपदम् कस्य स्थाने प्रयुक्तम्?
   ('सा.........ददाति' वाक्य में 'सा' सर्वनाम पद किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?)
3. ''घृतस्य सेवनेन कः लाभः भवति?'' अत्र भवति क्रियापदस्य कर्त्ता कः।
4. अपकारम् इति पदस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।
   (अपकार का विलोम पद गद्यांश से चुनकर लिखिये।)

उत्तरम्— 1. गौः 2. गौः 3. लाभः 4. उपकारः।

(26) अद्य औद्योगिक विकासात् नगराणां विकासात् च जायते पर्यावरणं प्रदूषितम्। अतः अद्य नागरिकाणां कर्त्तव्यमस्ति यद् वयं पर्यावरण संरक्षणार्थं प्रयत्नं कुर्मः तत्कृते वयं स्वच्छतां च धारयामः। महात्मागांधि महोदयस्यापि स्वच्छतोपरि विशेषः आग्रहे आसीत्। साम्प्रतमपि सर्वकारेण 'स्वच्छ भारताभियानम्' प्रचालितम्। तस्योद्देश्यमपि पर्यावरणस्य संरक्षेण अस्ति। एवमेव नदीतडागवापीनां जलस्य स्वच्छतायाः प्रेरणा वयं 'नमामि गङ्गे' इति अभियानेन ग्रहीतुं शक्नुमः। वयम् अस्मिन् अभियाने सहभागितां च कृत्वा भारतस्य नवस्वरूपं प्रकटीकर्तुं शक्नुमः। ऐतस्य कृते वयं अवकरस्य समुचितं निस्तारणं कुर्मः। जनान् शौचालय-निर्माणाय प्रेरणाय। जलाशयेषु स्वच्छतामाचरामः सार्वजनिक स्थानेषु प्रदूषणं न कुर्मः। प्रदूषणकराणां पदार्थानां प्रयोगं न कुर्मः। जनजागरणे सहायतां कुर्मः।

(आज औद्योगिक और नगरों के विकास से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। अतः आज नागरिकों का कर्त्तव्य है कि हम पर्यावरण-संरक्षण का प्रयत्न करें। उसके लिए हम सफाई रखें। महात्मा गांधी का भी स्वच्छता के ऊपर बहुत आग्रह था। अब भी सरकार द्वारा 'स्वच्छ भारत' अभियान चलाया गया है। उसका उद्देश्य भी पर्यावरण का संरक्षण ही है। इसी प्रकार नदी, तालाव, बावड़ियों के जल की स्वच्छता की प्रेरणा हम 'नमामि गंगे' अभियान से ले सकते हैं और हम इस अभियान में

सहभागिता करके भारत का नया स्वरूप प्रकट कर सकते हैं। इसके लिए हम कूड़े का उचित निस्तारण करें, लोगों को शौचालय निर्माण के लिए प्रेरित करें। जलाशयों में स्वच्छता रखें, सार्वजनिक स्थानों पर प्रदूषण न करें। प्रदूषण करने वाले पदार्थों का प्रयोग न करें। जनजागरण में सहायता करें।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

उत्तरम्— पर्यावरण संरक्षणम्। (पर्यावरण संरक्षण)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. स्वच्छभारत अभियानस्य किमुद्देश्यम्? (स्वच्छ भारत अभियान का क्या उद्देश्य है?)

   उत्तरम्— पर्यावरणसंरक्षणम्।

2. स्वच्छतायाः प्रेरणा केन ग्रहीतुं शक्यते? (स्वच्छता की प्रेरणा किससे ली जा सकती है?)

   उत्तरम्— 'नमामि गङ्गे' इति अभियानात्।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. पर्यावरण प्रदूषणं कस्मात् जायते? (पर्यावरण प्रदूषण किससे पैदा होता है?)

   उत्तरम्— औद्योगिक विकासात् नगराणां च विकासात् पर्यावरण प्रदूषणं जायते।
   (औद्योगिक विकास से और नगरों के विकास से पर्यावरण प्रदूषण उत्पन्न होता है।)

4. नागरिकाणां किं कर्त्तव्यम् अस्ति? (नागरिकों का क्या कर्त्तव्य है?)

   उत्तरम्— नागरिकाणां कर्त्तव्यम् अस्ति पर्यावरण संरक्षणार्थं प्रयत्न कुर्वन्तु।
   (पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रयत्न करना नागरिकों का कर्तव्य है।)

5. महात्मागान्धिनः अपि कस्योपरि विशेष आग्रहः आसीत्? (महात्मा गाँधी का किस पर विशेष आग्रह था?)

   उत्तरम्— महात्मागान्धिन स्वच्छतायाः उपरि विशेष आग्रह आसीत्।
   (महात्मा गांधी का स्वच्छता के ऊपर विशेष आग्रह था।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

1. 'अधुना' इति पदस्य पर्यायवाचि पदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।
   ('अधुना' पद का पर्यायवाची पद गद्यांश से चुनकर लिखिए।)
2. 'स्वच्छभारतम्' इत्यनयोः विशेषणं पदं किम्? ('स्वच्छभारतम्' इनमें से विशेषण पद क्या है?)
3. 'प्रयोगं न कुर्मः' अत्र 'कुर्मः' क्रियापदस्य कर्तृपद अनुच्छेदात् चिनुत।
   ('प्रयोगं न कुर्मः' यहाँ 'कुर्मः' क्रियापद का कर्तापद अनुच्छेद से चुनें।)
4. 'तस्योद्देश्यमपि' अत्र 'तस्य' इति सर्वनामपदं कस्य स्थाने प्रयुक्तम्?

उत्तरम्— 1. साम्प्रतम् 2. स्वच्छ 3. वयम् 4. स्वच्छभारत अभियानस्य।

(27) हृद्यया मनोरमया च रीत्या राज्यधर्मस्य लोकव्यवहारस्य च शिक्षार्थमेव पञ्चतन्त्रं प्रवृत्तम्। विष्णु शर्मणा संस्कृत भाषया लिखिताः पञ्चतन्त्र कथाः जगतः सर्वाधिक भाषासु अनूदिताः सन्ति। विष्णुशर्मा अमरशक्ति नामकस्य नृपस्य त्रीन् पुत्रान् षड्भिः मासैः राजनीतिं शिक्षायितुम् ग्रन्थमिमं रचितवान्। षष्ठ शताब्द्यां लिखितोऽयं ग्रन्थः अतीव लोकप्रियः वर्तते। अस्य कथाः नीतिं शिक्षयन्त्यः मनोरञ्जनमपि कुर्वन्ति पाठकानाम्। पञ्चतन्त्राणां नामानि मित्रभेदः मित्रसम्प्राप्तिः, काकोलूकीयः लब्धप्रणाशः, अपरिक्षित कारकञ्च सन्ति। पञ्चतन्त्रस्य कथासु पशुपक्ष्यादीनि एव पात्राणि सन्ति तथापि तेषां माध्यमेन सर्वसाधरणोपयोगिनः व्यवहार-ज्ञानस्य मनोहररीत्या अत्र वर्णनं कृतम्।

(हार्दिक और मन को अच्छी लगने वाली रीति से राजधर्म और लोक-व्यवहार की शिक्षा के लिए पंचतन्त्र प्रवृत्त हुआ।

विष्णु शर्मा द्वारा संस्कृत भाषा में लिखे गये पंचतन्त्र की कथायें संसार में सबसे अधिक भाषाओं में अनूदित हैं। विष्णु शर्मा ने अमरशक्ति नाम के राजा के तीन पुत्रों को छः महीने में राजनीति को सिखाने के लिए इस ग्रन्थ को रचा। छटी शताब्दी में लिखा गया यह ग्रन्थ अत्यन्त लोकप्रिय है। इसकी कथाएँ पाठकों की नीति सिखाती हुई मनोरञ्जन भी करती हैं। पंचतन्त्रों के नाम हैं- मित्र भेद, मित्र सम्प्राप्ति, काकोलूकीय, लब्ध प्रणाश तथा अपरीक्षित कारक। पंचतन्त्र की कथाओं में पशु-पक्षी आदि ही पात्र हैं। फिर भी उनके माध्यम से सर्व-साधारण के उपयोगी व्यावहारिक ज्ञान का मनोहर रीति से यहाँ वर्णन किया गया है।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

उत्तरम्— पञ्चतन्त्रम्। (पञ्चतन्त्र।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. 'पञ्चतन्त्रम्' इति ग्रन्थं केन रचितम्? (पंचतन्त्र ग्रंथ की रचना किसने की?)

   उत्तरम्— विष्णुशर्मांणा।

2. विष्णुशर्मा कस्य नृपस्य पुत्रान् पाठितवान्? (विष्णु शर्मा ने किस राजा के पुत्रों को पढ़ाया?)

   उत्तरम्— अमरशक्तेः।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. पञ्चतन्त्राणाम् नामानि लिखत। (पाँच तन्त्रों के नाम लिखिए।)

   उत्तरम्— मित्रभेदः, मित्र सम्प्राप्तिः, काकोलूकीयः, लब्धप्रणाशः अपरीक्षित कारकञ्चेति पञ्चतन्त्राणां नामानि। (मित्र सम्प्राप्ति, काकोलूकीयः, लब्ध प्रणाशः और अपरीक्षित कारक ये पाँच तंत्रों के नाम हैं।)

4. पञ्चतन्त्राणाम् ख्यातिः किं प्रमाणम्? (पंचतन्त्र की ख्याति का क्या प्रमाण है?)

   उत्तरम्— जगतः सर्वाधिक भाषासु अनूदितः इति अस्य ख्यातिः प्रमाणम्।

   (संसार की अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ, यह इसकी ख्याति का प्रमाण है।)

5. पञ्चतन्त्रं कदा लिखितम्? (पंचतंत्र कब लिखा गया?)

   उत्तरम्— पञ्चतन्त्रं नामग्रन्थं षष्ठ शताब्द्यां रचितम्। (पञ्चतन्त्र नामक ग्रंथ छठवीं शताब्दी में रचा गया।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

1. 'अस्य कथाः' अत्र अस्य इति सर्वनाम पदं कस्य स्थाने प्रयुक्तम्?

   ('अस्य कथाः' यहाँ 'अस्य' सर्वनाम पद किसके स्थान पर प्रयोग हुआ है?)

2. 'अनूदिताः सन्ति' 'सन्ति' क्रियापदस्य कर्तृपदम् अनुच्छेदात चित्वा लिखत।

   ('अनूदिताः सन्ति' 'सन्ति' क्रियापद का कर्त्तापद अनुच्छेद से चुनकर लिखिये।

3. 'ग्रन्थः अतीव लोकप्रियः वर्तते' एतेषु पदेषु विशेषणपदं चिनुत। (इन शब्दों में से विशेषण पद चुनो।)

4. 'संसारस्य' इति पदस्य पर्यायवाचि पदं गद्यांशात् चिनुत।

   ('संसारस्य' पद का पर्यायवाची पद गद्यांश से चुनिए।)

उत्तरम्— 1. पञ्चतन्त्रस्य 2. कथाः 3. लोकप्रियः 4. जगतः।

(28) एतद्विज्ञानस्य युगमस्ति। मानव जीवनस्य प्रत्येकस्मिन् क्षेत्रे विज्ञानमस्माकं महदुपकारं करोति। शिक्षाया क्षेत्रे विज्ञानेन महती उन्नतिकृता। मुद्रण यन्त्रेण पुस्तकानि मुद्रितानि भवन्ति। समाचारपत्राणि च प्रकाश्यन्ते। दूरदर्शनमपि शिक्षायाः प्रभावोत्पादकं साधनस्ति। सूचनायाः क्षेत्रे तु अनेन क्रान्तिकारीणि परिवर्तनानि कृतानि। अनेन मनोरञ्जनेन सह देशविदेशानां वृत्तमपि ज्ञायते। सङ्गणकयन्त्रम् आकाशवाणी चापि एवस्मिन् कार्ये सहाय्यौ भवतः। विज्ञानेन अस्माकं यात्रा सुकराभवत्।

शकटात् आरभ्य राकेटयानपर्यन्तं सर्वमेव विज्ञानेन एव प्रदत्तम्। भूभागे वयं वाष्पयानादिभिः विविधैः यानैः यथेच्छं भ्रमामः वायुयानेन आकाशे खगवत् विचरामः जलयानेन च जलचरैरिव प्रगाढे सागरे संतरामः। इदानीं तु चन्द्रलोकस्यापि यात्रा अन्तरिक्ष यानेन सम्भवति।

(यह विज्ञान का युग है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान हमारा महान् उपकार करता है। शिक्षा के क्षेत्र में विज्ञान ने महान उन्नति की है। छापेखाने से अनेकों पुस्तकें छपी हैं और समाचार-पत्र प्रकाशित किये जाते हैं। दूरदर्शन भी शिक्षा का प्रभावी साधन है। सूचना के क्षेत्र में इसने क्रान्तिकारी परिवर्तन किये हैं। इससे मनोरञ्जन के साथ-साथ देश-विदेश के समाचार भी जाने जाते हैं। कम्प्यूटर और आकाशवाणी भी इस विषय में सहायक हुई है। विज्ञान से हमारी यात्रा सरल हो गई है। बैलगाड़ी से लेकर राकेट तक सब कुछ विज्ञान द्वारा ही दिया गया है । धरती के भाग को हम रेलगाड़ी आदि विविध वाहनों से इच्छानुसार भ्रमण करते हैं। वायुयान से आकाश में पक्षी की तरह विचरण करते हैं तथा जलयान से जलचरों की तरह गहरे सागर में तैरते हैं। अब तो चन्द्रलोक की यात्रा भी अन्तरिक्ष यान से सम्भव है।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

उत्तरम्– विज्ञान महत्त्व् (विज्ञान का महत्त्व।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत– (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)–

1. कस्य युगमेतत्? (यह किसका युग है?)

   उत्तरम्– विज्ञानस्य। (विज्ञान का।)

2. दूरदर्शनेन मनोरञ्जेन सह किमन्यत् ज्ञायते? (दूरदर्शन से मनोरंजन के साथ और क्या जाना जाता है?)

   उत्तरम्– देशविदेशानां वृत्तम्। (देश विदेश के समाचार।)

- पूर्णवाक्येन उत्तरत– (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए–)

3. विज्ञानेन मानवस्य यात्रा कीदृशी जाता? (विज्ञान से मानव की यात्रा कैसी हो गई?)

   उत्तरम्– विज्ञानेन मानवस्य यात्रा सुकरा अभवत्। (विज्ञान से मानव की यात्रा सरल हो गई है।)

4. वृत्तज्ञाने दूरदर्शनस्य के सहायकाः भवन्ति? (समाचार जानने में दूरदर्शन के सहायक कौन होते हैं?)

   उत्तरम्– सङ्गणक-आकाशवाणी चापि अस्मिन् वृत्तज्ञाने सहाय्यौ भवतः।

   (कंप्यूटर और आकाशवाणी भी समाचार जानने में सहायक होते हैं।)

5. दूरदर्शनम् सूचनायाः क्षेत्रे किं कृतम्? (दूरदर्शन ने सूचना के क्षेत्र में क्या किया?)

   उत्तरम्– सूचनायाः क्षेत्रे तु दूरदर्शनेन क्रान्तिकारीणि परिवर्तनानि कृतानि।

   (सूचना के क्षेत्र में तो दूरदर्शन ने क्रांतिकारी परिवर्तन किया है।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत– (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–)

1. 'अनेन क्रान्तिकारीणि........' अत्र 'अनेन' इति सर्वनाम पदं कस्य स्थाने प्रयुक्तम्।

   ('अनेन क्रान्तिकारीणि.......'- यहाँ 'अनेन' सर्वनाम पद किसके स्थान पर प्रयोग किया गया है?)

2. 'महदुपकारम्' इत्यनयोः पदयोः कि विशेषणं पदम्? (इन पदों में विशेषण पद क्या है?)

3. 'सागरे संतरामः' अत्र 'सन्तरामः' क्रियाया कर्त्ता कः?

   ('सागरे सन्तरामः' यहाँ सन्तरामः क्रिया का कर्त्ता कौन है?)

4. 'मुद्रितानि भवन्ति' अनयोः क्रियापदं चिनुत। (इनमें से क्रियापद चुनो।)

उत्तरम्– 1. दूरदर्शनेन 2. महत् 3. वयम् 4. भवन्ति।

(29) एकस्मिन् राज्ये एकः नृपः शासनं करोति स्म। तस्य अङ्गरक्षकः एकः वानरः आसीत्। वानरः स्वामिभक्तः आसीत्। नृपोऽपि तस्मिन् वानरे प्रभूतं विश्वासं करोति स्म। किन्तु वानरः मूर्खः आसीत्। एकदा नृपः सुप्तः आसीत्। वानरः तं व्यजनं करोति स्म। तस्मिन् समये नृपस्य वक्षस्थले एका मक्षिका अतिष्ठत। वानरः वारं-वारं तां मक्षिकाम् अपसारयितुं प्रायतत। परन्तु सा मक्षिका पुनः नृपस्य ग्रीवायाम् उपविशति स्म। मक्षिका दृष्ट्वा वानरः कुपितः अभवत्। मूर्ख वानरः मक्षिकायाः उपरि प्रहारम् अकरोत्। मक्षिका तु ततः उड्डीयते स्म। परञ्च खड्गप्रहारेण नृपस्य ग्रीवाम् अच्छिनत्। तेन नृपस्य मृत्युः अभवत्। अतः मूर्खस्य मित्रता घातिका भवति।

(एक राज्य में एक राजा शासन करता था। उसका अंगरक्षक एक बन्दर था। वानर स्वामिभक्त था। राजा भी उस बन्दर पर बहुत विश्वास करता था। किन्तु वानर मूर्ख था। एक दिन राजा सोया हुआ था। वानर उसे पंखा झुला रहा था। अर्थात् हवा कर रहा था। उसी समय राजा के वक्षस्थल पर एक मक्खी आ बैठी। वानर ने बार-बार उस मक्खी को हटाने (उड़ाने) का प्रयत्न किया। परन्तु वह मक्खी पुनः राजा की गर्दन पर बैठ गई। मक्खी को देखकर वानर नाराज हुआ। मूर्ख वानर ने मक्खी पर प्रहार किया। मक्खी तो वहाँ से उड़ गई परन्तु तलवार के प्रहार से राजा की गर्दन कट गई। उससे राजा की मृत्यु हो गई। अतः मूर्ख की मित्रता घातक होती है।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

उत्तरम्— मूर्खस्य मित्रता घातिका। (मूर्ख की मित्रता घातक है।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. नृपः कस्मिन् विश्वसिति स्म? (राजा किस पर विश्वास करता था?)

   उत्तरम्— वानरे। (बन्दर पर।)

2. एकदा सुप्ते नृपे वानरः किं करोति स्म? (एक दिन राजा के सो जाने पर बन्दर क्या कर रहा था?)

   उत्तरम्— व्यजनं करोति। (हवा कर रहा था।)

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. नृपस्य मृत्यु कथम् अभवत्? (राजा की मौत कैसे हो गई?)

   उत्तरम्— मक्षिका नृपस्य ग्रीवायाम् अतिष्ठत। वानरः ते अपसारयितुमैच्छत अतः खड्गेन प्रहारम् अकरोत् नृपः च हतः। (मक्खी राजा की गर्दन पर बैठी। बन्दर ने उसे हटाने की इच्छा से तलवार से प्रहार किया और राजा मर गया।)

4. मूर्खस्य मित्रता कीदृशी भवति? (मूर्ख की मित्रता कैसी होती है?)

   उत्तरम्— मूर्खस्य मित्रता घातिका भवति। (मूर्ख की मित्रता घातक होती है।)

5. वानरः कुपितः कथमभवत्? (वानर नाराज क्यों हो गया?)

   उत्तरम्— ग्रीवायाम् उपविष्टां मक्षिका दृष्ट्वा वानरः कुपितः अभवत्।

   (गर्दन पर बैठी मक्खी को देखकर बंदर क्रोधित हो गया ।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

1. 'नृपः शासनं करोति' अत्र 'करोति' क्रियापदस्य कर्तृपदं लिखत।

   ('नृपः शासनं करोति' यहाँ 'करोति' क्रियापद का कर्तृपद लिखिये।)

2. 'जागृतः' इति पदस्य विलोमपदं अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

   ('जागृतः' पद का विलोम पद अनुच्छेद से चुनकर लिखिये।)

3. 'वानरः तं व्यजनं करोति स्म' अत्र 'तम्' इति सर्वनामपदस्य कस्मै प्रयुक्त?

4. 'क्रुद्धः' इति पदस्य पर्यायवाचिपदम् लिखत। ('क्रुद्ध' पद का पर्यायवाची लिखो।)

उत्तरम्— 1. नृपः 2. सुप्तः 3. नृपम् 4. कुपितः।

(30) जिह्वाया: माधुर्यं स्वर्गं प्रापयति, जिह्वाया: कटुता नरके पातयति। एक एव शब्द: जीवनं विभूषयेत्, अन्य: एक: शब्द: जीवनं नाशयेत। एकदा द्वयो: धनिनो: मध्ये विवाद: उत्पन्न: जात:। तौ न्यायालयं गतौ। एक धनिक: अचिन्तयत् अहं लक्ष्यं रुप्यकाणि न्यायाधीशाय यच्छामि इति। स: स्यूते लक्ष रुप्यकाणि स्थापयित्वा न्यायाधीशस्य गृहम् गतवान्। न्यायाधीश: तस्य मन्तव्यं ज्ञात्वा क्रुद्ध: अभवत्। धनिक: अवदत्–भो: मत् सदृशा: लक्षरुप्यकाणां दातार: दुर्लभा एव।'' न्यायाधीश: अवदत्– ''लक्षरुप्यकाणां दातार: कदाचित् अन्येऽपि भवेयु: परन्तु लक्ष रुप्यकाणां निराकर्त्तार: मत्सदृशा: अन्ये विरला एव अत: कृपया गच्छतु। न्याय स्थानं मलिनं मा कुरु। लज्जित: धनिक: धनस्यूत गृहीत्वा तत: निर्गत:।

(जिह्वा की मधुरता स्वर्ग प्राप्त करा देती है (तो) जिह्वा की कटुता नरक में गिरा सकती है। एक ही शब्द जीवन को विभूषित कर दे (तो) अन्य एक शब्द जीवन को नष्ट कर दे। एक बार दो धनवानों में विवाद हो गया। दोनों न्यायालय में गये। एक धनिक सोचता था– मैं लाख रुपये न्यायाधीश को दे देता हूँ। वह थैले में लाख रुपये रखकर न्यायाधीश के घर गया। न्यायाधीश उसके मन्तव्य को जानकर नाराज हो गया। धनिक बोला- अरे! मेरे समान लाख रुपयों के दाता दुर्लभ ही हैं। न्यायाधीश ने कहा- ''लाख रुपयों के दाता कदाचिद् अन्य भी हों परन्तु लाख रुपयों को त्यागने वाले मेरे जैसे अन्य विरले ही होते हैं। अत: कृपया (यहाँ से) चले जाओ। न्याय के स्थान को मलिन (अपवित्र) मत करो।'' शर्मिन्दा हुआ धनिक धन का थैला लेकर वहाँ से निकल गया।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

उत्तरम्— जिह्वाया: माधुर्यं स्वर्गं प्रापयति, कटुता च नरके पातयति। (जिह्वा की मधुरता स्वर्ग प्राप्त कराती है और कटुता नरक।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. धनिक: धनम् आदाय कस्य गृहं गतवान्? (धनिक धन लेकर किसके घर गया?)

   उत्तरम्— न्यायाधीशस्य। (न्यायाधीश के।)

2. एक एव शब्द: किं विभूषयेत? (एक ही शब्द क्या विभूषित कर दे?)

   उत्तरम्— जीवनम्। (जीवन को)

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. क: न्याय स्थानं मलिनं कर्तुम् इच्छति स्म? (कौन न्याय स्थान को मलिन करना चाहता था?)

   उत्तरम्— धनिक: एकं लक्षम् उत्कोचं दत्त्वा न्यायस्थानं मलिनं कर्तुम् इच्छति स्म।
   (धनी एक लाख रुपये रिश्वत देकर न्यायस्थान को मलिन करना चाहता था।)

4. न्यायाधीश: किमर्थं क्रुद्ध: अभवत्? (न्यायाधीश क्यों नाराज हुआ?)

   उत्तरम्— न्यायाधीश: धनिकस्य उत्कोच दानस्य मन्तव्यं ज्ञात्वा क्रुद्धेऽभवत्।
   (न्यायाधीश धनी के धन दान के मन्तव्य को जानकर क्रोधित हुआ।)

5. जिह्वाया माधुर्यस्य कटुताया: च का परिणति:? (जिह्वा की मधुरता और कटुता का क्या परिणाम होता है?)

   उत्तरम्— जिह्वाया: माधुर्यं स्वर्गं प्रापयति, कटुता च नरके पातयति।
   (जिह्वा की मधुरता स्वर्ग प्राप्त कराती है और कटुता नरक।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

1. 'लज्जित:' इति पदं कस्य विशेषणम्? ('लज्जित' पद किसका विशेषण है?)
2. 'कुरु' क्रियापदस्य कर्तृपदं लिखत। ('कुरु' क्रियापद का कर्तृपद लिखिए।)
3. 'तौ न्यायालयं' गतौ' इति वाक्ये 'तौ' इति पदं काभ्यां प्रयुक्तम्?

   ('तौ न्यायालयं गतौ' वाक्य में 'तौ' पद किनके लिए प्रयुक्त हुआ है?)

4. 'अत: कृपया गच्छतु' इति वाक्ये गच्छतु क्रियापदस्य कर्तृपदं लिखत।
('अत: कृपया गच्छतु' वाक्य में 'गच्छतु' क्रियापद का कर्त्ता लिखिए।)

उत्तरम्— 1. धनिकस्य 2. त्वम् 3. धनिकाभ्याम् 4. न्यायाधीश:।

(31) भारते गुरु-शिष्य-परम्परा प्राचीना वर्तते। गुरो: सन्निधौ अनेके महापुरुषा अभवन्। अस्यां परम्परायाम् एक: प्रमुख: वर्तते समर्थ गुरु रामदास शिववीरयो:। यथा विवेकानन्द: परमहंसस्य आशीर्वादेन स्व जिज्ञासाया: समाधान प्राप्य देशस्य प्रतिष्ठां पुन: स्थापितवान तथैव शिवाजी महाराज: गुरो: सान्निध्ये मार्गदर्शनं प्राप्य स्वराज्यस्य स्थापनां कृतवान्। एतादृशानि अनेकानि उदाहरणानि भारते वर्तन्ते। वयमपि एतानि उदाहरणानि अनुसृत्य जीवने गुरो: महत्वं स्वीकृत्य स्वशिक्षकानां सम्मानं कुर्म:। गुरुं प्रति सम्मानं प्रकटयितुं भारते गुरुपूर्णिमोत्सव: शिक्षक दिवसस्य च आयोजनं भवति। यथा विवेकानन्द: विश्वपटले भारतस्य श्रेष्ठतां स्वाचरणेन कृत्यै: ज्ञानेन च स्थापितवान्। स: भारतीय ज्ञानं संस्कृतिं च श्रेष्ठतमां मन्यते स्म। तथैव अनेके महापुरुषा: सन्ति ये विभिन्न प्रकारेण देशस्य गौरवं वर्धितवन्त:।

(भारत में गुरु-शिष्य परम्परा प्राचीन है। गुरु के सान्निध्य में अनेक महापुरुष हो गये, इस परम्परा में एक प्रमुख है-समर्थ गुरु रामदास शिवाजी के गुरू। जैसे विवेकानन्द ने परमहंस के आशीर्वाद से अपनी जिज्ञासा का समाधान प्राप्त कर देश की प्रतिष्ठा को पुन: स्थापित किया उसी प्रकार शिवाजी महाराज ने गुरु के सान्निध्य में मार्गदर्शन प्राप्त कर स्वराज्य की स्थापना की। इस प्रकार के अनेक उदाहरण भारत में हैं। हम भी इन उदाहरणों का अनुसरण करके जीवन में गुरु के महत्व को स्वीकार कर अपने शिक्षकों का सम्मान करें। गुरु के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए भारत में गुरुपूर्णिमा उत्सव और शिक्षक दिवस का आयोजन होता है। जिस प्रकार विवेकानन्द ने विश्वपटल पर भारत की श्रेष्ठता अपने आचरण, कृत्यों और ज्ञान से स्थापित की। वह भारतीय ज्ञान और संस्कृति को श्रेष्ठतम मानते थे। उसी प्रकार अनेक महापुरुष हैं, जिन्होंने विभिन्न प्रकार से देश के गौरव को बढ़ाया।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए-)
उत्तरम्— गुरो: महत्त्वम्। (गुरु-शिष्य परम्परा।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. विवेकानन्द: कस्य शिष्य: आसीत्? (विवेकानंद किसके शिष्य थे?)
उत्तरम्— रामकृष्ण परमहंसस्य। (रामकृष्ण परमहंस का।)
2. भारतीय संस्कृतिं क: श्रेष्ठतमा मन्यते स्म? (भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठतम किसने माना?)
उत्तरम्— विवेकानन्द।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. विवेकानन्द: किं स्थापितवान्? (विवेकानन्द ने क्या स्थापित किया?)
उत्तरम्— देशस्य प्रतिष्ठां पुन: स्थापितवान्। (देश की प्रतिष्ठा पुन: स्थापित की।)
4. गुरु-शिष्य सम्मानं प्रकटयितुं के महोत्सवा: आयोज्यन्ते?
(गुरु-शिष्य सम्मान प्रकट करने के लिए कौन से महोत्सव आयोजित किए जाते हैं?)
उत्तरम्— गुरु-शिष्य सम्मानं प्रकटयितुं गुरुपूर्णिमा च शिक्षक दिवसयो: आयोजनं क्रियते।
(गुरु-शिष्य सम्मान प्रकट करने के लिए गुरुपूर्णिमा और शिक्षक दिवस का आयोजन किया जाता है।)
5. शिवाजी: गुरो: सान्निध्ये मार्गदर्शन प्राप्य किम् अकरोत?
(शिवाजी ने गुरु के सान्निध्य में मार्गदर्शन पाकर क्या किया?)
उत्तरम्— स्वराज्यस्य स्थापनाम् अकरोत्। (स्वराज की स्थापना की।)

(ग) यथानिर्देशम् उत्तरत– (निर्देशानुसार उत्तर दीजिए–)

1. 'नवीना' इति पदस्य विलोमपदं अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।
   ('नवीना' पद का विलोम पद अनुच्छेद से लिखिये।)
2. 'ज्ञातुमिच्छाया:' इति पदस्य स्थाने अनुच्छेदे किं पदं प्रयुक्तम्?
   ('ज्ञातुमिच्छाया:' पद के स्थान पर अनुच्छेद में क्या पद प्रयोग किया है?)
3. 'परम्परा प्राचीनावर्तते' एतेषु पदेषु क: विशेषणपदम्? (इनमें से कौन-सा पद विशेषण है?)
4. 'कृतवान्' इति क्रियापदस्य अनुच्छेदे का कर्त्ता? ('कृतवान्' क्रियापद का कर्त्ता कौन है?)

उत्तरम्– 1. प्राचीना 2. जिज्ञासाया: 3. प्राचीना 4. शिवाजी महाराज:।

(32) अद्य स्वस्थं स्वच्छं पर्यावरणस्य आवश्यकता वर्तते। पर्यावरणस्य रक्षा धर्मसम्मतमेव अस्ति। इति अस्माकं ऋषय: प्रतिपादितवन्त:। आवश्यकं वर्तते यद् वयं स्वजीवनं सन्तुलितं कुर्म:। प्रकृते: संसाधनानां संरक्षणं कुर्म:। अपशिष्ट पदार्थानामवकरस्य वा निक्षेपण सावधानेन कुर्म:। अद्य प्रदूषणाद् निवारणार्थ सर्वकारेण महान्त: प्रयासा: क्रियन्ते। तेषु प्रयासेषु वयमपि सहभागिने: भवाम। अधिकाधिक वृक्षारोपणं तेषां संरक्षणं चं कुर्म:। प्राकृतिक जलस्रोतानां सुरक्षां कुर्म:। अनेन एव सौरोर्जाया: वायूर्जाया: च उपयोगं कुर्म:। सर्वत्र स्वच्छता च पालयाम:। जीवमात्रस्य संरक्षणं कुर्म:। नदीतडागवापीना च स्वच्छतां स्थापयाम:। ध्वनि विस्तारकयंत्राणां उपयोगं अवरोधयाम:। पर्यावरणस्य महत्वमावश्यकतां च संस्मृत्य सर्वे वयं तस्य संरक्षणाय प्रयत्नं करिष्याम:। तर्हि विश्व: सुखी-सम्पन्नश्च भविष्यति। तदैव अस्माकं 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया।' कामना सफला भविष्यति।

(आज स्वस्थ और स्वच्छ पर्यावरण की आवश्यकता है। पर्यावरण की रक्षा धर्मसम्मत है। ऐसा हमारे ऋषियों ने प्रतिपादन किया है। आवश्यक है कि हम अपना जीवन सन्तुलित करें। प्रकृति के संसाधनों का संरक्षण करें। उच्छिष्ट पदार्थो अथवा कूड़े-करकट को सावधानी से फेंकें (डालें)। आज प्रदूषण के निवारण के लिए सरकार ने महान प्रयास किए हैं। उन प्रयासों में हम सभी सहयोगी हों। अधिकाधिक वृक्षों का आरोपण तथा संरक्षण करें। प्राकृतिक जलस्रोतों की सुरक्षा करें। इससे इस प्रकार सौर ऊर्जा और वायु ऊर्जा का उपयोग करें। सर्वत्र स्वच्छता का पालन करें। जीवमात्र का संरक्षण करें। नदी-तालाब और वावड़ियों में सफाई स्थापित करें। ध्वनि विस्तारक यन्त्रों का प्रयोग रोकें। पर्यावरण का महत्व और आवश्यकता के महत्व को याद कर हम सभी उसकी सुरक्षा के लिए प्रयत्न करेंगे तो विश्व सुखी और समृद्ध होगा। तभी हमारा 'सभी सुखी हों और नीरोग हों।' की कामना सफल होगी।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)
   उत्तरम्– स्वच्छ पर्यावरणम्। (स्वच्छ पर्यावरण।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत– (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)–

1. कस्य ऊर्जाया: प्रयोग: कर्त्तव्य:? (किस ऊर्जा का प्रयोग करना चाहिए?)
   उत्तरम्– सौरोर्जाया: वायूर्जाया: च। (सौर ऊर्जा और वायु ऊर्जा का।)
2. वयं स्वजीवनं कीदृशं कुर्म:? (हम अपना जीवन कैसा करें?)
   उत्तरम्– सन्तुलितम्। (संतुलित)।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत– (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए–)

3. अद्य कस्य आवश्यकता वर्तते? (आज किसकी आवश्यकता है?)
   उत्तरम्– अद्य स्वस्थं-स्वच्छं पर्यावरणस्य आवश्यकता वर्तते।
   (आज स्वस्थ और स्वच्छ पर्यावरण की आवश्यकता है।)

4. जीवनस्य आवश्यकं किं वर्तते? (जीवन के लिए आवश्यक क्या है?)
   उत्तरम्– आवश्यकं वर्तते यद् वयं स्व-जीवनं सन्तुलितं कुर्मः।
   (आवश्यकता है कि हम अपने जीवन को संतुलित करें।)
5. पर्यावरण-प्रदूषण-निवारणाय मानवेन किं करणीयम्? एकं कार्यं लिखत। (पर्यावरण प्रदूषण निवारण के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए? एक कार्य लिखिये।)
   उत्तरम्– अधिकाधिक वृक्षारोपण तेषां संरक्षणं च मानवेन करणीयम्।
   (अधिकाधिक वृक्षारोपण, उनका संरक्षण मनुष्यों को करना चाहिए।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत– (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–)
1. 'स्वच्छ पर्यावरणम्' अत्र किं पदं विशेष्यपदम्? (स्वच्छ पर्यावरणम्' यहाँ विशेष्य पद कौन-सा है?)
2. 'सहभागिनः भवामः' यहाँ 'भवामः' क्रियापदस्य कर्तृपदं लिखत।
   ('सहभागिनः भवामः' यहाँ भवामः क्रियापद का कर्तृपद लिखिए।)
3. 'नीरोगाः' इति पदस्य स्थाने अनुच्छेदे किम् समानार्थी पदं प्रयुक्तम्?
   ('नीरोगाः' इस पद के स्थान पर अनुच्छेद में क्या समान अर्थ वाला पद प्रयोग किया है?)
4. 'दुःखिनः' इति पदस्य अनुच्छेदात् चित्वा विलोमपदं लिखत।
   (दुःखिनः पद का अनुच्छेद से चुनकर विलोम पद लिखिये।)

उत्तरम्– 1. पर्यावरणम् 2. वयम् 3. निरामयाः 4. सुखिनः।

(33) अस्त्युज्जयिन्यां माधवो नाम विप्रः। एकदा तस्य भार्या स्वबालापत्यस्य रक्षार्थं तमवस्थाप्य स्नातुं गता। अथ ब्राह्मणो राज्ञा श्राद्धार्थे निमन्त्रितः। ब्राह्मणस्तु सहजदारिद्रयात् अचिन्तयत्-यदि सरवरं न गच्छामि तदान्यः कश्चित् श्राद्धार्थं वृतो भवेत्। परन्तु बालकस्य अत्र रक्षको नास्ति। तत् किं करोमि? भवतु चिरकाल पालितम् इयं पुत्रविशेषं नकुलं बाल रक्षायां व्यवस्थाप्य गच्छामि। तथा कृत्वा सः गतः। ततः तेन नकुलेन बालसमीपम् उपसर्पन कृष्ण सर्पो दृष्टः। स तं व्यापाद्य खण्डशः कृतवान्। अत्रान्तरे ब्राह्मणोऽपि श्राद्धं कृत्वा गृहमुपावृतः ब्राह्मणं दृष्ट्वा नकुलो रक्त विलिप्त मुखपादः तच्चरणयोः अलुठत्। विप्रस्तथाविधं तं दृष्ट्वा बालकोऽनेन खादित इति अवधार्य कोपात् नकुलं व्यापादितवान्। अनन्तरं यावत उपसृत्यापत्यं पश्यति तावत् बालकः सर्पश्च व्यापादितः तिष्ठति। ततः तमोपकारकं नकुलं मृतं निरीक्ष्य आत्मानं मुषितं मन्यमानः ब्राह्मण परम विषादमगमत्।

(उज्जयिनी में एक माधव नाम का ब्राह्मण था। एक दिन इसकी पत्नी अपने छोटे बच्चे की रक्षा के लिए उसे रखकर स्नान करने चली गई। इसके बाद ब्राह्मण राजा द्वारा श्राद्ध के लिए निमन्त्रित कर लिया गया। ब्राह्मण स्वाभाविक रूप से दरिद्री होने के कारण सोचने लगा- यदि मैं जल्दी नहीं जाता हूँ तो दूसरा कोई श्राद्ध को ले जायेगा। परन्तु यहाँ बालक का कोई रक्षक नहीं है। तो क्या करूँ । खैर बहुत समय से पाले हुए इस पुत्र विशेष नेवला को बच्चे की रक्षा के लिए रखकर जाता हूँ । ऐसा ही करके वह गया। तब उस नेवले ने बालक के समीप रेंगता हुआ एक काला साँप देखा। उस (नेवले) ने उसको मार कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। इसके बाद ब्राह्मण भी श्राद्ध करके घर आ गया। ब्राह्मण को देखकर खून से लथपथ मुख वाला नेवला उसके पैरों में लोटने लगा। ब्राह्मण ने इस प्रकार के उसको देखकर 'बालक को इसने खा लिया है।' ऐसा समझकर क्रोध के कारण नेवले को मार दिया। इसके पश्चात् जब पास जाकर बालक को देखता है तो बालक अच्छी तरह तथा सर्प मरा हुआ पड़ा है। तब उस उपकार करने वाले नेवले को मरा हुआ देखकर अपने को ठगा मानता हुआ ब्राह्मण बहुत दुखी हुआ।

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)
   उत्तरम्– सहसा विदधीत न क्रियाम्

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. नकुल रक्षायां व्यवस्थाप्य माधवः कुत्र अगच्छत्? (नेवले को रक्षा व्यवस्था में छोड़कर माधव कहाँ गया?)
   उत्तरम्— श्राद्धाय। (श्राद्ध के लिए।)
2. नकुलेन बालकस्य समीपे किं दृष्टम्? (नेवले ने बच्चे के पास क्या देखा?)
   उत्तरम्— कृष्णसर्पम्। (काले सर्प को।)

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. राज्ञः निमन्त्रणं प्राप्य किम् अचिन्तयत्? (राजा के निमन्त्रण को पाकर ब्राह्मण ने क्या सोचा?)
   उत्तरम्— यदि सत्वरं न गच्छामि तदन्यः कश्चित् श्राद्धाय व्रतो भवेत्।
   (यदि जल्दी नहीं जाता हूँ, तो कोई और श्राद्ध को ले जाएगा।)
4. माधवः बालकस्य रक्षायां कं व्यवस्थापयत्? (माधव ने बालक की रक्षा-व्यवस्था में किसको रखा?)
   उत्तरम्— माधवः बालकस्य रक्षायां नकुलं व्यवस्थापयत्। (माधव ने बालक की रक्षा में नकुल की व्यवस्था की।)
5. उपसर्पन कृष्णसर्पम् दृष्ट्वा नकुलः किमकरोत्? (रेंगते साँप को देखकर नेवले ने क्या किया?)
   उत्तरम्— नकुलेन कृष्ण सर्पः व्यापाद्य खण्डशः कृतः। (नेवले ने काले साँप को मारकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया।)

(ग) यथानिर्देशम् उत्तरत— (निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—)

1. 'पुत्रस्य' इति पदस्य स्थाने अनुच्छेदे किं पदम् प्रयुक्तम्?
   ('पुत्रस्य' पद के स्थान पर अनुच्छेद में किस पद का प्रयोग किया है?)
2. 'तथा कृत्वा सः गतः' अत्र 'सः' इति सर्वनाम पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   ('तथा कृत्वा सः गतः' यहाँ 'सः' सर्वनाम पद किसके लिए प्रयोग किया गया है?)
3. 'तमुपकारकं नकुलम्' अत्र किम् विशेष्यपदम्? (यहाँ कौनसा विशेष्य पद है?)
4. 'ब्राह्मणः परमविषादमगमत्' अत्र अगमद क्रियायाः कर्तृपदं लिखत।
   ('ब्राह्मण अगमत्' यहाँ अगमत क्रिया का कर्ता लिखिए।)

उत्तरम्— 1. अपत्यस्य 2. माधवः 3. नकुलम् 4. ब्राह्मणः।

(34) देशाटनं मानवायं अतिहितकरम्। देशाटनस्य बहवः गुणाः भवन्ति। नानादेशजलवायु प्रभावेण अस्माकं स्वास्थ्य लाभः भवति। देशान्तर कला कौशल-ज्ञानेन वयं स्वदेशमपि कला कौशल सम्पन्नं कुर्मः अधिकोन्नतस्य देशस्य नागरिकाः प्रायः पर्यटनप्रिया भवन्ति। ब्रिटिश शासनकाले शासकाः भारतीयानाम् देशाटनरुचिं नोत्साहयन्ति स्म। भारतीयाश्च प्रेरणां बिना न किमपि कुर्वन्ति इति सर्वविदितम्। परमधुना न वयं परतन्त्राः, अतः शासकानामेतत् कर्त्तव्यमापद्यते यत्रे भारतीयानां देशाटनं प्रति अभिरुचिं प्रोत्साहयेयुः। अधुना बहवः भारतीयाश्छात्रा अमरीका इङ्गलैण्ड, रूस प्रभृति देशेषु विविध कला कौशल ज्ञानार्जनाय गताः सन्ति। स्वदेशमागत्य ते स्वोपार्जितज्ञानेन स्वदेशामवश्यमेव उन्नमयिष्यन्ति इति जानीमः।

(देशाटन मनुष्य के लिए अति हितकर होता है। देशाटन के बहुत से गुण होते हैं। विविध देशों की जलवायु के प्रभाव से हमें स्वास्थ्य लाभ हो गया है। दूसरे देशों के कला-कौशल के ज्ञान से हम अपने देश को भी कला-कौशल से सम्पन्न करते हैं। अधिक उन्नत देश के नागरिक प्रायः पर्यटन प्रिय होते हैं। अंग्रेजी शासन काल में शासकों ने भारतीयों की देशाटन रुचि को उत्साहित नहीं किया और भारतीय बिना प्रेरणा के कुछ नहीं करते हैं, यह सर्वविदित है। लेकिन अब हम परतन्त्र नहीं हैं। अतः शासकों का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे भारतीयों की देशाटन के प्रति अभिरुचि को प्रोत्साहित करें। आजकल

बहुत से भारतीय छात्र अमेरिका, इंग्लैण्ड, रूस आदि देशों में विविध कला-कौशल ज्ञानार्जन के लिए गये हुए हैं। अपने देश में आकर वे अपने उपार्जित ज्ञान से अपने देश को अवश्य उन्नत करेंगे, ऐसा हम जानते हैं।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

उत्तरम्— देशाटनस्य महत्त्वम्। (देशाटन का महत्त्व।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. कस्य बहवः गुणाः भवन्ति? (किसके बहुत से गुण होते हैं?)

   उत्तरम्— देशाटनस्य। (देशाटन के।)

2. कदा शासकाः भारतीयानां देशाटन रुचिं नोत्साहन्ति स्म?

   (कब शासक भारतीयों की देशाटन की रुचि को उत्साहित नहीं करते थे?)

   उत्तरम्— ब्रिटिशशासनकाले। (अंग्रेजी शासनकाल में।)

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. अस्माकं स्वास्थ्य लाभः केन भवति? (हमारा स्वास्थ्य लाभ किससे होता है?)

   उत्तरम्— नानादेश जलवायु प्रभावेण अस्माकं लाभो भवति।

   (अनेक देश की जलवायु के प्रभाव से हमको लाभ होता है।)

4. देशान्तरकला कौशल ज्ञाननेन वयं कि कुर्मः? (दूसरे देश के कला-कौशल के ज्ञान से हम क्या करें?)

   उत्तरम्— वयं स्वदेशमपि कला-कौशल सम्पन्नं कुर्मः।

   (हम अपने देश को भी कला-कौशल से संपन्न करें।)

5. अद्य शासकानां किं कर्त्तव्यम् आपद्यते? (आज शासकों का क्या कर्त्तव्य आ पड़ा है?)

   उत्तरम्— यत्रे भारतीयानां देशाटनं प्रत्यभि रुचिं प्रोत्साहयेयुः।

   (यहाँ भारतीयों की देशाटन के प्रति रुचि को प्रोत्साहित करें।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

1. 'न किमपि कुर्वन्ति' अस्मिन वाक्ये किं क्रियापदम्? अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

   ('न किमपि कुर्वन्ति' इस वाक्य में क्रियापद क्या है? अनुच्छेद से चुनकर लिखिये।)

2. 'स्वतन्त्रताः' इतिपदस्य विलोम पदं अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

   ('स्वतन्त्रताः' पद का विलोम क्या है? अनुच्छेद से चुनकर लिखिये।)

3. 'नागरिकाः प्रायः पर्यटनप्रियाः भवन्ति' अत्र भवन्ति क्रियापदस्य कर्त्ता कः?

   ('नागरिका प्रायः पर्यटन प्रियाः भवन्ति' अत्र 'भवन्ति' क्रियापद का कर्त्ता कौन-सा है?)

4. 'अनेक' इति पदस्य पर्यायवाचिपदं अनुच्छेदात चित्वा लिखत।

   ('अनेक' पद का समानार्थी पद अनुच्छेद से चुनकर लिखिये।)

उत्तरम्— 1. कुर्वन्ति 2. परतन्त्राः 3. नागरिकाः 4. नाना।

(35) आतङ्कवादः आधुनिक विश्वस्य गुरुतमा समस्या अस्ति। संसारस्य प्रत्येकं देशः आतङ्कवादेन येन केन प्रकारेण पीडितः अस्ति। आतङ्कवादः विनाशस्य सा लीला या विश्वं ग्रसितुं तत्परा अस्ति। आतङ्कवादेन विश्वस्य अनेकानि क्षेत्राणि रक्तविलिप्तानि सन्ति। अनेन अनेके निर्दोषाः जनाः प्राणान् अत्यजन्। महिलाः विधवाः जाताः। बालाश्च अनाथाः अभवन्। सर्वशक्तिमान् अमेरिकादेशोऽपि अनेन सन्तप्तः अस्ति। भारतदेशस्तु आतङ्कवादेन अनेकैः वर्षैः पीडितः वर्तते। आतङ्कवादे तु एव जनाः सम्मिलिताः ये स्वार्थपुर्ति कर्तुम् इच्छन्ति, संसारे च अशान्तेः वातावरणं द्रष्टुम् इच्छन्ति। शान्तिप्रिय देशेभ्यः

आतङ्कवादस्य राक्षसस्य विनाशाय मिलित्वा एव प्रयत्नाः समाधेयां: अन्यथा एषा समस्या सुरसा मुखम् इव प्रतिदिनं वृद्धिं पास्यति।

(आतङ्कवाद आधुनिक विश्व की सबसे बड़ी समस्या है। संसार का प्रत्येक देश आतङ्कवाद से जिस किसी भी प्रकार से पीड़ित है। आतङ्कवाद विनाश की वह लीला है जो संसार को ग्रसित करने के लिए तत्पर है। आतङ्कवाद से संसार के अनेक क्षेत्र रक्त से लथपथ हैं। इससे अनेक निर्दोष लोगों ने प्राणों को त्याग दिया। महिलाएँ विधवा हो गईं । बच्चे अनाथ हो गये। सर्वशक्तिमान अमेरिका देश भी इससे सन्तप्त है। भारत देश तो आतङ्कवाद से अनेकों वर्षों से पीड़ित है। आतङ्कवाद में तो वे ही लोग सम्मिलित हैं जो स्वार्थपूर्ति करना चाहते हैं और संसार में अशान्त वातावरण देखना चाहते हैं। शान्तिप्रिय देशों द्वारा आतङ्कवाद के असुर के विनाश करने के लिए मिलकर प्रयत्न करना चाहिए, अन्यथा यह समस्या सुरसा के मुख की तरह से प्रतिदिन बढ़ती जायेगी।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

उत्तरम्– आतङ्कवादः। (आतंकवाद।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत– (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)–

1. आधुनिक विश्वस्य गुरुतमा समस्या का? (आधुनिक विश्व की सबसे बड़ी समस्या क्या है?)

   उत्तरम्– आतङ्कवादः। (आतंकवाद।)

2. अनुच्छेदे कः देशः सर्वशक्तिमान् इति उक्तः? (अनुच्छेद में किस देश को सर्वशक्तिमान् कहा गया है?)

   उत्तरम्– अमेरिकादेशः। (अमेरिका देश।)

- पूर्णवाक्येन उत्तरत– (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए–)

3. आतङ्कवादः कीदृशी लीला अस्ति? (आतङ्कवाद कैसी लीला है?)

   उत्तरम्– आतङ्कवादः विनाशस्य लीला या विश्वं ग्रसितुं तत्परा अस्ति। (आतंकवाद विनाश की वह लीला है जो संसार को ग्रसित करने के लिए तत्पर है।)

4. शान्तिप्रियैः देशैः आतङ्कवादस्य समस्या समाधानुं किं कर्त्तव्यम्?

   (शान्तिप्रिय देशों को आतंकवाद की समस्या के समाधान के लिए क्या करना चाहिए?)

   उत्तरम्– सर्वैः मिलित्वा एव प्रयत्नाः समाधेयाः। (सभी को मिलकर ही प्रयत्न करना चाहिए।)

5. आतङ्कवादे के जनाः सम्मिलिताः भवन्ति? (आतंकवाद में कौन लोग सम्मिलित होते हैं?)

   उत्तरम्– आतङ्कवादे तु एव जनाः सम्मिलिताः, ये स्वार्थपूर्ति कर्तुम् इच्छन्ति, संसारे च अशान्तेः वातावरणं द्रष्टुम् इच्छन्ति। (आतंकवाद में तो वे ही लोग सम्मिलित हैं जो स्वार्थपूर्ति करना चाहते हैं और संसार में अशान्त वातावरण देखना चाहते हैं।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत– (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–)

1. 'विश्वस्य गुरुतमा समस्यां अस्ति' अत्र 'गुरुतमा' इति पदं कस्य पदस्य विशेषणम्।

   ('विश्वस्य.........अस्ति' इस वाक्य में गुरुतमा पद किस पद का विशेषण है?)

2. 'लघुतमा' इति पदस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।

   ('लघुतमा' पद का विलोम गद्यांश से चुनकर लिखो।)

3. 'अनेन सन्तप्तः अस्ति' अत्र अनेन सर्वनाम पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

   ('अनेन सन्तप्तः अस्ति' यहाँ अनेन सर्वनाम पद किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?)

4. 'ये स्वार्थपूर्तिम् इच्छन्ति' अत्र 'इच्छन्ति' क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम्?

   ('ये स्वार्थपूर्तिम् इच्छन्ति' यहाँ 'इच्छन्ति' क्रिया का कर्ता कौन है?)

उत्तरम्– 1. समस्यायाः 2. गुरुतमा 3. आतंकवादेन 4. ये।

(36) दीपावली अस्माकं राष्ट्रियोत्सवः वर्तते। अस्मिन् उत्सवे सर्वेजनाः परस्परं भेदभावं विस्मृत्य आनन्दमग्नाः भवन्ति। त्रेतायुगे कैकेय्याः वरयाचनात् अयोध्यायाः राज्ञा दशरथेन रामाय चतुर्दशानां वर्षाणां वनवासः प्रदत्तः। श्रीरामः अस्मिन्नेव दिवसे सीतालक्ष्मणाभ्यां सह अयोध्या प्रत्यावर्तितवान्। तान् स्वागतं व्याहर्तुम् अयोध्यावासिनः नगरे सर्वत्र दीपानं प्रज्वलितवन्तः। तदा आरभ्य अद्यावधि प्रतिवर्ष कार्तिक मासे अमावस्यायां तिथौ भारते दीपावली महोत्सवः महता उत्साहेन आयोजितः भवति। दीपावल्यां जनाः गृहाणि परिष्कुर्वन्ति। अस्मिन्नवसरे ते स्वमित्रेभ्यः बन्धुभ्यश्च उपहारान् यच्छन्ति, परस्परम् अभिनन्दन्ति च। बालकेभ्यः मिष्ठान्नं यच्छन्ति। सर्वेजनाः लक्ष्मी-गणेशयोः पूजनं कुर्वन्ति। पितरः स्व सन्ततिभ्य स्फोटकानि ददति। अस्मिन् महोत्सवे सर्वे सर्वेभ्यः सुखाय समृद्धये च शुभेच्छाः प्रकटयन्ति।

(दीपावली हमारा राष्ट्रीय उत्सव है। इस उत्सव में सभी लोग आपस में भेदभाव भूलकर आननदमग्न हो जाते हैं। त्रेतायुग में कैकेई के वर माँगने के कारण अयोध्या के राजा दशरथ ने राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास दिया। श्रीराम इसी दिन सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या वापिस लौटे थे। उनका स्वागत करने के लिए अयोध्यावासियों ने सब जगह दीप जलाये। तभी से लेकर आज तक प्रत्येक वर्ष कार्तिक माह में अमावस्या को भारत में दीपावली महोत्सव महान् उत्साह के साथ आयोजित होता है। दीपावली पर लोग घरों की सफाई करते हैं। इस अवसर पर वे अपने मित्रों और भाई-बन्धुओं के लिए उपहार प्रदान करते हैं और परस्पर अभिनन्दन करते हैं। बालकों के लिए मिठाइयाँ दी जाती हैं। सभी लोग लक्ष्मी-गणेश का पूजन करते हैं। माता-पिता अपनी सन्तान को पटाखे देते हैं। इस महोत्सव पर सभी सबके लिए सुख और समृद्धि के लिए शुभेच्छाएँ प्रकट करते हैं।)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

उत्तरम्— दीपावली-महोत्सवः। (दीपावली महोत्सव।)

(ख) यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

- एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

1. कस्याः वरयाचनात् दशरथेन रामाय वनवास प्रदत्तः?
   (किसके वर माँगने के कारण दशरथ ने राम के लिए वनवास प्रदान किया।)
   उत्तरम्— कैकेय्याः। (कैकेयी के।)
2. पितरः स्वसन्ततिभ्यः कानि ददति? (माता-पितादि अपनी सन्तान को क्या देते हैं?)
   उत्तरम्— स्फोटकानि।

- पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

3. सर्वेजनाः किं विस्मृत्य आनन्दमग्नाः भवन्ति? (सब लोग क्या भूलकर आनन्दमग्न हो जाते हैं?)
   उत्तरम्— सर्वेजनाः परस्परं भेदभावं विस्मृत्य आनन्दमग्नाः भवन्ति।
   (सब लोग परस्पर भेदभाव को भूलकर आनन्दमग्न होते हैं।)
4. दशरथेन रामाय कति वर्षाणां वनवासः प्रदत्तः। (दशरथ ने राम को कितने वर्ष का वनवास दिया?)
   उत्तरम्— दशरथेन रामाय चतुर्दशानां वर्षाणां वनवासः प्रदत्तः। (दशरथ ने राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास दिया।)
5. भारते कदा दीपावली महोत्सवः आयोजितः भवति?
   (भारत में कब दीपावली का त्योहार आयोजित होता है?)
   उत्तरम्— भारते प्रतिवर्षं कार्तिक मासे अमावस्यायां तिथौ दीपावली महोत्सवः आयोजितः भवति।
   (भारत में प्रतिवर्ष कार्तिक महीने की अमावस्या तिथि को दीपावली महोत्सव आयोजित होता है।)

(ग) यथानिर्देशम् प्रश्नानाम् उत्तरत— (निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए—)

1. 'राष्ट्रियोत्सवः' इत्यत्र किं विशेषणपदम्? (यहाँ विशेषण पद क्या है?)

2. 'अस्मिन् अवसरे' अत्र अस्मिन् इति सर्वनाम पदं कस्य स्थाने प्रयुक्तम्?
   ('अस्मिन् अवसरे' यहाँ 'अस्मिन्' सर्वनाम पद किसके स्थान पर प्रयुक्त हुआ है?)
3. 'मिष्ठान्न यच्छन्ति' अत्र किं क्रियापदम्? ('मिष्ठान्नं यच्छन्ति' में क्रियापद कौन-सा है?)
4. 'स्मृत्वा' इति पदस्य विलोमपदं अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।
   ('स्मृत्वा' पद का विलोमपद गद्यांश से चुनकर लिखिये।)

उत्तरम्– 1. राष्ट्रियः 2. दीपावल्याम् 3. यच्छन्ति 4. विस्मृत्य।

अभ्यासः

(1) मरुस्थले कमलिनीव जाताया: सुजाताया: जन्म तत्कालीने मारवाड मण्डलान्तर्गते लाडनूँ नामके जनपदे 1837 तमे ख्रीष्टाब्दे एकस्मिन् कुलीन परिवारे हनवन्त सिंह राजपुरोहितस्य गृहेऽभवत्। हनवन्त सिंहः तत्कालीनस्य लाडनूँ शासकस्य राजन्य बहादुर सिंहस्य राजपुरोहितः आसीत्। अतः तेन सह तस्य प्रगाढः स्निग्धश्च सम्बन्धेऽभवत्। मधुर सम्बन्धत्वात् सुजा राजपुरोहितस्य आत्मजा अपि सति शासकस्य राजपुत्रस्य बालकैः सह क्रीडति स्म। तत्र एव तया क्रीडन्नेव अश्वारोहणम्, असि सञ्चालनं, शरसंधानं च शिक्षितम् एतासु क्रीडासु सा महदभ्यासमकरोत्। अतः असौ युद्धकलायाम् अपि निष्णाता अजायत। सा आत्मसम्मानेन समोपेता शक्तिस्वरूपा चण्डिका इव आसीत्।

(रेगिस्तान में कमलिनी की तरह पैदा हुई सुजाता का जन्म तत्कालीन मारवाड़ मण्डल के अन्तर्गत लाडनूँ नाम के जनपद में 1837 ईसवी वर्ष में एक कुलीन परिवार में हनवन्त सिंह राजपुरोहित के घर पर हुआ। हनवन्त सिंह उस समय के लाडनूँ के शासक राजपूत (ठाकुर) बहादुर सिंह का राजपुरोहित था। अतः उसके साथ इसका गहन एवं स्नेहपूर्ण सम्बन्ध था। मधुर सम्बन्ध के कारण 'सुजा' राजपुरोहित की बेटी होते हुए भी शासक के राजपूत बालकों के साथ खेलती थी। वहाँ ही उसने खेलते-खेलते घुड़सवारी, तलवार चलाना, बाण सन्धान करना सीखा। इन खेलों में उसने बहुत अभ्यास किया। इसलिए वह युद्धकला में भी पारंगत हो गई। वह आत्मसम्मान से युक्त शक्तिस्वरूपा चण्डी की तरह थी।)

प्रश्न 1. एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)–
(i) सुजाया: जन्म कुत्र अभवत्? (सुजा का जन्म कहाँ हुआ?)
(ii) सुजाया: पितुः नाम किम् आसीत्? (सुजा के पिता का नाम क्या था?)
(iii) सुजा कस्यां कलायां प्रवीणा अजायत? (सुजा किस कला में प्रवीण हो गई?)
(iv) सुजा केव शक्तिस्वरूपा आसीत? (सुजा किसकी तरह शक्तिस्वरूपा थी?)

प्रश्न 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत– (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए–)
(i) सुजाया: जन्म कस्मिन् परिवारे अभवत्? (सुजा का जन्म किस परिवार में हुआ?)
(ii) हनवन्त सिंहः कस्मिन् पदे आरूढ़ आसीत्? (हनवन्त सिंह किस पद पर आरूढ़ थे?)
(iii) 1837 तमे ख्रीष्टाब्दे लाडनूँ राजस्य शासकः कः आसीत? (1837 ई. में लाडनूँ का शासक कौन था?)

प्रश्न 3. अस्य अनुच्छेदस्य उपयुक्तं शीर्षकं लिखत। (इस अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।)

प्रश्न 4. यथानिर्देशम् उत्तरत– (निर्देशानुसार उत्तर दीजिए–)
(i) 'सा आत्मसम्मानेन.....' अत्र 'सा' इति सर्वनामपदं कस्य स्थाने प्रयुक्तम्?
   ('सा आत्मसम्मानेन.......' यहाँ 'सा' सर्वनाम पद किसके स्थान पर प्रयोग हुआ है?)
(ii) 'कुलीन परिवार' अत्र किं विशेषणपदम्'? (यहाँ विशेषण पद क्या है?)
(iii) 'अशिक्षितम्' इति पदस्य विलोमपदं लिखत। ('अशिक्षितम्' पद का विलोम पद लिखिये।)
(iv) 'प्रवीणा' इति पदस्य पर्यायवाचि पदं लिखत। ('प्रवीणा' का पर्यायवाची पद लिखिए।)

(2) वैदिक कालादेव भारतीय विज्ञान परम्परा गौरवशालिनी वर्तते। अनेके एतादृशाः भारतीयाः वैज्ञानिकाः सन्ति ये स्वान्वेषितं नूतनं ज्ञानं विश्वस्मै दत्तवन्तः। भारते अध्ययनानुसन्धानस्य परम्परा प्राचीनकालात् एव प्रचलिता अस्ति। एवमपि

वक्तुं शक्यते यत् पुरा अस्माकं जीवनपद्धतिरेव विज्ञानाधारिता एव आसीत् यथा महर्षिभृगुः शिल्पविषयकाणां दशशास्त्राणाम् उल्लेखं कृतवान्। एतानि शास्त्राणि सन्ति कृषिशास्त्रम्, जल-शास्त्रम्, खनिशास्त्रम्, नौकाशास्त्रम्, रथशास्त्रम्, अग्नियानशास्त्रम्, वेश्म शास्त्रम् प्राकारशांस्त्रम्, नगररचनाशास्त्रम्, यन्त्रशास्त्रम् इति दश शास्त्राणि वर्णितानि। भृगुना ऐतेषामपि पुनः विभागाः कृताः सन्ति। अनेन सह द्वात्रिंशत् विधानां चतुष्षष्ठि च कलानामुल्लेखः तेन कृतः अस्ति। एवमेव कणाद-भारतस्य प्रथमः परमाणु वैज्ञानिकः आसीत्। आचार्य प्रशस्तपादः गति सम्बन्धि नियमान् लिखितवान् । आचार्य प्रशस्तपादः एतान् सिद्धान्तान् 'वेग संस्कारः' नाम्ना प्रस्तुतवान्।

(वैदिक काल से ही भारतीय विज्ञान परम्परा गौरवशाली रही है। अनेक ऐसे भारतीय वैज्ञानिक हुए जिन्होंने अपने खोजे नवीन ज्ञान को विश्व के लिये दिया। भारत में अध्ययन-अनुसन्धान की परम्परा प्राचीनकाल से ही प्रचलित है। ऐसे भी कहा जा सकता है कि पहले हमारी जीवन पद्धति ही विज्ञान पर ही आधारित थी। जैसे महर्षि भृगु ने शिल्पविषयक दस शास्त्रों का उल्लेख किया। ये शास्त्र हैं- कृषि शास्त्र, जल शास्त्र, खनिज शास्त्र, नौका शास्त्र, रथ शास्त्र, अग्नियान शास्त्र, भवन शास्त्र, दुर्गशास्त्र, नगर रचना शास्त्र, यन्त्र शास्त्र, इस प्रकार दस शास्त्रों का वर्णन है। भृगु ने इनका भी फिर विभाजन किया है। इसके साथ 32 विद्याओं और 64 कलाओं का उल्लेख भी उन्होंने किया है। इस प्रकार से कणाद भारत के प्रथम परमाणु वैज्ञानिक थे। आचार्य प्रशस्तपाद ने गति सम्बन्धी नियम लिखे। आचार्य प्रशस्तपाद ने इन सिद्धान्तों को 'वेग संस्कार' नाम दिया।)

प्रश्न 1. एकपदेन उत्तरत (एक शब्द में उत्तर दीजिए)—

(i) भारते का परम्परा प्राचीनकालात् एव प्रचलिता अस्ति?
(भारत में कौनसी परम्परा प्राचीनकाल से ही प्रचलित है?)

(ii) पुरा अस्माकं जीवन पद्धति कीदृशी आसीत्? (पहले हमारी जीवन पद्धति कैसी थी?)

(iii) शिल्प विषयक दश शास्त्राणां उल्लेखः केन कृतः? (शिल्पविषयक दश शास्त्रों का वर्णन किसने किया?)

(iv) कः भारतस्य प्रथमः परमाणु वैज्ञानिक? (भारत का प्रथम परमाणु वैज्ञानिक कौन है?)

प्रश्न 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

(i) आचार्य प्रशस्तपादेन किं सिद्धांत लिखितम्? (आचार्य प्रशस्तपाद ने क्या सिद्धान्त लिखा?)

(ii) आचार्य प्रशस्तपादेन स्वसिद्धान्तं किं नाम प्रस्तुतम्? (आचार्य प्रशस्तपाद ने अपने सिद्धान्त को क्या नाम दिया?)

(iii) चतुष्षष्ठि कलानाम् उल्लेखः केन कृतः? (64 कलाओं का उल्लेख किसने किया?)

प्रश्न 3. अस्य अनुच्छेदस्य उपयुक्तं शीर्षकं लिखत। (इस अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।)

प्रश्न 4. यथानिर्देशम् उत्तरत— (निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—)

(i) 'वैदिक कालात्' अत्र किम् पदं विशेषणपदम्? (यहाँ कौन सा पद विशेषण पद है?)

(ii) 'एतेषामपि' अत्र 'एतेषाम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
('एतेषाम अपि' अत्र 'एतेषाम्' सर्वनाम पद किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?)

(iii) 'उल्लेख कृतवान्' इति अत्र कृतवान् क्रियापदस्य कर्तृपदं अनुच्छेदात् चिनुत।
('उल्लेखं कृतवान्' यहाँ 'कृतवान्' क्रिया का कर्तृपद अनुच्छेद से चुनिए।)

(iv) 'पुरातनं' इतिपदस्य विलोमपद अनुच्छेदात् चिनुत। ('पुरातनम्' इस पद का विलोम अनुच्छेद से चुनिये।)